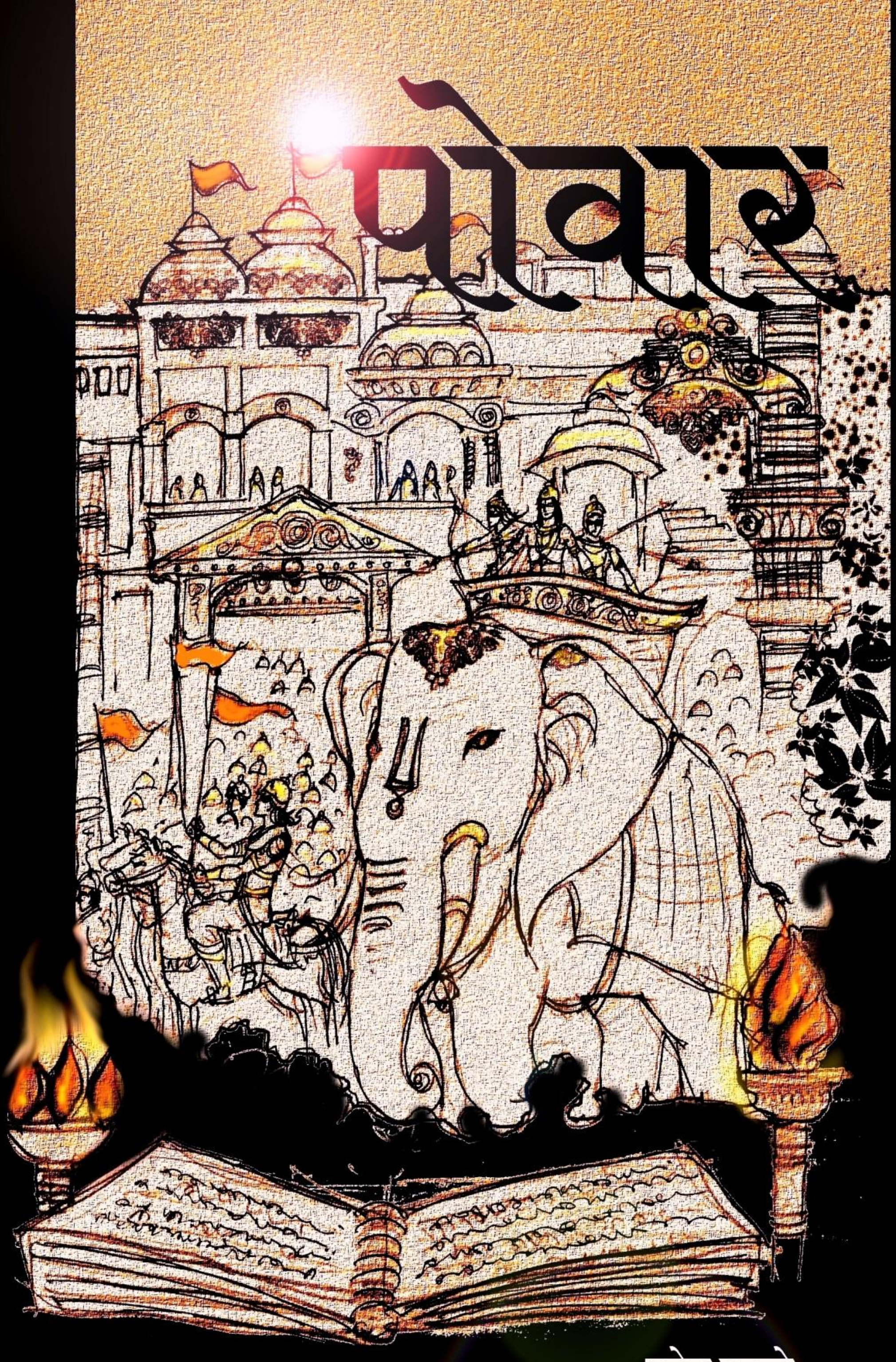
पोवार



महेन पटले

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

****

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।



शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

लेखन व शोध
इंजि. महेन पटले

विक्रम संवत २०७८
अंग्रेजी वर्ष २०२१
भारत

अनुक्रमिका

प्रस्तावना

इतिहास सागर के समान है, जिसमे अध्ययन स्वरुप गोते लगाने से हमे तथ्य / जानकारी स्वरूप अनमोल सम्पदा प्राप्त होती है !

अनेको ग्रंथ, दस्तावेज, लेख, काव्य, कहावते , ख्यात , रेकॉर्ड्स , कहानिया , समाज संस्कृति आदिके अध्ययन व् संदर्भो के आधार पर यह किताब लिखकर ऐतहासिक जानकारिया प्रस्तुत करने का यह एक प्रयत्न है !

यह एक लोक समूह की प्राचीन काल से लेकर आजतक की समय यात्रा का वर्णन है तथा एक अध्ययन या अवलोकन मात्र है ! इतिहास के अध्ययन के दृष्टिकोण से, इतिहास सबंधित अनेको तथ्यों के संदर्भो को जैसे के वैसे मूल रूप में , एक जगह संकलन कर, एकत्रित रूप में इस पुस्तक में प्रदर्शित किया गया है ! इस किताब में पोवार इतिहास के सन्दर्भ में इतिहासकारों के विचारो को भी यहा प्रस्तुत किया गया है !

आशा है की इतिहास में रूचि रखने वाले लोगो के लिए एक रुचिपूर्ण व ज्ञान मय प्रस्तुती साबित होगी ......

महेन पटले

अध्याय१- नाम व् इतिहास

वर्तमान के ज्यादातर नामो , संज्ञाओ के पीछे भूतकाल की घटना , व्यक्ति , वस्तु , क्षेत्र , आचार विचार से सम्बन्धित कोई न कोई तथ्य अवश्य छुपा होता है , बहुतसे शब्दों में , नामो में इतिहासभी समाहित होता है! जब कोई नाम इतिहास में प्रख्यात व्यक्तित्वों से जुडा पाया जाता हो, तो इन नामो के बारे में जाननेकी मनमे उत्सुकता होती है ! समुदाय के लिए उपयोग में लाये गये शब्द यानि नाम भलेही आज अपभ्रंशित रूपोंमें विद्यमान हो , परन्तु उनका अस्तित्व प्राचीन होता है! काफी नामोकी , शब्दोंकी जड़े अतीतके पन्नोमें जुडी होती है !

इन शब्दों   की अपनीही यात्रा होती है और उस यात्रा की दूरी का माप होता है समयकाल । निश्चित तौर पर, शब्द के यात्रा की शुरुवात कही से तो हुयी होती है । शब्द की यात्रा कितनी लंबी है, इसका उत्तर तो इतिहास में ही छिपा होता है । इतना पक्का है कि शब्द व इतिहास में सम्बंध जरुर है । इसी कारण शब्दों से इतिहास उजागर होने में मदद मिलती है । कुछ शब्द वर्तमान में समझनेके लिए स्पष्ट होते है और कुछ शब्द भूतकाल की तुलना में अस्पष्ट , अपभ्रंषित लगते है । हम शब्दोंके अपभ्रंशों को कई बार जान भी नही पाते । जो वर्तमान में है वही सही लगते है । कई शब्द प्राचीन शब्दो के नए रूप होते है । इतिहास को जानने के लिए प्रचलित व अतीत के शब्द इन दोनों की मदद मिलती है !

साम्राज्यों के उदय व उनके पतन की कहानी की तरह ही, समुदायों के उत्थान व पतन की कहानी भी अवश्य होती है ! भूतकाल के अनुभवों से ही हम वर्तमान को सँवार कर भविष्य को उज्ज्वल बना सकते है ! ऐसे

में हमे अपने अतीत के उन पन्नो को खंगालना आवश्यक है जो हमे सदा सीख , आत्मविश्वास , अनुभव स्वरूप सम्पति व् ज्ञान प्रदान करते रहेंगे!

भारत भूमि के महान व्यक्तित्व जैसे योगी भृतहरी , सम्राट विक्रमादित्य, राजा मुंज , राजा भोज , राजा जगदेव पँवार आदि जन श्रुतियो में प्रख्यात है ! वे लोकोक्तियों ,कहावतो में जनमानस के बीच प्रसिध्द है ! उनके वंशको पोवार , पंवार या परमार आदि नामो से पहचाना जाता है ! इस वंश को अग्निजनित यानी अग्निवंश के चार समूहों में से एक कहा गया है ! अग्निवंश की अग्नि से उत्पत्ति की कहानी बतायी जाती है ! कुछ इतिहासकारोंने अग्नि वंशके अग्निसे अद्भुत प्रगटीकरन के रहस्य के भिन्न भिन्न कारण बताये है , तो कुछ इतिहासकारों ने पंवारो को विदेशी कहकर कहानी के रहस्य को सुलझानेकी कोशिश की ! परन्तु इस मामले में पुनर्विचार की आवश्यकता है ! वंश को प्रमार परमार के साथ साथ पंवार या पोवार कहा गया है इसीमे रहस्य की कुंजी है !

मानव इतिहास में अनेको राजवंश , सत्ताधारी आये व गये ! कुछ के नाम इतिहास में अंकित हुए और कुछ समयकी यात्रामें विलीन हो गये! जिनके नाम अंकित हुये उनको हर युग में वर्तमान सदा जानने की कोशिश करता रहा है ! जो काव्यो में , कहावतो में , लेखो में अंकित हुए, उनका अस्तित्व शब्द रूपोंमें मानो अमर ही हो गया ! वे क्यों अमर हुए , क्या कारण था जो सहस्त्राब्दियो तक लोगो में उन्हें प्रिय या अप्रिय बना गया , यह जानने योग्य तथ्य है ! इन तथ्यों के द्वारा मनुष्य समुदाय सदा मार्गदर्शित होता रहेगा ! कोई श्रेष्ठ , उत्तम , प्रतिष्ठित क्यों कहलाया व कोई दुष्ट , अधम क्यों कहलाया इसके पीछे कुछ तो

कारण है जो, जानने योग्य है ! हम वर्तमान में भूतकाल से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े तो अवश्य ही कुछ अच्छे भविष्य का निर्माण होगा !

जम्बुद्वीप में हमे जितना मानव इतिहास पता है वह ग्रंथो के द्वारा पता चलता है ! जो हुआ था उसका वर्णन काव्यो के रूप में हुआ ! काव्यो को कंठस्थ करना आसान होता है इसीलिए जो लिखा गया वह काव्य रूप में रचा गया ! श्लोक , ऋचाये , मन्त्र , काव्य आदि सबका गायन किया जा सकता है ! इन काव्यो के गायन व लेखन के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रन्थ प्रवाहित होते रहे है ! उस समय की परिस्थिति , सोच , मनुष्य की जीवन शैली भी इन्ही से जानी जा सकती है !

भारत के आर्य भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में पायी गयी सभ्यता के ही लोग है ! आवागमन , स्थानान्तरण जरूर हुआ है ! भारतीय सभ्यता काफी दुरतक फैली हुयी थी यह भी पक्का है ! क्योंकि भारतीय सभ्यता से पूर्व यूरोप या पश्चिम एशिया की सभ्यताओ में कुछ साम्यता, भाषाओ में शब्दों का लेन देन , श्रीराम श्रीकृष्ण की कहानियो का अलग रूपों में सुदूर अस्तित्व, राजा भोज की मंगोलियन कहानिया , पंचतन्त्र की ताज्किस्थान में कहानिया होना दर्शाता है की सभ्यताओ का आदान प्रदान हुआ तो है , भलेही फिर वह आदानप्रदान व्यापारिक कारणों से हुआ हो या स्थानान्तरण के द्वारा हुआ हो ! एक प्रकार से देखा जाये तो समूचा मानव समुदाय किसी न किसी रूप से जुडा हुआ है परन्तु समय के साथ अलग अलग सभ्यताए बनी और बिघडी ! संस्कृति बनी व मिश्रित हुयी ! कुछ सभ्यताओ ने काफी लम्बे समय तक अपने अस्तित्व को टिकाये रखा ! जो अच्छा है वह बना रहना चाहिए और विकसित , संवर्धित , संरक्षित भी होना चाहिए ! इसलिए हमे इन समुदायों की सभ्यता के अस्तित्व को जानने की आवश्यकता है !

अध्याय२- प्राचीन अस्तित्व

भारत का ज्ञात इतिहास जो किसी न किसी रूपमें हमे प्राप्त होता है वह प्राचीन वैदिक काल तक हमे ले जाता है ! प्रारम्भिक वैदिक काल हमे प्रकृति के प्रति , सृष्टि के निर्माण के प्रति, मनुष्य के चिंतनको दर्शाता है! प्रकृति में व्याप्त शक्तिया मनुष्य को प्राचीन समय से आकर्षित व आश्चर्यचकित करते आयी है !

भारत में **वैदिक काल**में जिन वेदों की रचना हुयी उनमे **ऋग्वेद** सबसे प्राचीन माना जाता है ! ऋग्वेद में **अग्नि** को विशेष स्थान दिया गया है **!** **अग्नि स्तुति** से ही ऋग्वेद की शुरुवात होती है !

ऋग्वेद का पहला श्लोक -

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥1॥

अर्थात - यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

ऋग्वेद में अग्नि की स्तुति में अनेक श्लोक विभिन्न सूक्तो में है ! प्रकृति में अग्निके विशेषता को दर्शाते अनेक मन्त्र ऋग्वेद में रचे गये है ! अग्निस्तुति में मन्त्र दृष्टा ऋषियों द्वारा ऋग्वेद की ऋचाये रची गयी ! ऋग्वेद की अग्नि स्तुति करने वाली **ऋचाओ के रचियता** ऋषियों ने ऋग्वेद में **अग्नि का आवाहन** किया है ! सप्तर्षि व ऋग्वेद की ऋचाओ की रचना करनेवाले अन्य ऋषियों को **प्रवर ऋषि** कहा गया है !

वैदिक काल के बाद विभिन्न वंश , समुदाय अपना सम्बन्ध या अपने वंश की पहचान प्रवर ऋषियों के नाम उनके नामो के साथ जोड़कर दर्शाते हुए प्राचीन ग्रंथो में दिखाई पड़ते है ! ऋग्वेद को रचने वाले ब्रम्ह

वेत्ता ऋषियों को भारत की प्राचीन सभ्यता में बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है ! उन्हें श्रेष्ठतम माना गया है ! **"प्रवर" यह शब्द समय के साथ उत्तमता , श्रेष्ठता , ज्ञानवानो की व्याख्या बन गया** !

संस्कृत साहित्य में **प्रवर शब्द** का उपयोग **श्रेष्ठ , उत्तम , प्रतिष्ठित , उच्च, मुख्य, प्रधान , गुणवान,विद्वान्, प्रख्यात** उल्लेखित करने के लिए हुआ है!

इस **प्रवर** शब्द का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथो में पाया जाता है ! प्राचीन ग्रंथो में **महान राजाओ को , ऋषियों को ,श्रेष्ठ योध्दाओ , विद्वानों को प्रवर इस** विशेषण से उल्लेखित किया गया है ! भारत के मुख्य ग्रन्थ जैसे रामायण , महाभारत , पुराण , उपनिषद व अनेक अन्य ग्रंथो में प्रवर शब्द का उपयोग हुआ मिलता है !

पहले प्रवर ऋषियों के वंशज अपने पूर्वजो का नाम यानी प्राचीन प्रवर ऋषियों का नाम अपने नामो के साथ जोड़ते थे ! प्रवर वंशीय व्यक्ति के नाम के साथ वंश में नामांकित प्रवर पूर्वज का नाम लिखना व्यक्ति के परिचय का एक भाग था !

समय के साथ साथ जन भाषाओ में मूल नाम प्रवर जरुर थोडा थोडा परिवर्तित होते रहा !

वेदकालीन प्रवर ऋषियों के वंशजो ने प्राचीन समय में धर्म व निति की रक्षा के लिए क्षत्रियत्व धारण किया! प्रवर ऋषियों के वंशज **प्रवर क्षत्रिय** बन गए ! अनेक राजवंश प्रख्यात हुए जिन्हें प्रवर कहा गया है !

ग्रीक इतिहास के अनुसार अलेक्ज़ांडर के समय में उत्तर पश्चिम भारत यानि आजके पाकिस्थान , अफगानिस्थान , भारत के पंजाब,

राजपुताना , कश्मीर उत्तर पश्चिम भारत में के अनेको प्रान्तों में **प्रवर क्षत्रिय** राजाओं का साम्राज्य फैला हुआ था ! करीब ६०० छोटे बड़े राजाओ का उल्लेख पश्चिमी इतिहास से मिलता है ! अलेक्जेंडर का सामना दो प्रवर राजाओ से होता है ऐसा उल्लेख मिलता है , जिन्हें पश्चिम के इतिहास की किताबो में **पौवार राजा** लिखा मिलता है ! टोलेमी द्वारा लिखित ग्रीक भाषा के ग्रंथो में इन राजाओ को Poruaroi / Porvarai **पोरुआराय** / पोर्वाराय कहा गया है ! यह पोरुआराय यानि **संस्कृत शब्द प्रवराय** का ही **ग्रीक** भाषीयो द्वारा किया **सम्बोधन** है ! उस समय की प्रचलित जन भाषाओ में पौवार या पौवाराय यह शब्द प्रचलित रहा हो सकता है ! तभी प्राचीन इतिहास में **पौवारा साम्राज्य** का उल्लेख मिलता है ! यह प्रवर राजाओं का साम्राज्य ही था जिसे पौवारा साम्राज्य कहा गया है ! इस साम्राज्य की राजधानी प्राचीन **अवन्तीका या उज्जयनी / उज्जैन** थी जिसे ग्रीको ने **ओजेन** लिखा है! विदेशियों द्वारा अनेक संस्कृत शब्दों का अपभ्रंश हो गया जो शब्द बाद में जन मानस में प्रचलित भी हुऐ , जैसे अंग्रेजो द्वारा उपयोग में लाये अनेक शब्द आज हमारे लिए अपने हो चुके है ! भारत में भाषाओ का मिश्रण हुआ है ! और संस्कृतियों का भी मिश्रण हुआ है !

पश्चिमी इतिहास में दूसरी सदी में टोलेमी द्वारा लिखित **प्रवराय** का अपभ्रंश **पोरुआराय या पोर्वाराय यह शब्द** पोवार इस प्रचलित नाम का सबसे प्राचीन सन्दर्भ है ! इसके बाद ११ सदी के बाद के संदर्भो में इस नाम का उल्लेख मिलता है जो **प्रवांर , पांवार , पंवार** , **पावार** जैसे स्वरुप में है ! पिछले ८०० साल के दरम्यान मिले अनेक इतिहास के ग्रंथो , किताबो , ख्यातो , काव्यो , लेखो , दस्तावेजो में **पोवार / पंवार / पँवार** इन शब्दों का उल्लेख मिलता है ! आज भी **पोवार या पंवार** यह नाम एक समुदाय की पहचान है ! समय के साथ **प्रवर से पोवार** तक

का सफर भी अपने आप में इतिहास समेटे हुए है ! प्राचीन प्रवर वंशियो की पहचान आज पोवार शब्द से होती है !

संस्कृत शब्द प्रवर को समय के साथ प्रवर , प्रवार , प्रावारः , प्रोवार , पौवार , पोवार ऐसा स्वरूप प्राप्त हुआ ऐसा समझ पड़ता है ! यह परिवर्तित शब्द संस्कृत से प्रभावित है! वही दूसरी ओर **प्राकृत व पाली** भाषाओ में **प्रवर को पवर** कहा गया है **! पवर से पवार** जैसे अपभ्रंश **प्राकृत , मराठी** भाषा साहित्य में पाए जाते है !

संस्कृत के शिला लेखो, ताम्र लेखो , काव्यो में **प्रवर , प्रवरो , प्रवराय आदि शब्दों का उपयोग अनेको जगह विशेषतः हुआ है !**

इन प्रवर वंशीय यानि जिन्होंने अपने प्रवर याद रखे व जो स्वयम उत्तम, गुणवान है उन को **ब्रम्ह क्षत्र** भी कहा गया है क्योंकि वे **शास्त्र के साथ शस्त्र**को धारण किये हुए थे ! यह वे लोग थे जो तिलक , जनेऊ , शिखा धारण करके हाथो में शस्त्र लिए रण भूमि में अपने रण कौशल से धर्म व जन मानस की रक्षा का कर्तव्य निभाते थे !

क्षत्रियो के एक समुदाय ने **प्राचीन प्रवर** होने की पहचान को **एक "प्रकार"** के रूप में अपनाया और अपने ब्रम्ह **क्षत्रिय समुदाय** के **प्रकार** को **'प्रवर क्षत्रिय'** कहा ! प्रवर शब्द कालांतर में **पोवार** बना,जो एक **प्रकार** था! इस प्रकार ने पिछले कुछ सदियों में एक विशिष्ट **जाती**का रूप ले लिया है !

इस प्रकार वर्तमान में पोवार एक समुदाय है जिसकी जड़े प्राचीन समय में मिलती है ! **पोवार का संस्कृत अर्थ मुलत: प्रवर होता है !**

प्राचीन प्रवर यानि आज के पोवारो के परिवर्तित नाम भी मौजूद दिखाई पड़ते है जो समय के साथ जुड़े ! परिवर्तित शब्द कैसे जुड़े यह भी हमे जानना होगा ! इन जुड़े हुए नामो की जानकारी हमे जनश्रुतियो , लोकोक्तियों , शिलालेखो से , काव्यो से , पोथियो से प्राप्त होती है ! इतिहास के दस्तावेजो में , भाटो की पोथियो में पोवारो को परमार / प्रमार भी कहा गया है और इसके पीछे अनेक कहानिया भी प्रचलित है ! यह कहानिया पिछले १२०० सालो के दरम्यान प्रख्यात हुयी व शिलालेखो में , ताम्र लेखो में , काव्यो में लिखी गयी ! हांलाकि अत्यंत प्राचीन ग्रंथो में इन कहानियों का उल्लेख नही मिला ! इन कहानियों के पीछे एक इतिहास समझ आता है वह कुछ इस प्रकार है --

भारत के रामायण , महाभारत व् अन्य अनेक ग्रंथो की माने तो प्राचीन काल में बहुतसे आततायी क्षत्रियो का विनाश जमदग्नि पुत्र ऋषि परशुराम ने किया ! हालाकि प्रवर यानि उत्तम व् धर्म के मार्ग पर चलने वाले सूर्यवंशी राजाओ से उन्होंने युध्द नही किया ! यह बात त्रेतायुग में राजा जनक की सभा में श्रीराम के सामने उनकी उपस्थिती व् उनको आशीष देने से समझ आती है ! इसका स्पष्ट अर्थ है की ऋषि परशुराम व् उनकी सेना ने प्रवर क्षत्रियो का विनाश नही किया था ! ऋषि परशुराम ऋषि जमदग्नि के पुत्र थे ! जमदग्नि सप्तर्षियो में से एक है! प्रमारो या पोवारो की वंशावली के शुरुवात में सप्तर्षि है ! यह सम्भव है ऋषि परशुराम की सेना दरअसल प्रवर क्षत्रियो की सेना रही हो ! सुर्यवंश की शाखाए भारत में सदा से विद्यमान रही ! उनका प्रभुत्व कम ज्यादा होता रहा ! सूर्य वंशीय जिन्हें इक्ष्वासु वंशीय या रघु वंशीय कहा गया है उन राजाओ को भी वाल्मीकि रामायण में प्रवर राजा कहा गया है ! इक्ष्वासु वंश को प्रवर कहा गया है क्योंकि वे उत्तम तो थे ही साथ ही उनके पूर्वज भी प्रवर ऋषि थे !

सुर्यवंशीयो को पँवार भी कहा गया है ! राजस्थान की पुरानी नाटको में राजा हरिश्चंद्र एक संवाद में स्वयं को पँवार कहते है ! इतिहासकार जेम्स टॉड राजा मान्धाता को पँवार या प्रमार कहते है ! राजा मान्धाता श्रीराम के पूर्वज थे ! रोहतक शहर को प्राचीन समय में राजा हरिश्चंद्र के पुत्र रोहिताश्व द्वारा बसाया गया ऐसा दस्तावेजो लिखा मिलता है ! पुराने गज़ेटियरो में रोहिताश्व पौवार राजा होने की बात लिखी मिलती है ! सूर्यवंशियो को पँवार क्यों सम्बोधित किया गया क्योंकि वे प्रवर क्षत्रिय थे ! सन १५८५ के दरम्यान अबू फज़ल द्वारा लिखित आईने अकबरी में संकलित इतिहास में वे मेवाड़ घराने के संस्थापक राजा कनकसेन को पंवार जाती का लिखते है ! अन्य संदर्भो में राजा कनकसेन अयोध्या के श्रीराम पुत्र लव के वंशज होने की बात लिखी मिलती है ! यानि सूर्यवंशी राजा कनकसेन पंवार थे! राजा कनकसेन के वंश में राजा शिलादित्य हुए जिनको पंवार राणी पुष्पावती से गुहादित्य नामक पुत्र हुए ! उनके नाम से गुहिलोत वंश प्रसिध्द हुआ ! इसी वंश में राणा प्रतापसिंह हुए !

पँवार वंशीय सम्राट विक्रमादित्य जिन्होंने विक्रम संवत शुरू किया , वे भी श्रीराम को अपना पूर्वज मानते थे ! सम्राट विक्रमादित्य के द्वारा प्राचीन अयोध्या की खोज करने की बात कही जाती है ! उस खोज में उन्हें प्राचीन काल का प्रयाग शहर मिल गया ऐसा कहा जाता है ! राजा भोज सम्राट विक्रमादित्य को अपना पूर्वज मानते थे ! राजा भोज के चाचा राजा मुंज को उनके समय के **कवी हाल** अपनी काव्य कृति **“पिंगला सूत्र वृत्ति”** में ब्रम्ह क्षत्रिय होने की बात करते है ! शिलालेखो में भी उन्हें ब्रम्ह क्षत्र कहा गया ! यानी जो शस्त्र व शास्त्र को धारण किये हो ! इतिहासकार सी व्ही वैद्य , दशरथ शर्मा व अन्य अनेको इतिहासकारों के अनुसार ब्रम्ह क्षत्र यानि वे जो पहले ब्राम्हण थे व बादमे क्षत्रिय बन गये! दरअसल वे प्रवर ऋषियों के वंशज थे जिन्होंने

शस्त्र उठा लिए थे ! वे कालान्तर में पंवार या पोवार कहलाये ! राजा भोज पोवार होने की बात पोवार समुदाय के बड़े बुजुर्ग तथा इतिहासकार कहते है !

आज से करीब २५०० साल पहले धर्म की ध्वजा फहराने उससमय विद्यमान प्राचीन क्षत्रिय अर्बुदागिरी पर एकत्रित हुए !   अनेको संदर्भो के अनुसार बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन हुआ था ! इस यज्ञ में धर्म स्थापना व रक्षा का प्रण लिया गया! अनेको योध्दाओ ने इस कार्यकी जबाबदारी ली ! इस मोहिममें सभी प्रवर क्षत्रिय शामिल थे !

इस यज्ञ में चार समूह बने थे ! प्रचलित काव्यो , लेखो के अनुसार चार समूहों के नाम चहुआन या चौहान , प्रतिहार या परिहार , पँवार या प्रमार/परमार व चालुक्य या सोलंकी ऐसे थे ! इन योध्दो समूहों ने पुनः भारत में काफी हदतक प्राचीन सनातन धर्म स्थापित किया !

सन १५८५ के दरम्यान अबू फज़ल द्वारा लिखित आईने अकबरी में भारत से ही संकलित इतिहास व् अन्य संदर्भो का अवलोकन करे तो निष्कर्ष निकल आता है की धनजी या ध्रुमराज वह मुख्य नेता था जिसने आबू के यज्ञ में धर्म रक्षा का प्रण लिया था और वह प्रमार इस उपाधि नाम से प्रसिध्द हुआ था ! उसके वंश में पुत्रराज या पुतराज हुआ जो निपुत्रिक अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ ! तब प्रवर क्षत्रिय सभासदों ने आदित्य पोवार को उनका नेता माना जो मालवा का प्रवर क्षत्रिय योध्दा था ! आदित्य पोवार ध्रुमराज प्रमार के सिंहासन पर बैठा और उसीके वंश ने आगे धारानगर , उज्जैन व् अन्य स्थानों पर शासन किया ! इसी कारण आदित्य पोवार के वंश को पोवार के साथ प्रमार   भी कहा गया !

करीब २३५० साल पहले भारत पर अलेक्जेंडर का आक्रमण हुआ था ! भारत की शक्ति के सामने हतोत्साहित सिकंदर अपनी सेना के साथ लौट गया था परन्तु उसके कुछ सैन्य व अधिकारी इधर रुक चुके थे जो बादमे भारत में ही बस गये ! सीमा वर्ती क्षेत्रो से जनमानस का स्थलांतरण हुआ ! बड़े साम्राज्यों का पतन हुआ ! इसी बीच शको और हूणों के आक्रमण भी हुए ! भारतीय जनमानस के लिए बड़ी त्रासदी का दौर था ! चाणक्य से प्रेरित चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध पर अपना शासन स्थापित किया ! उनके वंश में सम्राट अशोक हुए जो बाद मे बौध्द धर्मावलम्बी हो गये थे! युध्द लड़ने की अनिच्छा व अहिंसा के प्रचार के कारण आक्रांताओ के लिए भारत में प्रस्थापित होने के लिए नये मार्ग खुल गये थे ! शक, यवन व हूणों ने बड़े भूभागो पर कब्जा कर लिया था ! भारत एक प्रकार से परतंत्र में था ! शक और हूणों की जड़े काफी क्षेत्रो में फैल चुकी थी ! तब उज्जयनी के प्रमार सिंहासनाधिश आदित्य पोवार के वंशज परम प्रतापी सम्राट विक्रमादित्य ने सबको पुनः एक बार संघटित कर भारत से शको को हटाकर विक्रम संवत की शुरुवात आज से करीब २०७८ साल पहले की !

संस्कृत श्लोको में प्रवर क्षत्रिय समुदाय के लिए प्रवर के बजाये प्रमार, प्रमर या परमार लिखा मिलता है ! परमार यानि पर + मार - दुष्ट परकीयो को मारनेवाले !

समय के साथ संस्कृत नाम **प्रमर या परमार + प्रवर का मिला जुला** स्वरुप जनमानस में प्रचलित हुआ और वह है **पँवार या पंवार** !

११ वी १२ वी सदी के पंडितो द्वारा संस्कृत शिलालेखो में परमार या प्रमार कुल के प्रवर लिखे मिलते है ! इस समुदाय के लोगो के लिए कही एक प्रवराय, कही त्रि प्रवराय तो कही किसीको पंच प्रवराय भी

कहा गया है! यानि किसी के वंशावली में मात्र एक ही पूर्वज प्रवर ऋषि थे तो किसी के वंशावली में तीन पूर्वज प्रवर ऋषि थे तो किसी के पांच पूर्वज प्रवर ऋषि थे ! १३ वी सदी तक इन्हें अपने प्रवर पूर्वज अच्छे से याद थे , बाद में इस्लामिक आक्रमणों के दौरान उथलापुथल, बारम्बार हो रहे विस्थापन के कारण वे मात्र इतना याद रख पाए की वे **प्रवर है और वे प्रवर पूर्वजो के वंशज** है ! **संस्कृत जन भाषा न होने से** प्रवर की बजाये तत्कालीन भाषाओ में वे अपने समुदाय को प्रवार से **पांवार, पोवार, पँवार, पंवार क्षत्रिय** आदि कहते थे ! काव्यो में , लोकोक्तियो में, ख्याती में , लेखो में उनका **पृथ्वी बड़ा पँवार** इस कहावती के जरिये गुणगान होता रहा है !

प्रचलित कहानियों के अनुसार पंवार क्षत्रिय जाती के एक नामांकित राजवंश के प्रवर वशिष्ठ थे जिसे उनका गोत्र भी कहा गया है ! अलग अलग प्रवर या पंवार क्षत्रियो के अलग अलग प्रवर है ! ज्यादातर सभी सप्तर्षि व् अन्य मुख्य ऋषि है ! जिनको याद नही रहा वे कश्यप गोत्र बताते है ! हालाकि गोत्र के साथ साथ सबके अपने प्रवर पूर्वज भी है ! वर्तमान में प्रवराय समुदाय के लोग प्राचीन प्रवर पूर्वजो को भले ही भूल गये हो परन्तु उन्होंने **स्वयम का प्रकार "प्रवर"** यानि हाल के सदीयो **में "पोवार या पंवार"जाती या प्रकार को** बनाये रखा !

प्राचीन वेदकालीन प्रवर लोग अग्निपूजक थे ! सम्भवत: पंवारो को अग्नि वंशीय कहने का यही कारण है ! मध्य भारत में बालाघाट ,गोंदिया , सिवनी , भंडारा जिला क्षेत्र में धारानगर से सन १७०० के बाद आये पंवारो के ३६ कुलो में से करीब ३० कुल या परिवार बसे हुए है ! आज भी उनके यहाँ प्रत्येक पूजा में अग्नि का विशेष महत्व है ! पोवार बहुल ग्रामीण क्षेत्रो में जहा आज भी संस्कृति जीवित है वहा वे पारम्परिक रूप

से प्रतिदिन नहाकर चूल्हे के पूजन के बाद ही स्वच्छ किये चूल्हे में अग्नि प्रज्वलित करते है ! अन्न पकाने के बाद चूल्हे की अग्नि में अन्न का थोडासा भाग समर्पित करते है ! अन्न ग्रहण करने के पहले अग्नि पर नैवेद्य देते है ! वे हर पूजा में अग्नि को नैवेद्य के रूप में अन्न समर्पित करते है ! यह परम्परा दर्शाती है उनके जीवन में अग्निपूजनका महत्व है ! यह वर्तमान की प्रथाए प्राचीन सभ्यता , रिती के अंश है !

हालाकि अग्निवंशी कहने का कारण यज्ञ की अग्नि के द्वारा प्रागट्य भी कहा जाता है ! अग्नि से प्रगट होने वाली बात आजके वैज्ञानिक युग में थोड़ी अस्वीकार्य लगती है ! काफी इतिहासकारों के अनुसार अग्नि यज्ञ में धर्म स्थापना की प्रतिज्ञा ली गयी थी! पंवारो के उत्पत्ति की अनेक कहानिया प्रचलित है ! एक कहानी के अनुसार प्राचीन समय में ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने विश्वामित्र से युध्द के लिए कामधेनु से प्रार्थना कर जिन वीरो का आव्हान किया था वे यज्ञ अग्नि से प्रगट वीर योध्दा अग्निवंशी थे ! एक कहानी में दुर्जनों के नष्ट करने हेतु अर्बुदागिरी पर हुए यज्ञ में देवताओ द्वारा चार वीर प्रगट किये गए ! कोई आदि शक्ति द्वारा, तो कोई ब्रम्हा द्वारा , कोई भगवान शिव द्वारा , कोई इंद्र द्वारा चार अग्नि वंशीय वीरो की उत्पत्ति की कहानी बताते है ! अगर भाट लोगो द्वारा परम्परागत रूप से लिखीत पोवारो की पोथियो की बात करे तो उन्होंने अग्निवंशियो की उत्पत्ति भगवान विष्णु से बताई है ! भाटोने अग्निवंशियो को आदिशक्ति की कृपा से प्राप्त सप्तर्षियो के वंशज बताया है ! अग्निवंश के चारो समूहों में प्रवर क्षत्रीय शामिल है ! चौहान , परिहार , बघेले , चालुक्य , राणा आदि कुल पँवारो में होना यही दर्शाता है की चारो समूहों में प्रवर क्षत्रिय शामिल थे ! पिछले १२०० साल में संस्कृत भाषी पंडित , भाट आदि लोग पंवारो या पोवारो को प्रमार या परमार लिखते आये है ! हालांकि प्राचीन वैदिक व् पौराणिक साहित्य में प्रवर

शब्द मिला परन्तु प्रमर शब्द का कही भी उल्लेख नही मिला ! अगर परमार यह समुदाय का नाम १२०० साल पहले मौजूद था तो प्राचीन ग्रंथो में होना चाहिए था , परन्तु ऐसा नहीं है !

पंवार ज्यादातर सिंध , मध्य भारत , मालवा, राजपुताना आदि क्षेत्रो में बसे थे ! वही से अन्य जगहों पर समय के साथ फैले ! पोवारो की कहानी वैदिक काल से वर्तमान तक ज्ञात होती है ! अचानक प्रगट होने से उनका अस्तित्व मात्र २५०० साल पुराना होना यह बात अवैज्ञानिक लगती है ! वे २५०० साल पहले भी इधर मौजूद थे ! पोवारो या परमारों के अस्तित्व की यात्रा उसी समय से है जब संसार में जीवन की शुरुवात हुयी ! वह एक समूह है जो उन्नत हुआ, जिसने ज्ञान, विज्ञानं , ऐश्वर्य , धर्म , निति , शौर्य के साथ जीवन व्यतीत किया, आदर्शो की रचना की ! इतना तो पक्का है की कमसे कम पिछले ५००० सालो से पोवारो का शक्तिशाली अस्तित्व भारत भूमि में निश्चित रूप से है और वह भी प्रभावशाली अतीत के साथ ! और ५००० साल पहले के किसी के भी इतिहास की पुख्ता जानकारी हासिल नही !

पंवार क्षत्रियो को पंवार राजपूत भी कहा गया है ! कुछ इतिहासकार पंवार या प्रमार राजपूतो को ५ वी या ६वी सदी में आये विदेशी आक्रमणकारी समझते है तो कुछ इतिहासकार उनको ग्रीक या हुण कहते है जो भारत में बस गये ! सम्भवत: वे इनके गौर वर्ण के कारण कहते हो ! परन्तु यह सत्य नही ! काफी जगह उल्लेख आता है की आर्य गौर वर्णीय थे , इस कारण पंवारो का गौर वर्णीय होना उन्हें विदेशी होना साबित नही करता ! दुसरी सदी के दौरान ग्रीक इतिहास में पोरुआराय लिखा मिलना बताता है की उस समय प्रवराय राजाओ का शासन था ! पौवारा साम्राज्य की बात भी यह बताती है की यह पोवार

वंशीय ईसा पूर्व से मौजूद थे ! इस कारण ५ वी या ६ वी सदी में आने की बात गलत हो जाती है !

दूसरी बात पंवारो में प्राचीन ऋषियों के कुल नाम होना यह दर्शाता है की वे प्राचीन समय से मौजूद लोग है ! पंवारो के कुल संस्कृत शब्द के मूल नाम है, तो कुछ संस्कृत शब्द के अपभ्रंश , इस बात से यह पता चलता है की पोवार या पंवार प्राचीन समुदाय के वंशज है !

इस वंश या जाती के लोग करीब चार देशो में मुख्यतः पाए जाते है ! वे देश है भारत , पाकिस्तान , अफगानिस्थान व् नेपाल ! अनेक उपसमूह या उपजातिया भी है जो अन्य नामो से जानी जाती है, परन्तु वे अपने को पंवार , परमार बताते है ! कुछ लोग अन्य जातियों में , समुदायों में , अलग अलग धर्मो में घुलमिल गये परन्तु फिर भी पंवार, परमार वंश से अपना सबंध बताते है ! दुसरे समुदायों जातियों में मिल जाने से उनकी मुख्य जाती कुछ और होती है परन्तु उपजाती या शाखा पंवार या परमार होती है ! इसके अलावा भी कही हो तो वे अपभ्रंशित नामो के कारण अब पहचाने नही जा पाते !

प्रवर समुदाय वैदिक है ! और वह समुदाय प्राचीन समय से किसी न किसी कारणवश संसार के भिन्न स्थानों पर स्थानांतरित हुआ ही होगा ! श्री स्टेफेन क्नाप अपनी किताब Proof of Vedic Culture’s Global existence me लिखते है -“ Friar यानी प्रवर ऋषि होता है ! संस्कृत शब्द “प्र” को ही यूरोप में “फ्र” उच्चारित किया जाता है ! वैदिक ऋषियों को संस्कृत में प्रवर: कहा जाता है ! यानि श्रेष्ठता की और अग्रेसित व्यक्ति ! यह वैदिक शब्द आज भी यूरोप में friar के रूप में विद्यमान है ! श्री स्टेफेन वैदिक लोगो का वैश्विक अस्तित्व अनेक उदाहरण प्रस्तुत

कर अपनी किताब में बताते है ! प्रवर अग्नि पूजक थे यह भी एक तथ्य है जिससे विश्व भर यह समुदाय कहा कहा होगा यह जाना जा सकता है ! संस्कृत में प्रवर का अर्थ उत्तम होने से अनेक राजाओ को प्राचीन समय में प्रवर कहा गया है ! और यह भी एक सत्य है की सभीको प्रवर नही कहा गया बल्कि ऋग्वेदीय अग्निपूजक ऋषियों को, उनके वंशजो को , देवताओ के वंशजो को ही प्रवर लिखा मिलता है !

अध्याय में लिखित तथ्यों के संदर्भ ---

प्रवर यानि श्रेष्ठ , उत्तम , उच्च , विद्वान , गुणवान इस अर्थ को दर्शाते सन्दर्भ ----

१) श्रीदत्तात्रेयसहस्रनामस्तोत्रम् २ -श्लोक (१६)

परमस्तनुविज्ञेयः परमात्मनि संस्थितः ।
*प्रबोधकलनाधारः प्रभाव **प्रवरोत्तमः** ।। १६।।*

---

२) **शिव सहस्त्र नाम स्तोत्रम का पहला श्लोक -**

*स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भानुः **प्रवरो** वरदो वरः.*
सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः || 1 ||

---

३)महर्षि वेद व्यासविरचित ब्रह्मवैवर्तपुराणका एक श्लोक --

त्वद्विधं लक्षकोटिं च हन्तुं शक्तो गणेश्वरः।
जितेन्द्रियाणां **प्रवरो** नहि हन्ति च मक्षिकाम्।।
(ब्रह्मवैवर्तपुराणगणपतिखंड 44/26-27)

ब्रह्मवैवर्तपुराणगणपतिखंडत्रयोदशोध्याय
! विष्णुरुवाच।
ईश्त्वां स्तोतुमिच्छामिब्रम्हज्योतिःसनातनम्।

निरूपितुमयक्तोऽहमनुरूपमनीहकम्।४१।।
प्रवरंसर्वदेवानांसिध्दानांयोगिनांगुरूम्।
सर्वस्वरूपंसर्वेशंज्ञानराशिस्वरूपिणम्।।४२।।

चन्द्रादित्यमनूनाच्च **प्रवराः क्षत्रिया:** स्मृता:।। `
ब्रह्मणो बाहुदेशाचैवान्याः क्षत्रीयजातयः ।। १५।।
(ब्रह्मवैवर्तपुराणब्रम्हखंडम दशमोअध्याय:)

---

४) परशुराम स्तोत्रम श्लोक ८७ -

उर्ध्वरेता ऊर्ध्वलिङ्गः **प्रवरो** वरदो वरः ।
उन्मत्तवेशः प्रच्छन्नः सप्तद्वीपमहिप्रदः !!

---

५) वेदव्यास रचित महाभारत ग्रन्थ ,
*स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भानुः **प्रवरो** वरदो वरः ।*
सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकर्म करो भव: !!

---

६) **हरिवंशपुराण पर्व ०३ - अध्याय ०५३**
नमुचिश्चासुरश्रेष्ठो धरेण सह युध्यत ।
***प्रवरौ** विश्वकर्माणौ ख्यातौ देवासुरेश्वरौ ।। ८ ।।*

---

७) **पद्मपुराण पर्व ९५ श्लोक ०७**
*कान्तिमत्सितसद्दंष्ट्रौ **प्रवरौ** शरभोत्तमौ ।*
प्रविष्टौ मे मुखं मन्ये विलसत्सितकेसरौ ।।७ !!...

---

८) **वाल्मीकि रामायण आदिकाण्ड ४४ सर्ग श्लोक १८**
इयं च संततिर्देव नावसाद् कथश्चन |
*इक्ष्वासुनांकुले गच्छदेष मे **प्रवरो** वर्: ।। १८।।*

---

९) वाल्मीकि रामायण आदिकाण्ड ५९ सर्ग श्लोक १९

इक्ष्वाकुणां ही सर्वेषां ***वशिष्टः प्रवरो गुरुः*** *।*
तस्मादनन्तरं सर्वे भवन्तो गुरवो मम ॥ १९॥

---

१०) नारद पंचरात्र अध्याय ६ श्लोक ५८

विधातां जगतां ब्रम्ह , ब्रम्हेत्तान मनसः !
तत पुत्रो सी महा ख्यातो देवर्षि ***प्रवरो****महं !!*

---

११) वेद् व्यास रचित महाभारतम आदिपर्व श्लोक ६

पूजितः प्रवरो वंशो भृगुणाम *भृगु नन्दन ।!६!!*
इमं वंशमहं दिव्यं भार्गवं ते महामुने ।....

---

१२)सन १९२९ में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित Hastalikhita Hindī Granthoṃ Kī Khoja Kā Vivaraṇa , Volume 6 इस किताब में दिए काव्य का संदर्भ -

लसत ***राम राजर्षि प्रवर*** *तनु कोटि काम छवि ।।*
ताही के सम सिया जनक नृप ..

---

१३) एपिग्रपिका इंडिका वॉल्यूम २६ पृष्ठ १०५ में दिए बिजोली शिलालेख में निम्न लिखित उल्लेख आता है की

...अंभोधिमथनाद्देवव (बोलिभिर्व (ब) लशालिभिः ॥ 29 ॥
निर्गतः ***प्रवरो वंशो*** *दै (दे)ववृंदैः समाश्रितः । ।*
श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना ॥

---

१४) ओरिएण्टल इंस्टिट्यूट द्वारा प्रकाशित Journal of Oriental Institute Volume 55-57 Page 31 में कहा गया है की

Vashistha is called Maharshi – Bramharshi- ***Pravarah***

---

१५) सन १९५९ में प्रकाशित किताब Source Readings on Indian Civilization, 1959 - Page 8 में लिखा है की ---

*Each gotra claimed to have certain famous ancestors called the **pravaras , " excellent ones .** The pravaras were , in a majority of cases , more than one and a man could name two , three or five pravaras*

---

१६) राजश्री द्वारा लिखित "संस्कृति की खोज " इस किताब के अनुसार--

मरीचि के वंश में कश्यप, वत्सर, महातपस्वी निध्रुव प्रमुख प्रवर हैं।

---

१७)संस्कृत विद्वान् समिति द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित स्कन्द पुराण यानि The SkandaPurana Part VIII Ancient Indian Tradition And Mythologyनामककिताबमेंउल्लेखहैकी – श्लोक 49-56a.

*"O Arvavasu, **you are a Pravara (excellent man**), on account of your penance*

---

१८) विश्व भर में प्रसिध्दपंचतंत्र की कहानियों में पहली ही कहानी के शुरुवात में राजा को प्रवर कहा गया है !

अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम् ।
तत्र सकलार्थिसार्थ-कल्पद्रुमः **प्रवर-नृप**-मुकुट-मणि-मरीचि-चय-चर्चित-चरण-युगलः

---

१९) मत्स्य पुराण में वर्णन मिलता है की"वशिष्ठ के वंशजो का एक ही प्रवर है"-

*वशिष्ठ वंशजान्विप्रान्निबोध वदतो मम , एकार्षेयस्तु **प्रवरो** वाशिष्ठानां प्रकीर्तित: !!*

इस प्रकार प्रवर शब्द से सबंधित अनेको अनगिनत श्लोक प्राचीन ग्रंथो में मिलते है जो बताते है की **प्रवर यानि उत्तम , श्रेष्ठ , गुणवान , विद्वान् , मुख्य , प्रधान व्यक्ति होता है !**

---

२०) प्राकृत काव्यो में प्रवर को पवर जो कालांतर में प्राकृत जनित भाषाओ में पवार कहा गया है ! नागार्जुन कोंडा में मिले शिलालेख का उल्लेख जो इपिग्रपिका इंडिका २० पृष्ठ क्रमांक २२ पर लिखा मिलता है ! इसमें **प्रवर राजा इक्ष्वासु** (श्रीराम के पूर्वज) का उल्लेख है ! वह प्राकृत श्लोक कुछ इस प्रकार है -

*सिधम नमो भगवतो **इखाकू राजा पवर ऋषि सत** पभाव वंस संभावास देव मनुस सव सत हित सुख मग देसिकास ....*

---

२१) स्कन्द पुराण में दिए विष्णु सहस्त्र नाम का एक स्तोत्र -
*वशिष्ठो वामदेवश्च **सप्तर्षि प्रवरो** भृगुः |*
जमदग्न्यो महावीरः क्षत्रियंतकारो ऋषिः || २७ ||

---

२२) महर्षि व्यास द्वारा रचित पुराण केदारखंड में निम्नलिखित श्लोक मिलता है -

*जातो हि **प्रवरे वंशे** इक्ष्वाकोर्वे महात्मन: !*
पराक्रम च वंशं च सर्व जानाम्यहं तव !! ५७!!

*जातोऽसि **प्रवरे वंशे** सूर्यस्य परमात्मनः ।*
पितृभक्तिरतो विष्णौ शिवे च समतां गतः ।। ६८ ।।

***23)* गया स्थित प्रपितामहेश्वर मन्दिर का सन १२४० का शिलालेख में कुछ श्लोक इस प्रकार है -**

क्षत्रिय **प्रवरकुल** सोपथान्वये नाजिहिल गोत्रिना जगत्पाल प्रपितामहेन उत्तर पितामहेन अजयपाल पितृकेन ....

नृप प्रवर कुलस्य धनार्थाया नाजिहिला गोत्रिने श्री जगतपाल प्रपितामहेन...

---

24)**महारथी कर्ण चरित्रम -**

दृष्टवैव तं स्वीयतपोबलेन ।
शापास्त्र विक्लान्त समस्त लोकम् ।।
अभ्युज्जगाम **प्रवरो नृपाणाम्** ।
राज्ञया समेतः किल कुन्तिभोजः ।। १७ ।।

---

25) **पंडित श्रीराम शर्मा द्वारा पुनर्लिखित मत्स्य पुराण इस किताब के भाग ७७ में पृष्ठ क्रमांक १९० पर श्लोक –**

द्वयख्येयोः मारुतश्चषां त्रयार्षेयः **प्रवरो नृप !**
अंगिराः प्रथमस्तेषां द्वितीयश्च बृहस्पतिः ।।१९।।
ततीयश्च **भरद्वाजः प्रवराः** परिकीर्तिताः ।
परस्परमवैवाह्या इत्येते परिकीर्तिताः ।।२०।।

---

26) सोमदेव कृत “कथा सरित सागर” के तरंग १०९ महाभिषेक के १५२ वे श्लोक में प्रवर राजा का उल्लेख आता है -

प्रियसचिवसमगतः **प्रवरराजा** वृन्दंवितः
प्रतापमइववैरिनाम, मधुपिबन्नअनेशीदढिनं !

<u>प्रवांर , प्रवराय , पोर्वाराय से सबंधित संदर्भ :</u>

27)Epigraphica Indica volume 19 **में दर्ज ताम्रलेख जो नाशिक के पास कालवन में मिला व जो यशोवर्मन राजा के द्वारा लिखवाया गया है! ताम्रलेख के पहले पट्टल में यशोवर्मन लिखते है की उसे मिला वह राज्य धारा (धारा नगर) के प्रवांर राजाओं द्वारा मिला है ! एपिग्राफिका इंडिका पृष्ठ क्रमांक ७० व ७१ --**

स्वस्ति श्री मन ***धारां*** *मेरु महा गिरी तुंग श्रीगोपमे* ***प्रवांर*** *अन्वये अनेक समर संगत: !*

इस ताम्र लेख उल्लेखित श्लोको के अनुवाद में श्री आर डी बनर्जी कहते है --

The inscription is not dated but refers itself to the reign of a subordinate chief named Yashovarmman .Even the genealogy of this prince, in whose territory the land was granted, is omitted. He is simply introduced as having obtained one-half of the town of Selluka from the illustrious Bhojadeva (I) and as being in the enjoyment of 1,500 villages. This Bhojadeva is said to have defeated the Kings of the Karnnata, Lata and Gurjara countries as well as the lords of Chedi and Komkana and to have mediated on the feet of the illustrious Sindhurajadeva , who cleansed the earth from the mountains to the sea by his wide fame and mediated on the feet of the illustrious Vakpatirajadeva (II) who mediated on the feet of the illustrious Siyakadeva (II) of the ***<u>Pramvara family of Dhara.</u>***

२८) **प्रवराय** यह शब्द राजवंशो के प्रवर कितने थे यानि उनके कितने पूर्वज प्रवर थे यह दर्शाता है ! एक प्रवराय , त्री प्रवराय, पंच प्रवराय इन शब्दों का उल्लेख अनगिनत बार शिलालेखो में पाया जाता है ! एपिग्रापिका इंडिका के उल्लेखित शिलालेखो में ज्यादातर सभी भागो में यह शब्द पाया जाता है !

---

२९) अलेक्झांडर से लड़ने वाले पोरस को पश्चिमी जगत पोवार या पौवार राजा कहता है जिसे भारत में पुरु या पोरस कहते है ! भारत में कुछ किताबो में एक किताब है , जिसमे पोरस को पंवार कहा गया है, वह किताब है -Gaṛhavāla aura Gaṛhavāla : itihāsa, purātatva, bhāshā-sāhitya, evaṃsaṃskr̥ti para kendrita , - Volume 1 - Page 21 के अनुसार -

प्रख्यात ग्रीक इतिहासकार ने पुरवा को पुरुवाराई या पोरवाराई कहा है ।
समय के साथ - साथ वे पंवार के नाम से पहचाने जाने लगे ।

<u>**ग्यारहवी सदी के बाद के कुछ सन्दर्भ**</u>

३०) पृथ्वीराज रासो में आबू की पँवार राजकुमारी इच्छीनी के विवाह का वर्णन करता हुआ अध्याय इच्छीनी ब्याह कथा में दोहा ११०

पांवारी *प्रथिराज वर ! पुनि जनवांसे जाइ !*
एक सहस हय ह्थ्थीवर ! दिने तुरत लुटाई !!

रासो के आदि पर्व में दोहा १२४ में चंद बरदाई उस समय की एक प्रचलित पंवारो के उत्पत्ति की कहानी लिखता है !

तब सु रिष बाचिष्ठ , कुंड रोचन रचिता महीं !
धरिया ध्यान जजि होम मध्य बढ़ी सरसा महि
तब प्रगट्यो प्रतिहार , राज तिन ठौर सुधारिय
फुनि प्रगट्यो चालुक्क, ब्रम्हा तिन चाल सुसारिय
<u>***पांवार प्रगट्यो बीर वर***</u>***,*** *कह्यो रिष पंमार धनु*
चय पुरुष जुड़ किनौ अतुल नाह रषषस पुद्धन्त तनु !!

श्री ऐ एफ रुडोल्फ द्वारा अनुवादित चंद बरदाई के काव्य पृथ्वीराज रासो में दोहा २१ ***इंद्रवती ब्याह*** *कथा में लिखा है जिसमे उल्लेख आता है की*

*फिरी जानी **पांवार***
राम रघुवंश बिचारी
जीवन जो उब्बरै
तौ मरण केवल संचारी !!
महंकाल बर तित्थ
तित्थ धारा उध्धारी !

---

३१) सी व्ही वैद्य द्वारा लिखित किताब –History of Medieval Hindu India Volume II Early History of Rajput (750 to 1000 AD) page 62 **में उनके विचार लिखे है जो बताते है की परमारों को ब्रम्ह क्षत्र कहा गया क्योंकि उन्होंने अपने प्रवर याद रखे !**

*Kshatriyas who had kept up the memory of their **Pravara Rishis** were called in later times **Bramha-kshatra***

The Paramaras are of the Vasishtha gotra and are supposed to be even born of Vasishtha and hence they are ब्रम्होपेतक्षत्रेणकुलीनाः .The explanation is often given that brahmakshatra may be explained – आदौब्राह्मणः पश्चात्क्षत्रियः !

(ब्रम्हक्षत्र का अर्थ हुआ की पहले ब्राम्हण थे बादमे क्षत्रिय बने और राजा मुंज तथा राजा भोज को ब्रम्हक्षत्र कहा गया है!)

---

32) पौवारा शब्द का अर्थ सन १८३५ में प्रकाशित Asiatic Researches: Or, Transactions of the Society ... Index Page no 155
Pauvara ,a tribe or country** in the north - west of **Bharatas empire

---

33) श्री राजवी अमर सिंह द्वारा लिखित Mediaeval History of Rajasthan- Western Rajasthan page no 13 के अनुसार

Parmaras (Pravaras) *are of the Vashishtha Gotra with 3 pravaras.*

---

34) The Cyclopedia of India and of Eastern & Southern Asia , Third Edition Volume IV, second edition year 1873 . Author – General Edward Balfour

Page 669

POWAR or Puar or Pouar , a section of Rajpoots .

---

35)**Corpus Inscriptionum Indicarum Vol.VII part 2 , Introduction to Inscriptions of The Paramaras , chandellas , Kachchhapaghatas and other two Dynasties etc by Harihar Vitthal Trivedi , Hony Fellow of the epigraphical Society of India , Published by The Director General of Archaelogical Survey of India ,**

Page no 58 –kalvan plate Inscription of the time of Bhojadeva

TEXT[3]

[Metres : Vv. 1-5 and 8 *Anushṭubh* ; v. 6 *Sragdharā* : v. 7 *Upajāti*].

First Plate

1 स्वस्ति [।*] श्रीमां[4] धारायां मेरुमह्यागिरितुंगशृंगोपमे प्रवांरान्वये[5] अनेकसमरसंघट्ट[सा][6]-

2 धितशत्रुपक्षविस्तृतयस (शो) धवलितदिगंतराल:[7] श्रीसीयकदेवपादानुध्यात: सर[स्व]-

3 तीमुखतिलकभूत: कृतकाव्यमुक्तसायकघूर्म्मा (र्णा) यितसि (शि) र:कविजनशत्त (त्रु) पक्ष-

4 श्री[8]वाक्पतिराजदेवपादानुध्यात: अनेकमहाहवविजितारिजनप्रथितयस (शो) निर्म्मली-

5 कृतसकलधराधरधराजलधिसीमा श्रीसें (सिं) धुराजदेवपादानुध्यात: महाव (ब) लप्रचंडरि-

Remarks Regarding above plate Page 55 –

After the introductory blessing , svasti , the inscription furnishes the genealogy of the ***Pravamra (Paramara) rulers*** *(of Malwa) , naming Siyakadeva , his successor Vakpatirajdeva , his successor*

Sindhurajdeva and His Successor Bhojdeva , all in general terms and supplying the only historical information that Vakpatirajdeva was a poet of high rank and also that Bhojdeva had vanquished the ruler of Karnataka , lata , Gurjjara , Chedi & Konkana . Bhoja's Success over the Karnaatakas obviously refers to the Long drawn war which began from the time of Vakpati Munja and Tailapa .

---

36) Book – Inscriptions of the Paramaras , Chandellas, Kachchapaghatas and two minor Dynasties , Part 1 , Author Mr H V Trivedi , published by Archaeological Survey of India , 1978 ,

Page no 30 –

D C Ganguly suggested that Udyaditya was a distant relation of Bhoja . Relying on the evidence supplied by an inscription dated in the sixteenth Century and found at Udaipur in the Vidisha District , the same scholar held that Udayaditya was the son of Gyata (Jnata) , grandson of Gondala and Great Grandson of Suravira of ***Pravara (Paramara) family****. But the Controversy is set at nought by the statement of the Jainad Stone inscription , which describes Jagaddeva , the son of the Udayaditya as a Nephew of Bhoja . On the evidence of this inscription , H C Ray and V V Mirashi concluded that* ***Udayaditya was a brother of Bhoja .***

---

37) Maharashtra State Gazetteers: Maharashtra – land and its people, Directorate of Government Printing , Stationary & Publication 1953 ,

***Powar – Also called Panwar,Puar, Ponwar and Parmara Rajput*.**

---

38) Book "Hindu World Vol. 2 An Encyclopedic Survey Of Wisdom" Benjamin Walker - ByBenjamin Walker, year 1995,

इस किताब में लेखक पृष्ठ क्रमांक १८६पर वे लिखते है की

The Paramaras are also known as the Pramara , Pavar , Powar , Pawar , Panwar , Ponwar and other variations of the name .

---

39) श्री नामवीर सिंह अपनी किताब में 'पृथ्वीराज रासो भाषा व् साहित्य" में उस समय की भाषा का विश्लेषण करते है जो बिल्कुल सही मालूम पड़ता है -

पृष्ठ क्रमांक 58

मध्यग म की स्थिति - अपभ्रंश की तरह रासो में भी मध्यग म को विकल्प से 'वँ' कर देने की प्रवृति दिखाई पडती है -

कुमारी - कवाँरी

तोमर - तोवँर

पांमार - पावाँर

---

40) श्री राजमणि सरमा द्वारा लिखित "हिंदी भाषा इतिहास व् स्वरुप" इस किताब में पृष्ठ क्रमांक ३३ में

"पा" धातु का अर्थ रक्षा करना होता है !

---

41)श्री पंडित रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित किताब 'वैदिक सम्पति"के पृष्ठ क्रमांक २९२ पर लिखा मिलता है की

"पा" धातु का अर्थ रक्षा करना होता है तो "पि" धातु का अर्थ रक्षा करने वाला होता है !

---

42)**Mr R. L. Turner** द्वारा लिखित **"A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages"इस किताब के पृष्ठ ४९४ में**

संस्कृत शब्द प्रवर का अर्थ best यानि सर्वश्रेष्ठ बताया गया है ! पाली व् प्राकृत में इसे पवर कहा गया है जिसका अर्थ उत्तम होता है !

---

43) **Raja Yudhisthira: Kingship in Epic Mahabharata , year By Kevin McGrath** इस अंग्रेजी किताब में उल्लेख आता है -

Arjuna and Krishna advance against the pravara 'champion' of the Magadhas.

---

44) कश्मीर के कवि कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिनी नामक काव्य के चतुर्थ तरंग में एक श्लोक आता है जिसमे मनु मान्धाता श्रीराम इनको प्रवर राजा कहा गया है !

*मनु मान्धाता रामादया बभूवु: **प्रवरा नृपा** !*
अन्वभावि तदग्रेऽपि ब्राम्हानैर्न विमानना !!

*स्कन्धेऽधिरोप्य निश्चेष्टिकृत **प्रावार भूषणः** ।*
नन्दद्भिः सोपहासंतै: सुज्जेरयं व्यनीयत ।
प्रच्छाद्य सत्ववान् वनं सोशकेनैव नोऽर्चितः ।
वृहद्राजवेत्युक्त्वा तस्मै स्वान्यंशुकान्यदात् ।१८१७

45) सन १९७७ में Rajasthani Hindi sabdaKosh Volume 2 - इस किताब में बद्रीप्रसाद सकारिया लिखते है की -

परमार - राजपूतो की एक जाती पँवार / शत्रुओ का नाश करनेवाला

---

46)A Dictionary of Urdū, Classical Hindī, and English By John Thompson Platts (written year 1884) **, में पृष्ठ क्रमांक २७६ पर पंवार शब्द का अर्थ एक राजपूत जाती का नाम बताया गया है !**

---

४७) "शेखावत और उनका समय" इस किताब में श्री रघुनाथसिंह शेखावत सन १९९८ में पृष्ठ क्रमांक ८ पर लिखते है -

" *विभिन्न सूत्रों के प्रवराध्यायो का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है की किसी कुल के **प्रवर ऋषि वे पूर्वज है जिन्होंने ऋग्वेद के सूक्त रचे** और उनके द्वारा अग्नि की स्तुति की ! यज्ञ करने वाला यजमान अग्नि से प्रार्थना करता है की - हे अग्ने ! ऋग्वेद के सूक्तो से जिन्होंने आपकी स्तुति की उनका मै वंशज हु !"*

---

४८) जय नारायण असोपा द्वारा सन १९७६ में लिखित ORIGIN of RAJPOOTS में वे लिखते है -

*They led the defence by taking up Shastra (arms) in place of shastra (scriptures) and thus achieved Paramarata (efficiency of killing enemies) **It may be mentioned here that Powar is a geographical name which is borne by a number of communities who lived in this territory .***

---

४९) श्री फ्रांसिस मेसन डी . डी द्वारा सन १८६८ में लिखित किताब PALI GRAMMER के पृष्ठ क्रमांक १७१ / १७२में pavara surasura इस पाली शब्द का उल्लेख आता है ! **पवर** सुरासुर *यानि **उतम** श्रेष्ठ सुर व् असुर ऐसा लिखा मिलता है !*

---

५०) सन १८७२ में श्री Monier Williams द्वारा लिखित A Sanskrit - English Dictionary के अनुसार

पृष्ठ क्रमांक ६४४ -
Pravara – Most excellent , chief , principal , best , prominent , distinguished , exalted , eminent , better , greater , eldest

---

५१) **Transactions of the American Philosophical Society , Volume 40 Part 4 (Year 1950)**

THE NALARAYADAVADANTICARITA (ADVENTURES OF KING NALA AND DAVADANTI) A WorK IN OLD GUJARATI, **Edited and translated with a grammatical analysis and glossary** इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ३५६ में श्री Mr. ERNEST BENDER (South Asia Regional Studies Department and Oriental Studies Department, University of Pennsylvania) शब्दों का अर्थ कुछ इस प्रकार बताते है -

*pavara= 'Excellent' adj., obl. sg.; [**Prakrut - pavara, Sanskrit. pravara]***

पृष्ठ क्रमांक २७४ पर वे पंवारका अर्थ बताते हुए लिखते है–
H. Pamvara , cf.BP pavara (43) 'excellent'

---

५२) BUDDHIST HYBRID SANSKRITGRAMMAR AND DICTIONARY इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ३३८ में श्री FRANKLIN EDGERTON, (Sterling Professor ofSanskrit and Comparative Philology, Yale University) पवर का निम्नलिखित अर्थ बताते है -

pavara (**= Pali id., MIndic for Skt. pravara), excellent**

---

53) संदर्भ - THE JOURNAL OF THE ASIATIC SOCIETY, BENGAL EDITED BY THE SECRETARY. VOL. IX. PART I.—JANUARY TO JUNE, year 1840.

पेज ७४८

मध्य प्रदेश स्थित उदयपुर (जिला विदिशा) नीलकंठेश्वर मन्दिर शिलालेख का २ रा श्लोक –

श्रीमान पावार वंस्यो नृपतिंच विवुध मालवंराज्य *क्रीत्वा विढाता सुरवीर भवतिषलभिढैत पापिनां भुषरहा।*

----

54) The Asiatic Journal and Monthly Register for British India and its Dependencies – Vol 15 January to June 1823 published from London –

Page no 9 - **Sir John Melcom Report on central India** –

The Rajpoots or Military class of Hindus , form a great Part of the population of Malwa . Some of these families trace there origin to a very early period . In the oldest record of Malwa , the rulers were the Chaur (must be Tuar) and ***Powar Rajpoots****. And so late as the eleventh Century . , it appears that great part of the Mewar and western Malwa were in possession of the Rajpoot Race .*

____

55) Book – **Travels in Western India , a Visit to The sacred mounts of the Jains and the most Celebrated Shrines of Hindu Temples between Rajpootana and the Indus , with an account of the ancient city of Nehrwalla** , published after death of Colonel James Todd in year 1839 –

Page 218 –

I have elsewhere stated my opinion, that the name of one of the ***oldest*** *and* ***most powerful tribes of India,*** *namely,* ***the Pramara, pronounced Powar (sovereigns of Oojein and Dhar from the remotest period),*** *gave occasion to the corruption of the name of the tribe to a proper name, both of this prince, the* ***correspondent of Augustus, and of the opponent of Alexander.*** *I can also prove that the* ***supreme title of Rana did belong to this family of Ozene,*** *and is still borne by the deposed prince of Omerkote in the Desert, of the Soda tribe, one of the most conspicuous subdivisions of the Pramaras, at one time sovereigns of all Western India from the Sutledge to the ocean.*

---

56) Corpus Inscriptionum Indicarum Vol.VII **part 1** , **Introduction to Inscriptions of The Paramaras , chandellas , Kachchhapaghatas and other two Dynasties etc by Harihar Vitthal Trivedi , Hony Fellow of the epigraphical Society of India , Published by The Director General of Archaelogical Survey of India , year 1991 ,Page no 5 -**

The caste of Paramara rulers is the next point requiring discussion. The Udaipur prashsti uses the expression dvija vrga ratna (a jewel among the twice born) while describing Upendra , the founder of the family . ***The Piplanagar grant of Arjunvarman dated V.S. 1267 (1211AD) says that the predecessor of this king was a crest Jewel (sekhara) of the Kshatriyas*** *and accordingly the Paramara rulers appear to have been Kshatriyas , which view is corroborated by the Prabhavakacharita which calls Vakpatiraja born in the that dynasty as a Kshatriya . Dr Dashrath Sharma , however has picked up a reference from the* ***Pinglasutravritti of Halayudh****, the court poet of Vakpati Munja , according to which his patron was known as belongling to the* ***Bramha –kshatra*** *caste .*

---

57) सन १९५३ में राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित किताब **"हिमालय - परिचय (१) गढवाल"** में वे गढवाल के पंवार वंश के बारे लिखते हुए पृष्ठ क्रमांक १२४ पर चांदपुर गढ़ में प्राप्त एक शिलालेख में निम्नलिखित एक श्लोक का उल्लेख करते है -

" शायकाब्धि नव सम्मितवर्षे विक्रमस्य विधु वंशज पूज्य: !
श्री नृप: कनकपाल इहाप्त: शौनकऋषि कुलज: प्रमरोयम !!

वे कहते है की इस श्लोक में प्रमर (पँवार) शब्द तथा **कनकपाल**का उत्तराखंड में ९४५ संवत (**सन ८८८ ई.**) में आना बताता है !

---

58)Book - Ain I Akbari , author Abul Fazal , Translator - Colonel Mr H S Jarrett, Volume II , year 1891 .

Page no 210

Princes of Malwah
I.-Five Rajahs of this dynasty reigned in succession,
387 years, 7 months, 3 days.

B. C. 840. Dhanji, (Dhananjaya, a name of Arjun,
about 785 before Vikramaditya), ... 100- 0 -0

„ 760. Jit Chandra, ...••• 86 - 7- 3
„ 670.- Salivahana, ... 1 - 0 -0
„ 680. Nirvahana, ...100- 0- 0
„ 580. Putraj, (Putra Rajas or Vansavali is without
Issue), ... 100 – 2 - 0

II.-Eighteen princes of the ***Ponwar caste reigned***
1,062 years, 11 months, 17 days.

B. C. 400. ***Aditya Panwar****, (elected by nobles.)*

Page no 214/215/216

It is said that two thousand, three hundred and fifty-five years, five months and twenty-seven days prior to this, the 40th year of the Divine Era, an ascetic named Mahabah, kindled the first flame in a fire-temple, and devoting himself to the worship of God, resolutely set himself to the consuming of his rebellious passions. Seekers after eternal welfare gathered round him, zealous in a life of mortification. About this time the Buddhists began to take alarm and appealed to the temporal sovereign, asserting that in this fire-temple, many living things were consumed in flaming fire, and that it was advisable that Brahmanical rites should be set aside, and that he should secure the preservation of life. It is said that their prayer was heard, and the prohibition against the said people was enforced. These men of mortified appetites resolved on redress, and sought by prayer adeliverer who should overthrow Buddhism and restore their own faith.The Supreme Justice brought forth from this fire-temple, now long grown cold, a human form, resplendent with divine majesty, and bearing in its hand a flashing sword. In a short space, he enthroned himself on the Summit of power, and renewed the Brahmanical observance. He assumed the name of Dhanji and coming from the Deccan, established his seat of government at Malwah and attained to an advanced age When Putraj, the fifth in descent from him, died without issue, the nobles elected ***Aditya Ponwar*** *his successor, and this was the origin of the Sovereignty of this house.On the death of Hemarth in battle, Gandharb, the chosen, was raised to the throne. The Hindus believe that he is the same as Hemarth whom the Supreme Ruler introduced among the celestial sin the form of a Gandharb and then clothed in human shape. Thus he became universally known by this name and prospered the world by his justice and munificence. A son was born to him named Bikramajit who kept a flame the lamp of his ancestors and made extensive conquests.*

The Hindus to this day keep tho beginning of his reign as an era and relate wonderful accounts of him. Indeed he possessed knowledge of talismans and incantations and gained the credulity of the simple. Chandrapal obtained in turn the supreme power and conquered all Hindustan. Bijainand was a prince devoted to tho chase. Near a plant of the Munja be suddenly came upon a new-born infant. He brought him up as his own son and called him by

the name of Munja. When his own inevitable time approached, his son Bhoja was of tender age. He therefore appointed Munja his successor, who ended his life in the wars of the Deccan. Bhoja succeeded to the throne in 541st year of the era of Bikramajit and added largely to his dominions, administering the empire with justice and liberality. He held wisdom in honour, the learned were treated with distinction, and seekers after knowledge were encouraged by his support.Five hundred sages, the most erudite of the age, shone as the gathered wisdom of his court and were entertained in a manner becoming their dignity and merit…..

Page 217

He gave thanks to God, welcomed Bhoja with much affection and appointed him his successor. When his son Jayachand's reign was ended, ***none of the Ponwar caste was found worthy to succeed.***

---

59) India : Past and present , series No 1 A studies in Rajput History Volume I ***"Origin of Chalukyas"****, Author Ranjit Sing Satyasray / Dr N K Dutt , Principal of Sanskrit College Calcutta- year 1937*

Page 72

To a Hindu, there is no difference between Brahmana Kula and Agni Kula. The seven great Rishis, the earliest of mankind, according to mythology were born of fire (Vayu puran) .We have descriptions of Agnivamsa in the Puranas

The term Agni-Kula may therefore denote a Brahmanic origin. ***Of the four Agnikulas, at least three have epigraphic evidences to show their Brahmanic origin****. It is quite probable that their Brahmana ancestors took to arms like the Kadamba Mayura Sarma for some reason or other. The traditional meanings attributed to the terms like Chalukya and Chauhan in the Agnikula story point to their taking up arms. Indeed the Chalukyas are described as having risen out of fire with the Vedas in one hand, a sword in the other and a sacred thread round the neck .*

Page 11

About the Paramars, I shall conclude this chapter by simply quoting Dr. Hoernle. "The only Rajput clan which, so far as I know, puts forth in its records a claim to be a 'fire-race' is that of the Parmars. Their claim can be traced back to about a century earlier than Chand Bardal, that is, to the year 1060 A.D.

---

60) Handbook on Rajpoots , arthor Mr . A H Bingley ,

पृष्ठक्रमांक११०

Ponwar, Panwar, Pramar or Puar.

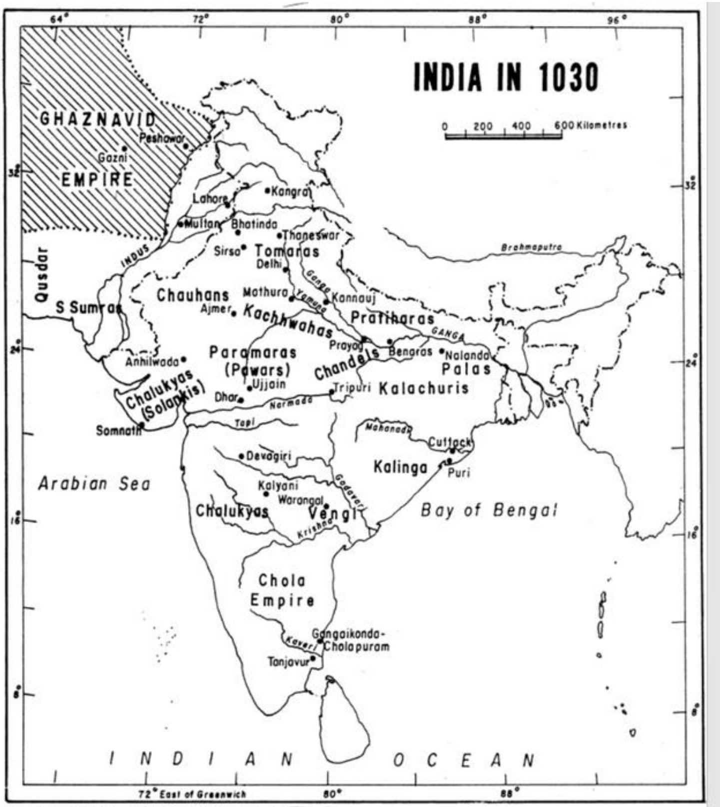
The name of this clan is derived from the Sanskrit Pramara) or ' first striker'. It was the most powerful of the agnicular or fire tribes. The legend of their origin is very curious...

पृष्ठ क्रमांक १११

The glory of the Ponwars has departed, but they cherish the memory of their former greatness At one time the clan ruled over the whole of India from the Sutlej to the sea. There is an ancient saying that " the world is the Pramars They were predominant in Rajasthan at the time of Alexander's invasion....

---

61) Indian History इस किताब में श्री व्ही के अग्निहोत्री परमारों या पोवारो के साम्राज्य की सन १०३० स्थिति दिखाते है ! इसके बाद राजा भोज और २५ साल तक अनेक युध्द करके राज्य विस्तार करते है यह विशेष बात है !



International and State boundaries are not to be taken as authentic.

---

62) **चालुक्य** -यह अग्निवंश में से एक शाखा है !सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३५३ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है ! इस कुल को श्री रसेल इन्होने सोलंकी का स्वरुप कहा है !

---

63) सन १९३३ श्री डी . सी . गांगुली द्वारा लिखित History of the Paramara dynasty -

पृष्ठ क्रमांक १ से ४ के लेखन का हिंदी में वर्णन -

*वे परमारों के उत्पत्ति की संकलित अनेक प्रचलित कहानिया लिखते है , जिसमे **एक कहानी** राजा मुंज व् सिन्धुराज के समकालीन कवि पदमगुप्त द्वारा लिखित कहानी है ! इसमें वशिष्ठ व् विश्वामित्र इनके बीच कामधेनु नामक दैवीय गौ के लिए हुए संग्राम व् उस संग्राम के लिए अग्निकुंड से प्रगट हुए वीर योध्दाओ का वर्णन है जिन्हें परमारा कहा गया !*

*वे **दूसरी कहानी**का उल्लेख करते है जो राजपुताना के चारण लोगो द्वारा बतायी गयी है जिसमे वे राक्षसों , दैत्यों द्वारा त्रस्त ऋषियों के बारे में बताते है ! उनसे निजात पाने वे देवताओ को पूजन द्वारा प्रसन्न करते है और भगवान शिव के आशीर्वाद से एक तेजस्वी योध्दा प्रगट होते जिसे प्रतिहार नाम दिया जाता है ! भगवन ब्रम्हा के हथेली से दुसरा तेजस्वी योध्दा प्रगट हुआ जिसे चालुक्य नाम दिया गया ! फिर अग्नि कुंड से परमारा नामक तेजस्वी वीर योध्दा प्रगट हुआ ! फिर वशिष्ठ जी ने पुनः प्रार्थना की तब अग्नि से चौथी तेजस्वी योध्दा की आकृति प्रगट हुयी और चारो ने मिलकर राक्षसों का अंत किया !*

एक अन्य चारण द्वारा बतायी कहानी का वे उल्लेख करते है जिसमे देवताओ के राजा इंद्र दूर्वा घास से एक मूर्ति बनाते है ,

उसपर प्राण तत्व का जल छिडकते है, और उसे अग्नि कुंड में डाल देते है, फिर संजीवनी मन्त्र का जाप करते है, उसके प्रभाव से मार, मार कहते हुए एक तेजस्वी योध्धा आकृति अग्नि कुंड से बाहर आती है जिसे परमारा कहा गया जिसने आबू, धारा व् उज्जयनी पर राज किया !

एक अन्य चारण जिनका नाम मुकजी था उनके द्वारा बतायी कहानी का श्री गांगुली उल्लेख करते है की पंवार या परमार शिव की उर्जा से उत्पन्न हुए और परिहार देवी की उर्जा से ! और चौहान अग्नि से !

पृष्ठ क्रमांक 3 में वे कहते है की शिलालेखो में परमारों के अलावा अन्य किसी राजवंश के शिलालेखो में अग्नि कुंड के बारे में लिखा नही मिलता ! श्री गांगुली आईने अकबरी के बारे उल्लेख करते है जिसमे अबू फजल अग्नि कुंड की बात तो कहता है परन्तु अबू फजल एक अलग ही कहानी बताता है (सम्भवतः उनके समय वह कहानी प्रचलित हो) जिसमे ईसापूर्व ७६१ में कोई महाबाह नामक किसी सन्यासी ने अग्निकुंड में अग्नि प्रज्वलित की और यज्ञ कार्यो के लिए समर्पित जीवन जिया ! यज्ञ पूजा की और लोग आकर्षित होने लगे ! परन्तु यह बात बौध्द धर्मीयो के लिए चिंता विषय बना ! उन्होंने किसी राजा को यज्ञ पूजाओ रोकने के लिए मना लिया ! भक्त गण परेशान हुए ! तब उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की उनके यज्ञ समारंभ निर्विघ्न पूर्ण हो और उनकी रक्षा हो ! तब अग्नि यज्ञ से एक अस्त्र शस्त्र धारण किये हुए एक वीर प्रगट हुए !

उनका नाम धनजी था ! उन्होंने आगे मालवा को अपना राज्य बनाया ! उनके पांचवे वंशज पुतराज निपुत्रिक अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए ! तब राज्य के पदाधिकारीयो ने आदित्य पोंवार को अपना राजा चुना ! उनके सारे वंशजो को आगे परमारा कहा गया!

पृष्ठ क्रमांक ४ व् ५ पर श्री गांगुली बताते है की उदयपुर प्रशस्ति में वशिष्ठ व् विश्वामित्र की कहानी विशद की है ! जो निम्नलिखित शिलालेखो में पायी जाती है जैसे -

१) नागपुर शिलालेख
2) वसन्त गढ़ का सन १०४२ में अंकित पूर्णपाल राजा का शिलालेख
3) अर्बुदागिरी पर प्राप्त शिलालेख
४) आबू के अचलेश्वर मन्दिर का शिलालेख
५) पाटनारायण शिलालेख
६) चामुंडा राज परमार का अरथुना शिलालेख

श्री गांगुली मानते है की परमारवंश यह एक जाती न होकर एक परिवार है जो एक प्राचीन योध्दा के वंशज है !

(------ और यह गलत भी नही क्योंकि परमार नामक एक राजपरिवार प्रसिध्द हुआ , पर अगर अबू फजल की कहानी को मान्य करे तो एक राजवंश या परिवार आदित्य पोंवार नामक योध्दा से शुरू हुआ था जो स्वयम क्षत्रिय पोंवार जाती का था !

और इस जाती में एक परिवार नही बल्कि अनेको राज परिवार के क्षत्रिय थे जिनका उल्लेख टोलेमी पोर्वाराय (poruaroi/ porvarai)कहता है ! वह पोर्वाराय किसी एक व्यक्ति को उद्देशित नही करता बल्कि एक जन समूह की बात करता है ! इससे यह स्पष्ट होता है की पोंवारो या पंवार जाती में एक परमार उपाधि धारण किया राजकुल हुआ जो बहुत प्रसिध्द हुआ ! इस जाती की अनेक शाखाये है जो अलग अलग स्थानों में विकसित हुयी यह भी स्पष्ट है !)

श्री गांगुली आगे आईने अकबरी का ब्यौरा देते है जिसमे लिखा है की जब राजा भोज के पुत्र जयचंद का राज समाप्त हुआ तब कोई भी ***पोवार जाती*** *का अन्य व्यक्ति राज सिंहासन को सम्भालने लायक न था ! जीतपाल नामक तंवर जाती का योध्दा राजा बना ! सम्भवत: जिसका जिक्र जीतपाल है वह उदयादित्य था ऐसा श्री गांगुली इनको लगता है !*

(अबू फज़ल द्वारा आईने अकबरी यह किताब करीब १५९० में लिखी गयी ! राजा जयसिंह के बाद भलेही यह लिखा हो की कोई भी पंवार जाती का राजा बनने लायक नही हुआ ! पर यह पूर्ण सत्य नही क्योंकि उनके बाद अनेक राजाओ का उल्लेख सन १३०५ तक शिलालेखो ख्यातो व् जनकाव्यो में मिलता है जिसमे राजा महलक देव का उल्लेख है !)

आगे गांगुली पृष्ठ क्रमांक १४२ व् १४३ पर परमार वंश के मध्य भारत पर शासन के बारे में उल्लेख करते है ! --

The Nagpur stone inscription is the main evidence to throw light upon the career of this monarch. It records that, on the occasion of a solar eclipse, he granted two villages in the ***Vypura mandala****, probably for the maintenance of a temple. The date of this grant cannot be definitely determined, as there were eight solar eclipses between the years 1087 and 1094 A. D. As the inscription is engraved on an ordinary piece of stone, which was evidently used for building a temple, it was less likely to have been carried any great distance from its original place. This makes it apparent that Vyapura mandala was situated somewhere near Nagpur,* ***Nagpur is also known as Vyalapura****, which leads Mr. Bal Gangadhar Sastri to suggest its identification with Vyapura. The modern city of Nagpur was founded in the early years of the eighteenth century A. D., by the Raja Bakht Buland. place in the district was Nandivardhana or Nagardhana, the modern village of the same name, four miles south of Ramtek, which still contains huge remains of old forts and temples. The tradition goes that, in olden times* ***Nandivardhana was an important settlement of the Paramaras, This is strongly corroborated by the present existence of a Ponwar caste in that locality****. Hence it is quite probable that a portion of the Nagpur District formed part of the kingdom of the Paramaras of Malwa.*

श्री गांगुली इन्होने उनकी किताब में परमार वंश पर बहुत ही विस्तृत तरीके से अपने विचार व् जानकारी दी है !

____

64) श्री विश्वंभर शरण पाठक अपनी किताब Ancient Historians of India में अग्निकुल के कहानी पर लिखते है की -

पृष्ठ क्रमांक १७७/१७८

No theme is more rewarding for the study of the historical thought and methods of the mediaeval India than the Agnikula legend , the sphinx of the Indian History , which has made the historian wander in the marshy fields of speculation for more than 1000 years*. It first occurs in the 10th century AD and since then the historians have tried to solve its mystery without any success. After* ***"Navasahasankacharita"*** *the legend recurs in the* ***Tilakamanjari*** *of Dhanpala , several* ***Paramara inscriptions*** *, the documents of Chahamanas , the* ***Prithviraja Raso*** *of Chand bardai and innumerable bardic chronicles . In the first quarter of 17th century , it was again revived by Munhot Nainsi , the Abul fazl of Rajsthan and in the first quarter of the 19th , Surajamala Mishran , the greatest Hindu Historian of his time wielded his facile pen over it . After him, the theme was dragged into the political arena, and a royal fight was waged between the Nationalist historians, who felt indignat at their past glory being sullied and took up cudgels to defend the honour of the Rajput ancestry, and the British historians who, probably because of an unconscious urge to prove that the earlier rulers of India were foreigners like themselves, tried to interpret the legend as indicative of the foreign origin of the Rajputs.*

All writers belonging to the Rajasthan school of history Surajmal Mishran, M. M. Gaurishankar Hirachand Ojha, Devi Prasad, Bisheswar Nath Rou, Jagdish Singh Gahalot and Dr. Mathuradal Sharma either by passed or explained away the Agni- kula legend, and emphasized instead the tradition of the solar origin of the Rajputs. True to the Indian spirit of itihasa, some of them even tried to reconcile both the traditions by maintaining the identity of Agni and Sürya. But none of them squarely faced the Agni-kula myth and

attempted to give its explanation. On the other hand, the gallant knights of modern scholarship, Col. James Tod, William Crooke, Vincent Smith, D. R. Bhandarkar and others tilted at a desolate mediaeval windmill with shining lances of modern steel. Thus, referring to the story of the Agni-kula,

श्री विश्वंभर शरण पाठक आगे अपनी किताब के १५९ से १७२ तक प्राचीन ग्रंथो के आधार पर प्राचीन ब्रम्ह क्षत्र अग्निकुल ब्राह्मण यानि आग्नेय , अग्निवेश व अग्निध्र ब्राम्हणों का , अग्निकुंड , वशिष्ठ व परमारों या पंवारो से सबंध प्रदर्शित करते है !

---

65) सन १८९० में श्री विलियम क्रूक द्वारा लिखित An ethnographical Hand book for the N-W Provinces and Oudh में पृष्ठ क्रमांक १६६ पर वे लिखते है -

Panwar-* *a noted tribe of Rajpoots *. "They were the most potent of the Agni kula or fire races " The world is the Pramar's" is an ancient saying and Nau kot Marusthali signified the nine division into which the country from the Satluj to the ocean was divided among them" .*

By another theory they represent the Paurawas the famous race which after the time of Alexander was all predominant in Rájasthán under the name of Pramára. They are mentioned in the Veda and Mahábhárata where the first Kings of the Lunar race are represented as being Pauravas who reigned over the realms included between the Upper Ganges and the Jumna. They are the Porouaroi or Porvaroi of Ptolemy.

---

66) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के भारत के प्राचीन इतिहास व् संस्कृति के प्रोफेसर श्री रमाशंकर त्रिपाठी , सन १९४२ में अपनी किताब History of Ancient India के पृष्ठ क्रमांक ३७८ में लिखते है -

Section G

<u>who were the Paramaras ?</u>

*Tradition represents the Paramaras (sometimes called Paramaras or **Powars**) as descendants of the hero Paramara , who was created by Vasistha out of the his fire altar at Mount Abu to rescue Nandini , the cow of Plenty , from Visvamitra .....*

---

67) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग प्रमुख श्री रमाशंकर त्रिपाठी अपनी किताब History of Kanauj to the Moslem Conquest में लिखते है -

There is a late legend in chand's Raso which groups the Pariharas or pratiharas along with the three other Rajpoot clans – The Chauhan(chahamana) **Powar(paramara)** and Solanki (Chalukya) as Agnikula , deriving their origin from a sacrificial fire pit (agnikunda) at Mount abu .

---

68) History of Mediaeval Hindu India Volume II पर श्री सी व्ही वैद्य लिखते है

*पृष्ठ क्रमांक ४९ –**Rajpoots have the same gotras and Pravaras as those laid down in the Vedic Sutras and have carefully preserved their memory to this day .***

राजपूत प्राचीन वैदिक आर्यों के वंशज है क्योंकि वैदिक सूत्रों के अनुसार ही राजपूतो के गोत्र व् प्रवर है और उन्होंने वर्तमान तक उन्हें याद रखा !

पृष्ठ क्रमांक ५३ –These stories of the birth of warriors from the fire of Vaishtha or the handful of Bhäradväja are plainly myths but they clearly are based on the fact that the ***Paramaras and the Chälukyas in the 10th and 11th centuries were reputed to be of Vaishtha and Bhãradvãja gotra by descent and not by discipleship****.*

अग्नि कुंड से योध्धाओ के उत्पत्ति एक मिथक या पुराण कल्पना कथा है! हालाकि यह कथाये स्पष्ट रूप से इस तथ्य पर आधारित है की ***परमारों का गोत्र वशिष्ठ व् भारद्धाज था जो की वह उनके वंशज होने के कारण था*** *तथा शिष्य परम्परा के कारण नही था !*

पृष्ठ क्रमांक ५६ –

महर्षि भृगु पहले प्रवर ऋषि है ! सूर्य वंशीय आर्यों के चार परिवार समूह थे वे थे भृगु , अंगिरस , वशिष्ठ व् कश्यप !

पृष्ठ क्रमांक ५७ - Pravara Rishis are those ancestors in one’s family who have composed hymns in the Rigveda and who have praised Agni by those hymns or suktas.

प्रवर ऋषि किसी के परिवार के वे पूर्वज थे जिन्होंने ऋग्वेद की ऋचाये रची थी , जिन्होंने अग्नि का आवाहन मन्त्र व् सूक्तो के द्वारा किया था !

---

69)श्री **विश्वम्भर शरण पाठक द्वारा लिखित** The Ancient Historians of India

पृष्ठ क्रमांक - १६५ -

Some brahma-kshatra dynasties frankly admitted the fact that their ancestors preferred the more lucrative and adventurous profession of the Kshatriyas to the nobler yet less splendid duties of the priestly class , whereas others concocted stories to explain the change .

पृष्ठक्रमांक१६९ –

Before the advent of the early mediaeval period , there was a group of agnikula families of the brahmanas . The group had certain marked cultural characteristics. ……..

It is curious to note that paramaras also share these characteristics. They are recorded as having originated from Agni and as having belonged to the Bramhakshatra caste of Vahinivansha (Agnivansh) . Further they inhabited the area associated with Agnikul .lastly like the Agnivesya Brahmanas they had the gotra of Vashishtha .

———————————————————————————

70) राजस्थान के राजपूत इस किताब में श्री मांगीलाल माहेचा पृष्ठ क्रमांक १४ पर लिखते है की -

मारवाड़ में भी इनके लिए कहावत है - पृथ्वी तले पंवार , पंवार तले पृथ्वी ! इसका अर्थ यह है की किसी समय पंवार जाति भारत में प्रबल थी !

———————————————————————————

71) Chronology of Nepal History , Reconstructed (Nepalraja Vamsavali) , Author Pandit Kota Venkatachelam , year 1953 –

Preface page 1

The History of 245 years of the Gupta Emperors is given in Kaliyugaraja Vrittanta , which a Part of Bhavishya Purana 3056 years after Mahabharata War in 82 BC , the Gupta empire ended and ***Vikramaditya of the Panwar Dynasty***

***conquered the whole of India** and annexed the Maghada Empire . **The kings of Panwar Dynasty** reigned from 2710 kali to 4295 kali , or from 391 BC to 1193 AD . An account of the kings of that dynasty with their reigning periods is given in the Pratisarga Parva of Bhavishya Purana ….*

*It will be evident from the Nepal Rajavamsavali that the Great Adi Sankaracharya was born in 509 BC , that **Emperor Vikramaditya of the Panwar Dynasty** lived in the 1st Century BC and that he went to Nepal and Brought Amsuvarma the king of Nepal under his empire and there inaugurated the Vikram era of 57 BC or 3044 Kali (vide The Indian Antiquary Vol XIII pp 411 ff)*

---

72) Book -Folk Theater of Rajasthan , Author Dr Cecil Thomas Ault Jr , जिसमे वे राजस्थान के ख्याल नामक नाट्य प्रकार का अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रस्तुत करते है -

सत्य वादी हरिश्चंद्र नामक ख्याल के कुछ अंश जिसमे राजा हरिश्चंद्र को पंवार कहा गया है -

Harishchandra says -
*I am the king of Ayodhya , I perform all the rites and rituals of our faith I am of a noble clan , my father was a great Devotee blessed by all . **We are of the Sun clan , the First was Panwar** .*
***Once the Panwar realm was great , Sovereign rule prevailed . A huge and steady kingdom , there was no thefts or dacoits . Wealth was endless ,the treasuries filled , Bhagwan has always been benign .** – 308*

Vishwamitra says –
Tell me Oh queen , where is the king ? A Bramhin waits at his door. A miser stands between him and the donar , there is no point in beginning . The Throne is empty , ***Where is the King , oh Panwar ?***

अध्याय ३-- प्रख्यात राजपुरुष व् शासन



सिकंदर को ग्रीक भाषा में अलेक्झांडर कहा गया है, उससे जिन राजाओ का युध्द हुआ था , उनको पश्चिमी इतिहास में पोवार/ पौवार कहा गया है ! देखा गया की अलेक्झांडर से लड़ने वाले पंवार राजाओ का भारतीय इतिहास में उल्लेख नही मिलता ! जबकि पश्चिम के इतिहास में भारत के पोवार व् पौवार साम्राज्य का उल्लेख जरुर मिलता है ! प्राचीन समय में दूसरी सदी के ग्रीक प्रवासी टॉलेमी ने अपने लेखो में पोवारो का जिक्र किया है ! जर्मन , फ्रेंच , अंग्रेजी , कोर्सियन आदि भाषाओ में लिखित इतिहास में अलेक्झांडर व् पोवारो के युध्द का वर्णन मिलता है !

वर्तमान के भारतीय साहित्य में अलेक्झांडर से लड़ने वाले राजा को पोरस या पुरु राजा कहा गया है ! हालाकि सिंकंदर व् पुरु राजा की लड़ाई का उल्लेख भारत के प्राचीन साहित्य में नही मिलता ! इस लड़ाई

का उल्लेख पश्चिमी इतिहास में मिलता है, तो राजा का नाम भी वही स्वीकारना होगा जो पश्चिम में लिखा मिलता है !

ग्रीक इतिहास के लेखो में ग्रीक भाषा में जो शब्द है वह है **'πωρουάροι'** जिसको अंग्रेजी में Porouaroi / porvarai लिखा जाता है ! हिंदी में यह पोरोआराय / पोरुआराय / प्रोआराय / पोरवाराय/ पोर्वाराय आदि जैसा कुछ उच्चारित होगा ! उज्जयनी ,मालवा व भारत के उत्तर पश्चिम में अगर इन राजाओ का उल्लेख है तो इस प्रकार के नाम के राजा वहा इतिहास में होना ही चाहिए ! यह शब्द दरअसल संस्कृत शब्द **प्रवराय** होना चाहिये ! भारत में कुछ लोगोने पोरुआराय को पौरव समझा परन्तु उज्जयनी , मालवा या उत्तर पश्चिम में पौरव की बजाये पोवार , पंवार वंश का शासन था ! प्राचीन पौवारा साम्राज्य भी पोवारो के साम्राज्य को दर्शाता है ! कुछ लोगो ने पोरुआराय को पुरु समझा ! अगर पुरु वही राजा थे तो पोरु कहा होता ! पर वे पोरु की बजाये पोरुआराय कहते है जो की प्रवराय का अपभ्रंश लगता है ! भारत में पुरु राजा ने अलेक्झांडर से लड़ाई की ऐसे लिखा गया , परन्तु ग्रीक इतिहास के अनुसार तथ्य कुछ अलग है ! अलेक्झांडर का सामना दो पोवार राजाओ से होता है ! पहला कमजोर था तो दूसरा राजा बहुत शक्तिशाली था ! पश्चिमी इतिहासकारों के अनुसार पोरस किसी व्यक्ति का नाम न होकर एक जाती या समूह का नाम था ! भारत के इतिहास में पोवार समुदाय मौजूद है ! पश्चिमी इतिहास में ६०० छोटे बड़े पोवार राजाओ का उल्लेख मिलता है! पश्चिमी इतिहास में पुरु या पौरव के बजाये पोवार /पौवार लिखा गया ! और यह समुदाय हजारो सालो बाद इतिहासकारों को उज्जयनीमें मिला भी ! कुछ इतिहासकारों ने पोवार

राजाओ को पोरस कहा हालाकि ज्यादातर पश्चिमी इतिहासकार उन्हें पोवार कहते है !

इसके अलावा कुछ तथ्य ध्यान देने योग्य है ----

अफगानिस्थान व पाकिस्थान का कुछ भाग दरअसल पुराना गांधार क्षेत्र है ! इस क्षेत्र में पौउरा कुल के प्रमारवंशीय मिलते है जो अब मुस्लिम हो चुके ! पौरा लोगो का वहा होना , पौवारा राज्य का उल्लेख प्राचीन साहित्य में मिलना पोवारो के प्राचीन अस्तित्व को दर्शाता है !

पोरुआराय का अर्थ पुरु , पौरव, पोरुस, पोवार में से क्या है , यह इस बात से तय होता है की उस समय उज्जयनी पर किसका शासन था ! इनमे से मालवा , उज्जयनी सबंधित कोई वंश है तो ,वह पोवार वंश है ! यह पोवार नाम   प्रवराय का ही रूप है ! अंग्रेजी के अनेक वचन में पोवार्स है जो शायद पोरस हो गया ! पश्चिमी इतिहासकार   पोरुआराय को पोवार कहते है क्योंकि यह नाम उनके जन साहित्य , लेखो में परम्परागत रूप में चला आया तथा वर्तमान मौजूद नामो से समान भी लगता है ! इस कारण मान्य करना होगा की सिकंदर की लड़ाई पोवारो से ही हुयी थी !

अबू फजल द्वारा लिखित आईने अकबरी में पंवारो के राजवंश का उल्लेख आता है ! मोहमद कासिम फरिश्ता भी अपने लेखो में पोवारो का उल्लेख करता है !

इस वंश में प्राचीन समय में अनेक राजवंश हुए ! राजा हरिश्चंद्र , श्रीराम आदि पोवार वंश में कुल पुरुष मानकर पूजे जाते थे ! पोवार बुजुर्ग श्रीराम को अपने पूर्वज होने की बात करते थे ! हर कार्यक्रम में उनका पूजन हुआ करता था ! मध्य भारत में पंवारो ने बैहर की सियारपाट की

पहाडियों में अपने कुलपुरुष पंवार श्रीराम इनका मन्दिर बनवाया ! राजा हरिश्चंद्र की कहानिया घर घर में पहले प्रचलित थी !

Mr A. C. L. CARLLEYLE, Assistant, Archeological survey , **अपनी रिपोर्ट** REPORT OF A TOUR IN EASTERN RAJPUTANA IN 1871-72 AND 1872-73. **के पृष्ठ क्रमांक १६३ में जेम्स टॉड का कथन लिखते है –**

"Mândhâta Raja, a name immortalized in the topography of these regions, was of the Pramâr tribe, and sovereign of Central India, whose capitals were Dhâr and Ujain. various spots on the Narbada which perpetuate his name."

इन्ही मान्धाता के पुत्र अम्बरीष को प्रवर अम्बरीष लिखा मिलता है। --
भागवत पुराण में उल्लेख आता है
माधान्तु: पुत्र प्रवराय: अम्बरिष: ।

इतिहास से हमे आदित्य पोवार , राजा भर्तहरी जो नाथ बन गये , सम्राट विक्रमादित्य व् उनके प्रपौत्र सम्राट शालिवाहन , राजा मुंज , राजा भोजदेव , राजा उदयादित्य , राजा जगेदव् पंवार आदि राजपुरुषो की जानकारी मिलती है ! पंवार राजपुरुषो की तरह पंवार स्त्रियो का जिक्र इतिहास में मिलता है ! राजा भोज इनकी पत्नी महाराणी लीलादेवी का उल्लेख एक महान विदुषी के रूप में आता है ! रानी लीलादेवी द्वारा राज्य में कन्या शालाओ का प्रबंध व् स्त्री शिक्षा अनिवार्य करने की बात इतिहास में मिलती है ! पृथ्वीराज चौहान इनकी पहली पत्नी महाराणी इच्छीनी पांवारी, महाराणा प्रताप इनकी पत्नी महारानी अजब्देही पँवार इनका उल्लेख इतिहास में आता है ! राजस्थान में मुमल नामक राजकुमारी व् उमरकोट के पँवार राजकुमार महेंद्र की प्रेमकथा प्रसिध्द है ! राजस्थानी गायक दपु खान मिराशी ने मूमल व् राजकुमार महिंद्रा के प्रेम कथा का बहुत सुन्दर गायन किया है जो यू ट्यूब पर मौजूद है !

इनके अलावा अनेक अनगिनत राज घराने हुए जिनका उल्लेख ख्याती , लेखो में आता है !

गढ़वाल में सदियों से पंवार राजवंश का राज रहा है ! गढवाल के राजा को **“बोलन्दा बद्रीनाथ”** यह उपाधि प्राप्त है ! हिमाचल में राजा जगदेव पंवार को **“धारा वाले देवता”** के रूप में पूजा जाता है और उनके हिमाचल में मन्दिर भी पाए जाते है ! **नेपाल में पंवार राजा धरनीधर** हुए यह बात इतिहास से पता चलती है ! राजपुताना , मरुस्थली में पंवारो के नौ कोट होने का उल्लेख इतिहास में मिलता है ! स्वतंत्रता के पहले तक समूचे मध्य , पश्चिम व् उत्तर भारत, नेपाल , पाकिस्थान में अनेको छोटी बड़ी रियासते व् राज्य पंवारो के थे !

ब्रिटिश शासन तक यह कौम शासक व् युध्द्जिवी थी , जिनके लिए बाद में ब्रिटिश शासन के दौरान खेती के अलावा कोई काम न रह गया ! इस समूह या वंश के कुछ व्यक्तित्व इतने प्रख्यात हुए की उनके नाम सहस्त्राब्दियो से जनमानसके जुबान पर मौजूद है ! महान शासन व् प्राचीन श्रेष्ठतम प्रदर्शन के कारण **“पिरथी बड़ा पंवार”** यह पंवारो के बारे में लोकोक्ति प्रसिध्द है!

<u>**संदर्भ :**</u>

१) लोकहितवादी श्री गोपालराव हरी देशमुख उनकी किताब “ राजस्थानाचा इतिहास” में उज्जयनी के पंवार राजाओ के राजनैतिक सबंध रोम के सम्राट से थे ऐसा लिखते है ! उनकी किताब जेम्स टॉड के लेखो पर आधारित थी ! -

*हिंदुस्थानच्या लोकांचा परमुलखाशीं पूर्वीपासून थोडा बहुत संबंध आणि ओळख असल्यांविषयीं जुन्या ग्रंथांत माहिती मिळते . **उज्जनीचे पंवार राजे** यांनीं रोमचा बादशाह ऑगस्टस् याजकडे व्यापारासंबंधानें तह करण्याकरितां वकील पाठविले होते . एरियन् म्हणून एक यवन (ग्रीक) इ ० स ० २०० मध्ये भडोच येथें रहात असे व त्यावेळी ग्रीक लोकांची , इकडील शोधार्थ खेपा घालण्याची वहिवाट असे . टॉलमी नांवाचा एक भूगोलशास्त्रज्ञ इ ० स ० १०० मध्ये हिंदुस्थानांत* येऊन त्यानें मुंबई , नासिक वगैरे प्रांत टिपून नेले .

---

2)Travels in Western India, Embracing a Visit to the Sacred ... - Page 218 ,James Tod · 1839–

“It was on account of the silk trade that the prince termed Porus , sovereign of Oojein , sent an embassy to Augustus , and a letter written in Greek shows the footing they had in Central India ....”

*“.......I have elsewhere stated my opinion, that the name of one of the oldest and most powerful tribes of India , namely , the Pramara , **pronounced Powár** (sovereigns of Oojein and Dhar from the remotest period)”*

---

3) Annals and Antiquities of Rajasthan, Or the Central and western Rajpoot states of India ...page 213 James Tod · 1829 Volume 1 –

This Porus a corruption of Puar, once the most powerful and conspicuous tribe in India; classically written Pramars, the dynasty which ruled at Oojein for ages.

---

4) Book Early India , A Dynastic Study , Author Mazumdar A K , Voulme 14 (iii) year 1921 –

Page no 659

To defeat the persecuting Jains and Jain non Aryans chiefs , the hindu Rishies and Brahmins made new heroes at Mount Abu . They were heroic , tall and Fair . , they were not true natives of soil. The brahmins even by their best efforts , could not reclaim them from their former manners . I think these new heroes were fire and sun worshipping Persians , so called Agnikula Fire Born Dynasty . Of the 4 lines sprung from the four heroes , the pramara and chauhan were most famed and powerful .

____

5) **French Corsican Book** - DESCRIPTIONHISTORIQUE ET GEOGEAPHIQUE**'D E L I N D E'** author LE PERE JOSEPH ' TIEFFENTHALER, M. ANQUETIL DUPERRON, M. JAQUES RENNELL , M JEAN BERNOULLI , published from Berlin in **year 1786**

Page 353

Dhar ville *6c citadelle, tres bien fortifiee, refidence (autrefois) du Roi Indou Bhodj, de la* ***race de Paunvar****; elle eft fituee fur le Narbada,*

Page 356

De la race de *Pauvâr.*

Adat Pauvâr - -	86 ans.	*Sederu Singh* -	80 ans.
Behram Râdj - -	30 ans.	*Hemrat* - -	100 ans.
At Behram -	90 ans.	*Gandarap* - -	35 ans.

Bicarmàdjit tint ſa cour à *Oudjèn ;* c'eſt à lui que commence l'ére Indienne. Il fut vaincu & tué dans une bàtaille par *Salbhàn* Roi Patane.

	ans.	De la race de *Tſchohan.*	ans.
Bicarmàdjit avoit regné	100		
Tſchandar ſèn regna -	86	*Raja Djagaìdew* - -	10
Kargſèn - -	85	*Gaggr nàth,* fils du frère du préc.	10
Tſchetar còt - -	1	*Hardew* - -	15
Kánec ſen - -	86	*Baſsdew* - -	16
Tſchander màl - -	100	*Siridew* - -	15
Mahender pàl - -	7	*Darmdew* - -	14
Carmtſchand -	1	*Bildew* - -	10
Bedjénand - -	60	*Náikdew* - -	9
Manodj - - -	-	*Tiretdew* - -	11
Bhodj prit les rênes du Gouvernement l'an 541 de l'ére de *Bicarmadjit* & régna -	100	*Pethóra* - -	20
		Máldew - -	9
		Schehſchah - -	70
Djetſchand -	10	*Darmrádj,* de la famille des Rajepoutes appelés *Sud,* gouverna cette province -	20
De la race de *Tauvàr.*			
Djetpàl Tauvar -	5		
Rana Rádjou - -	5	*Alauvuddin,* fils de *Schechſchah*	20
Rana Batſchou -	1	*Camàl uddin,* mahométan -	12
Rana Tſchatſchou -	20	*Hartſchand,* gentil -	20
Rana Tſchandar - -	30	*Djetpàl,* de la race de *Tſchohan*	20
Rana Bahador - -	5	*Kirat tſchand* - -	2
Ray Macmal - -	5	*Agarſen* - -	13
Ray Soganpàl - -	5	*Souradj Nand* - -	12
Ray Kiratpàl - -	5	*Birſen* - -	10
Ray Anècpàl - -	60	*Djelal uddin,* mahométan -	22
Couarpàl - -	1	*Alam Schah,* mahométan -	24

Yy 3 *Karg,*

6) **French Book"JOURNAL ASIATIQUE OU RECUEIL DE MÉMOIRES 1 D'EXTRAITS ET DE NOTICES**" March & April 1854 Published from Paris – page 189 /190

Bhôdja dont il est ici question descendait des Phours, Pauvars (Porus). Le premier roi de cette famille qui régna à Malwa (d'après la liste de Tieffenthaler) serait Adat-Pauvar (Aditya-Paour), qui monta sur le trône 541 ans avant la mort du Vi-

[1] Au vol. IX des *Asiatic researches*.

kramâditya des poëtes, c'est-à-dire précisément la première année de l'ère chrétienne. Il y a sans doute quelque erreur dans cette chronologie; cependant on peut admettre que cet Adat-Pauvar fut le Vikramâditya qui *fonda une ère*, comme on dit dans l'Inde. Cette opinion se rapproche beaucoup de celle qu'a exprimée M. Reinaud dans son savant mémoire sur l'Inde[1]. Si l'on s'en rapporte aux calculs que nous venons d'énoncer, on assigne une date plausible, sinon certaine, à deux des huit princes que l'on a qualifiés dans l'Inde du nom de Vikramâditya[2], pour la plus grande confusion de toutes les chronologies.

Quand la ville d'Oudjaînî cessa d'être la résidence des souverains de Malwa, Dhârâ devint la capitale. Sindhoula, père de Bhôdja, habitait cette dernière ville, que son fils devait rendre si célèbre. Au volume Ier des *Recherches sur l'Inde*[3], il est dit à propos de cette capitale : « Dhâr, ville et citadelle, très-bien fortifiée, résidence (autrefois) du roi indou Bhodja, de la race des Paunvars; elle est située sur la Narbada. » Hamilton (*East India gazetteer*), dont l'ouvrage doit être considéré comme une mine inépuisable de renseignements précis, représente Dhâr ou Dhârâ comme étant bâtie sur le plateau d'une montagne de la chaîne des Vindhyas, à 1,908 pieds au-dessus du niveau de la mer, par les 22°, 25° de latitude nord, 75°, 24° de longitude est. Elle occupait jadis, ajoute-t-il, une

*7)***Book Ancient India as described by Ptolemy , Author Mr J W McCrindle ,** Member of the General Council of the University of Edinburgh , year 1885 .

Page no 165

Saint Martin locates the Porouaroi of the text in the west of Upper India, in the very heart of the Rajput country, though the table would lead us to place them much farther to the east. In the position indicated the name even of the Porouaroi is found almost without alteration in the Purvar of the inscriptions , in the Poravars of the Jain clans , as much as in the designation spread every where of ***Povars and of Pouars*** *, forms variously altered , but still closely approaching the classic Paurava .*

---

8) सन १८४७में श्री Lassen (Christian) जर्मन भाषा में Indische Alterthumskunde नामक एक किताब प्रकाशित करते है उसमे वे पोवार जाती का उल्लेख करते है –

पृष्ठ क्रमांक १४६

gesiedelt worden sind. Ein sicheres Beispiel dieser Art sind die *Bolingai*, deren Indischer Name *Bhaulingi* lautet; ein zweites weniger sicheres Beispiel bieten die *Porvaroi* dar, deren Name an Powar erinnert, wie der Name des Râgaputra-Geschlechts der *Pramâra* in den Volkssprachen umgeändert worden ist. Es ist dabei

English meaning - A sure example of this kind are the Bolingai, whose Indian name is Bhaulingi; a second, less certain example is offered by the ***Porvaroi,*** *whose name was reminiscent of* ***Powar*** *, the name of the* ***Râjputra clan of the Pramara*** *has been changed in the vernacular.*

पृष्ठ क्रमांक १५०

Bandelakhands besessen haben. Von den Porvaroi habe ich schon früher bemerkt, dafs ihr Name höchst wahrscheinlich aus dem bekannten, sich *Prâmârâ* nennenden Geschlechte der Râgaputra entstellt ist, welcher in der Volkssprache *Punvar* lautet und in dieser Form weiter von Prâmâra entfernt ist, als Porvara.[5]) Eine nicht undeutliche Andeutung der Heimath der Porvaroi bietet sich uns dar in dem Namen der Stadt *Porvaghar* oder richtiger *Povargaḍa*, d. h. Wehr der Povar, welche die alte Hauptstadt des Gebietes Ḳampanir's im nördlichen Guzerat war.[6]) Ganz sicher ist die Herkunft der Bolingoi, weil ein altes *Xatrija*-Geschlecht *Bhaulingi* hiefs und zu dem Volke der *Çilva* gehörte, demnach ursprünglich in Unter-Râgasthan zu Hause war.[7]) Nach einer früher vorge-

English meaning --

Of the Porvaroi, I have already remarked that their name is most probably distorted from the well-known Pramára-calling race of the Râjaputra, which in the vernacular is ***Punvar****, and in this form is further removed from Prâmâra than* ***Porvara.****A not indistinct indication of the homeland of the Porvaroi is offered to us in the name of the town of Porvaghar , or more correctly Povargada , i . e .Weir of the* ***Povar****, which was the ancient capital of the region of Campanir in northern Guzerat.*

पृष्ठ क्रमांक 275

schlechtern zugezählt werden können. Die *Porvaroi* wohnten am südlichsten in dem eben bezeichneten Landstriche und ihr Name ist weniger von dem wahren *Frâmâra* entstellt, als der gewöhnliche *Punwar oder Powar.*[1]) Sie stammten höchst wahrscheinlich ab aus dem nördlichsten Guzarat, wo *Powargada*, die Feste der Powar, als ihr Stammsitz gelten kann. Die nordöstlich von den Porvaroi ansäſsigen *Bolingai* hieſsen in den Indischen Schrifen *Bhaulingi* und gehörten zu dem alten *Xatrija* - Geschlechte der *Çâlva*[2]) Da es ursprünglich in Unter-Râgasthan zu Hause war, so müssen die Bolingai später nach O. ausgewandert sein und sich neue Sitze erworben haben.

English meaning

The Porvaroi dwelt most southerly in the region just referred to, and their name is less distorted from the true prámára than the common Punwar or Powar.) They most likely descended from the northernmost Guzarat , where Powargada , the stronghold of the ***Powar*** *which was northeast of the abu , can be considered their ancestral seat. Porvaroi resident Bolingai were called Bhaulingi in Indian scripts and belonged to the ancient kshatriya clan.*

---

9)Robert L. O'Connell द्वारा लिखित **Soul of the Sword: An Illustrated History of Weaponry and Warfare from prehistory to present** इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ७६ में उल्लेख आता है -

Yet, like chariots, what they symbolized and what they could actually accomplish in battle diverged markedly. The reaction of Alexander the Great and his Macedonian army, the first Europeans to encounter elephants in battle, captured both

sides of the great beasts as war machines. The Macedonians' major test with elephants came in 336 B.C, when they invaded the Indus valley and encountered the forces of the ***Pauvara raja*** *(Porus in Greek) commanding a large force, including 200 war elephants. Tactically, the invaders adapted almost immediately creating panic among the animals and gutting them from beneath using sarissas.*

---

१०) फ्रेंच भाषा में लिखित Description historique et géographique De l'Inde- Volume 1 - Page 343 , लेखक Mr Jean Bernoulli, Joseph Tieffenthaller · year 1786 में लिखते है -

LA PROVINCE DE MALVA. 343

Anciennement cette province a été gouvernée par des Rois Indous très puissans, descendans de la race de *Paunvar*; entr'autres par *Bikarmádjit*, qui résidoit à *Oudjèn*, & par *Bhodj* qui demeuroit dans la forteresse de *Dhár*.

पृष्ठ क्रमांक ३५३

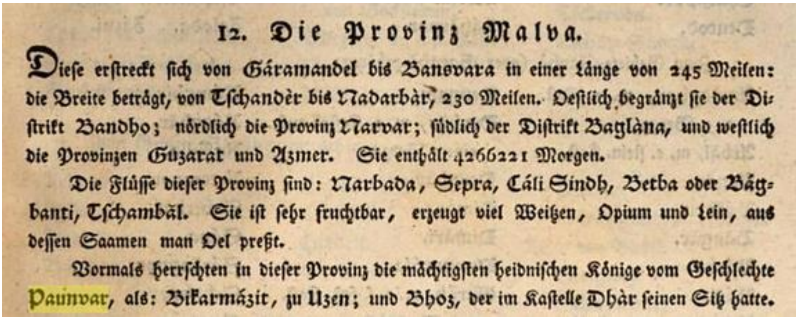
Damóni, forteresse grande & solide, élevée par *Birdjendew* Rajah d'*Ountsch*. Elle est assise sur une petite montagne, & a un large fossé profond de 20 aunes, de fortes tours & murailles.

Dhàr, ville & citadelle, très bien fortifiée, résidence (autrefois) du Roi Indou *Bhodj*, de la race de *Paunvar*; elle est située sur le *Narbada*.

Corvaï, ville & forteresse baignée à l'Ouest par le *Betba* ou *Bagbanti*; distante de *Tschandéri* de 28 milles; vis à vis git la ville de *Bhorassa*, avec une forteresse sur la rive même. A 16 milles de *Sarondj*.

---

११) जर्मन भाषा में Mr Abraham Hyacinth Anquetil-Du-Perron द्वारा · year 1785 में लिखित Historische und chronologische Abhandlungen von Indien und ...इस किताब में वे उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य व् भोज राजा का उल्लेख करते है -



12. Die Provinz Malva.

Diese erstreckt sich von Gáramandel bis Banovara in einer Länge von 245 Meilen: die Breite beträgt, von Tschandèr bis Nadarbàr, 230 Meilen. Oestlich begränzt sie der Distrikt Bandho; nördlich die Provinz Narvar; südlich der Distrikt Baglàna, und westlich die Provinzen Guzarat und Azmer. Sie enthält 4266221 Morgen.

Die Flüsse dieser Provinz sind: Narbada, Sepra, Cáli Sindh, Betba oder Bägbanti, Tschambäl. Sie ist sehr fruchtbar, erzeugt viel Weitzen, Opium und Lein, aus dessen Saamen man Oel preßt.

Vormals herrschten in dieser Provinz die mächtigsten heidnischen Könige vom Geschlechte Paunvar, als: Bikarmázit, zu Uzen; und Bhoz, der im Kastelle Dhàr seinen Sitz hatte.

---

१२) Mr G.I Ascoli द्वारा सन १८७६ लिखित STUDJ CRITICI पृष्ठ क्रमांक २९२ (भाषा इटालियन) में वे लिखते है -

*Narmadă , cui rispondel'dNaudine di Tolomeo . - Della fasedelloschietto re - rmpotrebbeessere un esempionel**πορουάροι**(" Pravara , " Parmara-) di Tolomeo , cheil Lassen riporterebbe a Prämāra ; e a ognimodofarebbero pervda m le forme popolari Punvar **Povar**, nellequalicontinuerebbesi / lo stesso Prämära (Lass . III 146 150 198 465 ; cfr . WEBER , Monatsber . d .preuss .akad .d .wiss .ausdem .j .1871 , p . 625)*

---

13) Edward Balfour द्वारा सन१८५७ में लिखित Cyclopedia of India & Eastern and Southern Asia के पृष्ठ क्रमांक ५४ में श्री एडवर्ड बाल्फोर मरुस्थली में नव कोट यानि नव दुर्गो से पोवारो का शासन होने का जिक्र करते है ! वह कुछ इस प्रकार है --

“This desert has small scattered spots of fertility with great arid portions called t’hul , denoting tracts particularly sterile, and

*therefore the converse of the Oasis of the Greeks and each with a distinct name as the t'hul of Kawur , the t'hul of Goga and others . A tradition exists to the effect that in remote ages **, it was ruled by Powar** or Pramara Rajpoot princes , from nine fortresses , viz . , Poogul , Mundore , Maroo , Aboo , Kheraloo , Parkur , Chotuu, Oomarkot , Arore and Lodorva."*

---

14) श्री जगदेव पंवार इनके बारे में अनेक ख्यातो में , गीतों में , जनकाव्यो में उल्लेख आता है ! उदाहरणत: -

जगदेव पँवार री वात –

*मालवौ देश **धारानगरी** ! तठे **पुंवार उदियादित्य** राजा राज्य करै छै । तिण राजा रे दोय रांणी येक तौ वाघेली । अन बीजी सोलंकणी । तिणा दोयां रे दोइ कुंवर । तिण मैं वाघेली मुद्द पटरांणि तीणरे तौ कुंवर रिणधवल हुओ ....*

संदर्भ : Descriptive catalogue of Bardic & Historical Manuscripts (collected in year 1917)

---

15) Book –**The Unquiet Woods** : Ecological Change and Peasant Resisteance in the Himalaya – Page 64 Author Ramchandra Guha

*Over time, the **Panwar rulers acquired the title of ' Bolanda Badrinath** ', i.e. Speaking Badrinath, or the deity personified. The Garhwal rulers enjoyed the religious title of ' Shri 108 Basdrischarayaparayan Garhraj Mahimahendra, Dharmabaibhav, and Dharma Rakshak Sirmani" a title used as the form of address in all petitions of the Monarch.*

---

16) Book – The Report on the Settlement of the land Revenue of the Sultanpur District , by A F Millett , Year 1873 . Publisher Oudh Governement Press .

Page no 102

Vikramaditya was a Ponwar , a kshattriya *and thus sowed in eastern India , the seeds of a social as well as as religious revolution . He and his army were the prototypes of the remigrant Kshattriyas of Later ages . The Brahmans with cunning ingenuity , brought to bear upon the champions of their faith two of the most powerful influences that can act upon the human mind , patriotism and religion , and the soldiers of Vikramaditya as he marched against Ayodhya was animated with the reflection that he had in view the noble purpose of recovering at once –*

The ashes of his fathers and the temples of his Gods

---

17) Archeological Survey of India – Report of a Tour in Bundelkhand and Malwa 1871-72 and in the Central province 1873-74 , by J D Beglar assistant Archeological Survey under the superintendenceof Major General A Cunningham , Director General , Archeological Survey of India , Volum2 VII , year 1878 , Page 83

Tradition asserts that this temple was built by ***Raja Udayájit of Dháránagar , a Ponwar Rajput ,*** *and it is so far right , as the name of Raja Udayaditya is mentioned in the inscription*

---

18) The Cyclopedia of India and of Eastern & Southern Asia , Third Edition Volume III year 1885 . Author – General Edward Balfour

Page no 350

Agnicula Rajputs *– The four agnicula or Fire Born tribes , the chouhan , Solanki ,* ***Powar or Pramar*** *and the Parihars are now mainly found in the tract from Ujjain to Rewa near Benares . The unnamed progenitors of these races seem to have been invaders who sided with the Bramhans in their warfares , partly with the old khetri, partly with increasing schimatics , and partly with Graeco Bactrians and whose warlike merit as well as timely aid and*

subsequent conformity , got them enrolled them as fire born , in contradistinction to the solar and lunar families and Mount Abu is asserted to be the place of their miraculous birth or appearance. ***Vikramditya , the champion of Brahmanism , according to common accounts was a Powar .***

---

19) Book Himalayan Folklore , first publication 1935 Author Mr E .S. Oakley & T. D . Gairola
Page 118

17. Jagdeo Panwar **(Katyura)**

The Pedigree of Jagdeo Panwar is as follows :
Jaikand Panwar, Maikand Panwar , Daulat Rai , Randhula Panwar and Jagdeo Panwar . Jagdeo Panwar and his Cousin Jaisingh Panwar ruled in Dharanagari .

---

20) Book –Encyclopaedia Metropolitana: Miscellaneous and lexicographical , Author – Edward Smedley, Hugh James Rose, Henry John Rose · year 1845

Page no 678 / 679

Among the most celebrated of the Rajas of malava or Malwah , were those of the Punwar or ***Powar (properly Pramara*** *) family , who with the Chahamana , Parihara and Solanki Branches , all belong to the Agni kula or Descendants of Fire , Royal Race widely spread over Central India and distinct it should seem from the Surya and Chandra Vansas celebrated in Puranas . The Pramaras seem to have been the first who widely extended the power…..*

…. The Pramaras regined at Avanti or Ujjayani , (Ougein) and Vikramditya is reckoned as one of the Princes of their race as well as Bhoja one of the most illustrious of the later Hindu Monarch celebrated for Justice , liberality and the encouragement of learning who Flourished as appears from the inscriptions and other data in the middle of the XIIth Century .

The chief seats of the Pramaras were Avanti and Dhara nagara (Dhar) and their Dominions extended from the Setlej or Garah to the Nermada comprehending all the Central and Western parts of India sometimes called Rajputana . Their territory , a Large part of which was aptly termed Marusthali or Arid Desert , was subdivided into nine Lordships, each named form its strong hold 1) Arbuda or Abu 2) Parkar in the Desert 3) Jalor , 4) Amarkot 5) Mandawar near Jodhpur 6) Pugal north west of Bikaner 7) Khairalu in Guzarat 8) Dhar and Avanti 9) Lodarwa the Capital before Jaselmer was Built .

---

21) **Book "The Origin of Mathematics**"- Author V. Lakshmikantham, S. Leela · year 2000 , Page 24

After the dynasty of Imperial Guptas , the Panwar dynasty came into prominence from 82 B.C. (3020 Kali Era) with the famous emperor Vikramaditya . He conquered all of India as far as Herat and founded Vikrama Era in 57 B.C.

---

22) Book – Indian Eras – By Kota Venkatachelam · year 1956 Page 63 –

Vikramaditya and Salivahana are historical personages and both of them belong to the Panwar dynasty of Agni – vamsa . Of this dynasty , Vikrama was 8th , Salivahana the 11th , and Bhoja the 21st king.

---

23)Book–The Origin of Human Past: Children of Immortal Bliss – Author –V. Lakshmikantham ·Page 107

The Panwar (or Pramara) Dynasty came into prominence from 82 B.C. (Kali Era 3020) with the famous Vikramaditya . He was the son of Gandharvasena , who was the seventh king of Ujjaini belonging to the Panwar Dynasty .

---

24) भोजपुरी भाषा का इतिहास , लेखक रासबिहारी पाण्डेय ,सन १९८६

पृष्ठ क्रमांक १५० -

भोज परमार मालवा के परमार या पँवार वंश का यशस्वी राजा था जिसने १०१८- १०६० ई. तक शासन किया था ! उसकी राजधानी धार थी ! वह बहुमुखी विद्वान था ! उसने संस्कृत छंद , अलंकार , योग शास्त्र , गणित , ज्योतिष तथा वास्तुकला आदि विषयों पर गम्भीर पुस्तके लिखी थी ! उसने भोजपुर में विशाल सरोवर का निर्माण कराया जिसका क्षेत्रफल २५० वर्ग मिल से भी अधिक विस्तृत था !

---

25) Glimpses of Bhartiya History , author Rajendra singh Kushwaha , year 2003

Page no 38

Birth of Vikramaditya Ujjayani (panwar dynasty) 101BC

Page no 183

After the fall of Gupta Empire , the Panwar (Parmar) dynasty rose to the Paramount power of Bharata .

Page 184

The grandson of Vikramaditya , Shalivahana crushed the Shakas .

---

*26)**THE PEOPLE OF INDIA.,** A SERIES Of PHOTOGRAPHIC ILLUSTRATIONS OF THE RACES AND TRIBES OF HINDUSTAN,ORIGINALLY PREPARED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF INDIA, AND REPRODUCED BY ORDER OF THE SECRETARY OF STATE Foll INDIA IN COUNCIL. WITH DESCRIPTIVE LETTER PRESS BY COL. MEADOWS TAYLOR, C.S.L, M.R.A.S., &c. EDITED BY J. FORBES WATSON, A KD., &c SIR JOHN WILLIAM KAYE, K.C.S.I., F.R.S., kc. VOLUME SEVEN. YEAR 1874.—*

PAGE NO 386

This was effected by Rajah Bhoj (the great), who was the eleventh indescent from Vikramaditya, or Vikramjeet, whose era, 56 before Christ, is still current in the Deccan."

Previously, however, Dhar appears to have been held from a vast antiquityby the Puar or ***Powar tribe of Rajpoots****, which is traceable for 1,058 years in its rule over Malwah, of which Dhar or Dharwarra was the capital.*

---

27) Panjab Past and Present, Volume 31, Part 2, Issue 62, Department of Punjab Historical Studies, Punjabi University., 2000 – Punjab (India)

इस किताब के पृष्ठ क्रमांक 42 के अनुसार हिमाचल में बाघल रियासत के राजा जो बघेला है वे राजस्थान के पंवार राजाओ के वंशज है! इस रियासत के राज परिवार के पूर्वज राजा भोज व् राजा विक्रमादित्य से सबंधित थे !

---

28) The Cyclopædia of India and of Eastern and Southern Asia ..., Volume 3, year 1885 ,By Edward Balfour

Page no 350 ---

Agnicula Rajputs.—The four Agnicula or fire-born tribes, the Chauhan, Solanki, Powar or Pramar, and the Parihara, are now mainly found in the tract from Ujjain to Rewa near Benares. The unnamed progenitors of these races seem to have been invaders who sided with the Brahmans in their warfares, partly with the old Khetri, partly with increasing schismatics, and partly with Græco-Bactrians, and whose warlike merit, as well as timely aid and subsequent conformity, got them enrolled as fire-born, in contradistinction to the Solar and Lunar families, and Mount Abu is asserted to be the place of their miraculous birth or appearance. Vikramaditya, the champion of Brahmanism, according to common accounts was a Powar.

पृष्ठ क्रमांक १७१

security to deposit a part of their treasures. The old Rajput family of Umarkot is stated by Tod (Rajasthan, i. pp. 92, 93) to have been Pramar or Powar Rajputs.—*Tod's Rajasthan*, ii. p. 313; *Pottinger's Trs.* p. 401; *Imp. Gaz.*

---

29)**The history of India from remote antiquity to the accession of the Mogul dynasty** , year 1836 By John Clark Marshman — पृष्ठ क्रमांक ५८.

58 HISTORY OF INDIA.

CHAP. V.

VIKRAMADITYA AND SALIVAHUN—DEATH OF SOOMITRA —BIRTH OF CHRIST—SPREAD OF CHRISTIANITY IN INDIA—EMBASSY TO ROME—THE ANDRA KINGS OF MUGUDA—MUHA KURNA—POOLOMA—RAMDEVA—THE ANDRA BHRUTTAS—DESCRIPTION OF THE STATE OF INDIA FROM THE VISHNOO POORAN.

The era of Raja Vikramaditya follows the supposed expulsion of the Boodhists from India. As there are no fewer than eight monarchs to whom this name is applied, it is difficult to identify Vikrama. Every legend, however, agrees in making its Vikrama fall by the hands of a powerful demon, Salivahun. As the king of this name who reigned at Oojein has given birth to an era, it is reasonable to fix on him as the original Vikramaditya, and to apply to him the description which Ferishta has drawn. Vikramaditya was of the Prumura tribe, the name of which has been shortened to *Powar* and *Puar*. The notices of this race, though very indistinct, are sufficient to shew that they bore a wide sway in India, and had reigned at Uvunti, or Oojein, long before the age of Vikrama.

पृष्ठ क्रमांक ६१

minated throughout India, and were artfully incorporated, though in a distorted form, into the Hindoo legends.

About this time, a king of Oojein, who is called by the Greek historian, Porus, an evident corruption of Prumura, or Powar, and who is described as counting six hundred kings among his tributaries, sent an embassy to Augustus, the emperor of Rome. It is not a little singular that the letter sent to Europe by this descendant of Vikramaditya, was written in Greek. This fact proves the wide-diffusion of the Greeks in India, either

---

30) सन १८५७ में फ्रेंच भाषा में लिखित Annales De Philosophie Chretienne Recueil Periodique के पृष्ठ १०६ में श्री बोंनेटी राजा भोज को पौवारा राजा यानी अलेक्ज़ंडर से लड़ने वाला राजा जिसे लोग पोरस कहते है उनका वंशज कहते है !

Page 106 »

Mâlva, par exemple, étaient toujours habités par un peuple courageux et guerrier, et le roi de Mâlva, qui s'appelait alors *Bhôdja*, faisait grand honneur au sang dont on le disait descendre, et qui n'était autre que celui de l'héroïque adversaire d'Alexandre, le râdja *Porus* (Pauvara). Cependant cette descendance a besoin d'être prouvée.

25. Depuis que les rois de *Mâlva* avaient délaissé l'antique

---

३१) सन १९२२ में मेजर जनरल जॉन मेल्कॉम द्वारा ब्रिटिश सरकार को प्रस्तुत की REPORT ON THE PROVINCE OF MALWA ANDADJOINING DISTRICTS में वे पृष्ठ क्रमांक १७/१८/१९ पर लिखते है -

HISTORY OF MALWA.

1st .–*The History of Malwa, like that of the rest of India, is involved in darkness and fable ; but Ougein , which may still , from its superior magnitude, be deemed the Capital of this Province , has perhaps more undoubted claims to remote antiquity than any inhabited city in India ; it being not only mentioned in the Mookundeya Poorana of the Hindus, but in the Periplus of the Erythrian sea , and by PTOLEMY . ' We can trace from Hindu tradition the existence of Malwa as a separate Province , eight hundred and fifty years before the Christian era, wher DUNJEE, to whom a divine origin* is given , restored the power of the Brahmins, which, it is stated , had been destroyed by the Boodhists ;many remains of whose religion are still to be found in this part of India, particularly near Baug , a town sixty – six miles south west of Dhar . In the excavation of the Mountains which are very considerable at that spot, we trace both in the form of the temples, and in that of the figures and symbols which they contain the peculiar characteristics of the Boodh worship.*

2d.–*According to Hindu records, the family of DUNJEE had reigned three hundred and eighty- seven years, when PUTRAJ the fifth in descent dying without issue,* ***Adut Powar*** *(a Rajpoot Prince) ascended theThrone, establishing the* ***Powar dynasty****, which continued upwards of* ***one thousand and fifty – eight*** *years to rule over Malwa*

3d *.–During the period that DUNJEE's family held Malwa, we find no particular mention of them until about seven hundred and thirty years before Christ, when DUNJEE's successor is said to have shaken off his dependance on the sovereign of Dehli . * We lose*

even these indistinct traces of Malwa after the above period , till near our own era, when VICRAMADITYA or VICRAMAJEET, the celebrated son of GUNDUROHUNSenee or GUNDWOH , who married the daughter of the Dhar Rajah, assumed possession of this Province ; and afterwards acquired the general Empire of Hindostan by expelling SHUKADITYA the Kumaon usurper,who had dethroned Rajah Polu , the King of Dehli.

*4th . The early History of VICRAMAJEET, however mixed with fable, merits notice. That Prince was the encourager of learning and the arts ; * he had no estate assigned him by his father, and lived for a considerable time with his illegitimate brother BURTREE at Ougein , their Capital of the kingdom of Malwa , of which BURTREE was Governor. A quarrel however arising between the brothers, VICRAMAJEET left Ougein , and travelled for a considerable period in great poverty over Goojerat, and other parts of India . On his return to Malwa he found, that his brother, disgusted at the infidelity of his wife ,had resigned all wordly concerns , and become a Jogee, or religious Mendicant. He therefore assumed charge of the Kingdom , and from that period gradually established his power over Hindostan . He is described by some writers as having restored the Hindu Monarchy to that splendor which it had lost in consequence of a succession of weak Sovereigns, whose characters had encouraged the Governors of distant Provinces to rebel , and to form the territories committed to their charge in to independent states . It must however be confessed that this account of VICRAMAJEET has as yet been supported by no substantial proof, and many Arguments have been adduced to shew his rule was more limited . His great name and reputation over all India afford however strong ground for believing his power was very extended ..*

***5th .**--- Of the successors of VICRAMAJEET nothing occurs worthy of notice till the eleventh in descent the celebrated Rajah Bhoj (remarkable forthe misfortunes of his youth) changed the seat of Government to Dhar,where it continued, till by the Mohomedan conquest it was transferred to Mandoo .*

6th.–On the death of Jye CHUND, who succeeded Rajah Bhoj, ***none of the Powars** being deemed worthy of the Crown , it was placed on thehead of JEETPAUL, a celebrated Rajpoot Zemindar, who established the Towur dynasty, which lasted one hundred and forty – two years…….*

---

32)The History of India as told by its own Historians , The Muhammadan Period , Author Sir H.M Elliot and Professor John Dowson , year 1867 इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ५५८ व् ५५९ में पोवार राजा विक्रमादित्य व् राजा भोज इनका उल्लेख इसप्रकार आता है–

History of Bikramajit the Just, King of Malwa.- Bikramajit belonged to the tribe of Powar. *His excellent character is apparent in the many stories and takes about him that are current among the Hindus. In his youth he put on the garments of a religious mendicant, and wandered over many countries in the society of devotees, submitting to their discipline.When he reached his fiftieth year, under the guidance of heaven, he placed himself at the head of his army. It was ordained by the Almighty that he should attain a high position, and should rescue God's servants from the violence and oppression of the tyrannical Rais.Day by day his power and prosperity increased, so that in a short time all the territory of Malwa and Nahrwala came into his possession. He spread the shadow of his justice and equity and kindness over the inhabitants of every city, so that violence was repressed, and protection secured. The Hindus believe that he had a fore-knowledge of what would happen to men and that whatever he foretold came to pass without lack or fail. Whatever of good or evil, of benefit or injury, occurred in his dominions during the night, all, without the least exception, became known to him in the morning as clear as the light. Not withstanding his royal station, he associated with his people in the most brotherly way. In his dwelling he had only earthenware vessels and ordinary mats.The city of Ujjain was built in his reign. He also founded the fort of Dhar, and chose it as his place of abode. The temple of Mahakal at Ujjain was built by him, and he made fixed endowments for the Brahmans and jogis whom he appointed to live in that temple, and perform the worship. He passed much of his time in the worship of the creation and in the worship of the Creator (parastish-*

ikhalkwaparastish-ikhalik) . The faith of the people in him is unbounded, and they tell most wonderful and miraculous stories about him. An era of years and months dating from his death is used in documents, and at the time when I Write this, in the year one thousand and fifteen of the Hijra, one thousand six hundred and sixty-three years of this era have elapsed. Raja Bikramajit was a contemporary of Ardashir or according to others, of Shahpur. Towards the end of his reign, a zamimdar of the Dakhin named Salibahan rose in rebellion against him, and a battle was fought between them on the banks of the Nerbadda. Salibahan was victorious, and Bikramajit was killed.There are many statements as to the length of the reign of Bikramajit ; but as none of them are acceptable to reason, nothing is here said about it.For a long time after the death of Bikramajit, the country of Malwa was in a wretched state, and bad no just and liberal ruler. At length a Raja named Bhoj seized the reins of government.

Reign of Raja Bhoj··This Raja also belonged to the tribe of Powar. *In justice and liberality he vied with Bikramajit. He did not do as people usually do at night, but wandered about the city, looking into the circumstances of the poor and needy. His constant anxiety was to better the condition of men. The cities of Ghargun (Gagrun ?) and Bijagar and the town of Hindiya were built in his reign. He was very fond of gathering women together. Twice every year he held a great festival, to which musicians and singers resorted in flocks from all parts of Hindustan. For forty days the amusements were kept up, and nothing went on but dancing, singing, music, and story-telling. In those days, all classes received food and wine and betel from the Court, and at the time of departure each person received a robe and ten miskals of gold. He died after a reign of fifty years.*

---

33) Astrological Magazine, Volume 71, Issues 1-6 पृष्ठ क्रमांक १९० के अनुसार -

*According to the puranas the king who founded Vikram Samvat was given the Vikramaditya by his parents and **he belonged to Panwar Dynasty** also known as the dynasty of Fire (Agni Vamsa)*

---

34) The History of India : Akbarnama of Abu-I-Fazl इस किताब में सर हेनरी मिएर्स इलियट पृष्ठ क्रमांक ३३ व् ३४ में लिखते है -

History of Bikramjit the Just King of Malwa –Bikramjut belonged to the tribe of Powar*. His excellent character is apparent to many stories .*
Reign of Raja Bhoj – This Raja also belonged to Tribe of Powar*. In Justice and liberality he vied with Bikramjeet .*

---

35) Controller print & stationery , Punjab द्वारा सन १९५२ में प्रकाशित डिस्ट्रिक्ट रोहतक के **District Census Hand Books** में **पोवार राजा रोहतास** का उल्लेख आता है जिसमे लिखा है **–**

Rohtak too is a place of antiquity founded , tradition relates by a ***Powar Raja Rohtas*** *and Rebuilt by Prithvi Raj in 1160 ….*

---

36) Gazetteer of the Rawalpindi District 1883 Part II , page 196 –Gazetteer of the Karnal District: 1883 – page 196

Rohatak is a town of great Antiquity , but nothing certain is known of its origin or ancient history , It was held by ***Powar Rajpoots*** *, one of whom ,* ***Raja Rohtas*** *, founded the town of* ***Rohtasgarh*** *, of which the extensive ruins , known also as Kokra Kot …*

---

37) Hariyana Gazetteers Organization, Revenue Department year 2001 द्वारा प्रकाशित Hariyana State Gazetteer के पृष्ठ क्रमांक ४८२ में माहेम नामक शहर बालू नामक पोवार राजा द्वारा बसाने का जिक्र आता है ! किताबमें लिखा मिलता है -

The town of Mahem is said to be have been founded by a local ***Powar Raja*** *named Balu before the time of Prithviraj .*

इसका अर्थ हरियाणामें पोवार राजाओ का शासन था !

---

38) “The inscriptions of Imperial Paramaras, … Paramara Abhilekha Author –Amaracanda Mittala, Lālabhāī Dalapatabhāī Bhāratīya Saṃskr̥ti Vidyāmandira, 1979 – India –page 108 में लिखा मिलता है -

*“जब उसके पुत्र जयचंद्र (जयसिंह) का शासन समाप्त हुआ तब उसका स्थान लेने के लिए **पोंवार (परमार) जाती** में कोई न था ! **पोंवार (परमार) जाती** का जीतपाल (उदयादित्य) , जो एक प्रमुख भूमिस्वामी (सामंत) था , सिंहासन के लिए चुना गया और इस तरह भाग्य के उलटफेरो से अधिश्वरता उसके वंश में चली गयी !” ....*

---

39) हरियाणा साहित्य संस्थान सन १९७९ में प्रकाशित “**कुलियात आर्य मुसाफिर” भाग १,** इस किताब में लेखक इस्लामिक जिल्दो , इतिहास के आधार लिखते है -

*“ इस पत्र को दामिश्क देश के निवासी आन्युकिलस ने अपनी आँखों से देखा है ! उस पत्र में लेखक राजा की राजधानी का नाम उनरेन लिखा हुआ है ! उः स्थान उज्जैन के पश्चिम में है ! **एवं यह भी वास्तविकता है की विक्रमादित्य के वंश में छः सौ राजा थे और उनके राज्य प्रदेश सूबे समझे जाते थे** ! पत्र लेखक ने अपने लिए जो पुरूष शब्द प्रयुक्त किया है , वह राजा की जाती का सूचक शब्द है ! यह निपुर , पुराया या पवारायश शब्द का यूनानी उच्चारण प्रतीत होता है ! ....*

*.... **विक्रमादित्य सन इसवी से ५६ वर्ष पूर्व राज्य सिंहासन पर बैठा था ! वह प्रमार या पंवार वंश में उत्पन्न हुआ था !** (जामे जहां नुमा जिल्द २० , पृष्ठ ८२-८३ सन १८६१ लाहौर)”*

---

40) Gazetteer of Central province year 1867 , part V , *में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है-*

पृष्ठ क्रमांक ३२५

*Nimar is the westernmost district of the Central Provinces. On the east it marches with the Hoshungabad district, the Chota Towa river and its tributary the Gungapat flowing north, and the Golae river flowing south, marking its boundary almost from point to point; on the north it touches the **territories of the Powar of Dhar,***

पृष्ठ क्रमांक ३३३-

"These Buddhist rulers were afterwards subdued by the Brahmins. After that, Maheswur became the capital of the Pramara (now called Puar) kings.

---

41) The Epoch of The Sah Kings of Surashtra , illustrated by their Coins , 15 April 1848 में श्री Edward Thomas लिखते है -

*"From the Great Sovereign himself , the sole Monarch of the entire world ." (J.A. S. B Wathen iv 485) MrWathen adds – "This evidently refers to some one of the **successors of Vikramaditya and Salivahana , the Pramara or Powar kings of Ujjain or Kanouj** ."*

उपर दिए वाक्य सन १८३५ के JOURNAL OF THE ASIATIC SOCIETY. No. 45.—September, 1835 के पृष्ठ क्रमांक ४८५ पर भी मिलते है जो सन ३२८ के गुजरात से मिले शिलालेख से सबंधित है !

---

42)People of India , UttarPradesh Volume 42 Part 3 (year 2005) इस किताब में लेखक K.S Singh , Anthropological Survey of India पृष्ठ क्रमांक १५३० में लिखते है ---

***"Powar is another Thakur group** found in Hardoi district and in the adjoining districts of Sitapur and Shahjahanpur . It is recalled in their oral tradition that they are the descendants of **Vikramaditya who was a noble king of Dharanagari** . The*

forefathers of the present powar community came to Ghatiaghat a place of pilgrimage on the banks of Holy Ganga "

43) HISTORY OF THE RISE OF THE MAHOMEDAN POWER IN INDIA, TILL THE YEAR A.D. 1612 ., TRANSLATED FROM THE ORIGINAL PERSIAN OF MAHOMED KASIM FERISHTA , BY Mr JOHN BRIGGS, M.R.A.S. published from London Year 1829 में पोवार राजा विक्रमादित्य व् पोवार राजा भोज का उल्लेख इस प्रकार है ---

पृष्ठ क्रमांक ७५ व् ७६ -

I now proceed to that of Malwa , and of the celebrated ***Vikramajeet Powar.*** *The history of Vikramajeet, the most illustrious and virtuous sovereign of his age, has been transmitted to posterity in the legends which still remain among his countrymen. It is said that he passed the early part of his life among holy men, affecting poverty, and performing penance. At the age of fifty he assumed the command of an army, and in the course of a few years conquered the whole country of Nehrwala and Malwa, over which he ruled with justice. The Hindoos are of opinion, that he was inspired, and could foretell coming events:He avoided all display of pomp, living in the same manner as his subjects, using earthen utensils instead of gold, and sleeping on a mat instead of a bed. Oojein became well inhabited during his reign, on account of the idol dedicated to Mahkaly which he set up in that city.* ***He also built the fort of Dhar****. From the death of Vikramajeet, the Hindoos date one of their eras, which at the present day is 1663, answering to the year 1015 of the Hijra. He was contemporary with Ardsheer Babegan, and some say with Shahpoor. In the latter end of his reign, Shalivhan, a raja of the Deccan, making war with him, several battles ensued , in the last of which , Vikramajeetlost his kingdom and his life . After his death Malwa long remained in a state of anarchy, till at length Raja Bhoj, setting up pretensions to the throne, assumed the reign of government.* ***Raja Bhoj , also of the tribe of Powar****, followed the stepsof his predecessor Vikramajeet. He founded many towns, among which are those of Kurgone, Beejygur, and Hundia. Twice yearly he kept agreat feast which lasted forty days... ;*

44) उत्तरी भारत का इतिहास ७०० से १२०० तक : एक प्रमाणिक पुस्तक : History of Northen India (१९७१) में लेखक श्री लक्ष्मीकांत मालवीय , प्राधी मालवीय नागपुर शिलालेख में राजा उदयादित्य के संस्कृत उल्लेख का अनुवाद करते है की -

"जब भोज ने इंद्र का बन्धुत्व प्राप्त कर लिया , और राज्य बाढ़ ग्रस्त हो गया था और उसमे सम्राट मग्न हो गया था तब उसका सबंधी उदयादित्य राजा हुआ , उसने पृथ्वी का उध्दार करने में पवित्र वराह की तरह कार्य किया !"

---

45) Rajsthana : JilewarasamskritikevamAithihasikadhyayana Volume 2 में श्री मोहनलाल गुप्ता लिखते है -

"*बीकानेर नगर से डेढ़ की. मी पश्चिमी उत्तरी दिशा में कोलायत पंचायत समिति के बीकमपुर गाव व् गढ़ की स्थापना उज्जैन के वीर **विक्रमादित्य पंवार** ने की*!"

---

46) **Archaeological Survey of India , REPORTOFA TOUR IN EASTERN RAJPUTANAIN1871-72 AND 1872-73.** by **A. C. L. CARLLEYLE,ASSISTANT,** Archaeological SURVEY,UNDER THE SUPERINTENDENCE OFMAJOR-GENERAL A. CUNNINGHAM, C.S.I., C.I.E.,DIRECTOR-GENERAL, ARCHAELOGICAL SURVEY.VOLUME VI में निम्नलिखित उल्लेख आता है -

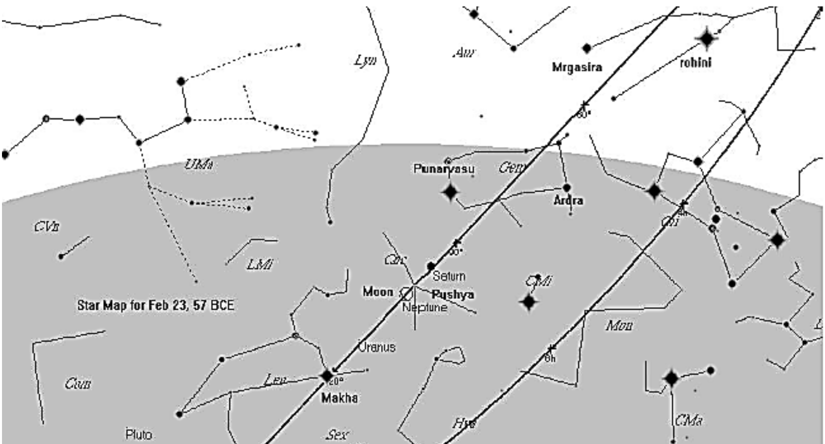
In General Cunningham's account of Amber (Archaeological Report, 1861-65, Vol. II, page 250), he mentions Mandhata as the father of Ambarisha, the founder of Ambarikhanera, or Amber. Again, Tod, in his Rajasthan(Vol. II, pages 598 and 599, "Personal Narrative"), mentions Raja Mandhata as the founder of Heentah and DoondiainMalwa, to the south of Chitor, and he quotes a tradition to the effect that Mandhata planted a colony at Mynar, in theTreta- Yug; and that Raja Mandhata performed the aswamedha sacrifice at Doondia. Tod makes Raja Mandhata to have been of the Pramara tribe. He says :—" Mandhata Raja, a name

immortalized in the topography of these regions,was of the Pramar tribe, and sovereign of Central India,whose capitals were Dhar and Ujjain. There are various spots on the Narbada which perpetuate his name.”

---

47) श्री Kosla Vepa द्वारा लिखित Astronomical Dating of Events & Select Vignettes from IndianHistoryVolume I , पृष्ठ क्रमांक 80 के अनुसार --

The real ***Vikramaditya*** of the ***Vikram saka*** belongs to the **Panwar family**, ruled practically the **whole of India** from ***Ujjain*** and originated the ***Vikram saka*** in 57 BCE He is the celebrated King whose name is referred to in the work of ***Kalidasa.*** According to the ***vansavali*** of Nepal, he conquered Nepal and founded the ***Vikrama*** era in 3044 ***kali*** (57 BCE). Vedavyasa quotes the date of the beginning of the ***Vikram*** era as ***Citra Purnima,*** on February 23, 57 BCE. However, Figure 22 shows the star map for this date and it is not full moon day. The full moon occurredon 27th February, but at ***hasta.***This is in reality an ***adhika masa.*** The ***citra Purnima*** occurred on 28th March, 57 BCE.



---

48) भाषा विभाग हरियाणा द्वारा सन १९७९ प्रकाशित "हरियाणा की उपभाषाए" इस किताब में पृष्ठ क्रमांक ९४ पर रोहितास नामक पोवार राजा का निम्नलिखित उल्लेख आता है -

यद्यपि जिला गज़ेटियर के अनुसार रोहतक अथवा रोहितक पोवार वंशीय राजपूत राजा रोहितास द्वारा बसाया गया था तथा सन ११६० ईसा में पृथ्वीराज ने इसे फिर से बसाया ! तथापि रोहितक नगर अति प्राचीन है !

---

49) डॉ दशरथ शर्मा द्वारा सम्पादित किताब " पंवार वंश दर्पण" जो की सिंढायच दयालदास कृत है , उसमे राजा धरनीवराह द्वारा अपने भाइयो को नव कोट बाट देनेका उल्लेख आता है -

मंडोवर सावंत हुवो अजमेर अजैसू !
गढ़ पुंगल गजवंत हुवो लुद्रवै भाणभू !!
भोजराज धर घाट हुवो हांसू पारक्कर !
अल्ल पल्ल अरबुद्द भोज राजा जालंधर !
नवकोट किराडू संजूगत थिर पंवार हर थप्पिया !
धरणीवराह धर भाईयां कोट वांट जू जू किया !

अध्याय ४- पोवारो का स्थानांतरण

चार देशो में पंवार, पोवार , परमार वंश से सबंधित लोग बसे है परन्तु इस किताब के शीर्षक के मद्देनजर मात्र पोवार या पंवार इस नाम को धारण किये समुदाय का जिक्र यहाँ किया गया है !

अगर हम मात्र पोवार या पंवार नाम से जाने गए समुदाय की बात करे तो मध्य भारत में उनके ३६ कुल है जो अब मात्र ३० के करीब पाए जाते है और वे पश्चिम मालवा से वर्तमान के नागपुर जिले के रामटेक तहसील में स्थित नगरधन यानि प्राचीन नन्दिवर्धन में सन १७०० के दरम्यान स्थानांतरित होने का ब्यौरा मिलता है ! बुजुर्गो से बात करने पर वे बताते है की उनके पूर्वज धारानगरी से इधर आये ! राजा भोज उनके समुदाय के थे ! राजा भोज व् धारानगर से सबंध आने के कारण समस्त वंश के इतिहास का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है !

मालवा में सन १३०० के दरम्यान पंवारो की भारी हार हुयी ! मालवा से पंवार चारो तरफ निकल गए ! जिस समुदाय पर यहाँ लेखन किया गया है वह पोवार या पंवार क्षत्रिय समुदाय धारानगर से पश्चिम की ओर गुजरात व् राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रो में गया! राजपुताना गज़ेटियर के अवलोकन से पता चलता है की पोवार कमसे कम १६६९ तक तो राजपुताना , मारवाड़ , गुजरात , पश्चिम मालवा में थे, उसके बाद वे बुन्देलखंड व् बघेल खंड के क्षेत्रो में आये ! कुछ आगे उत्तरप्रदेश, नेपाल की और भी गये ! वे बुन्देलखण्ड / बघेलखंड क्षेत्रो में एक साथ रहे ! इस नये क्षेत्र का संस्कृति पर, बोली पर असर साफ दीखता है ! वहा से उन्होंने गोंडवाना में आकर बख्त बुलंद को युद्ध में साथ दिया ! गोंड राजाओ द्वारा नगरधन , सानगढ़ , प्रताप गढ़ व् जंगल का क्षेत्र

सन १७०० के दरम्यान उन्हें मिला ! पंवार सरदारो ने किलो को अपने अधीन किया! भाट लोगो की पोथियो में आम्बागड में सेना नायक पंवार सरदार ठाकुर मोतीसिंहप्रसाद इनका उल्लेख मिलता है !

पोवार आजके बालाघाट , सिवनी , गोंदिया , भंडारा आदि जिलो में मुख्यतः बसे हुए पाए जाते है ! पोवारो के कुल नामो पर गौर करे तो यह ३६ कुल पंवार समूह एक क्षत्रिय सैन्य संघ लगता है !

क्षत्रिय पंवार योध्दा अपने परिवारों के साथ जब सन १७०० में आये तो वे नगरधन के किले व् आसपास क्षेत्र में रहे ! वहा से अन्य किले जैसे आम्बागड , सानगड , प्रतापगड , लांजी आदि में गये और वे किलो के आसपास रहे! १७०० के दरम्यान पोवारो के अश्व सेना की संख्या २००० थी ! इस पंवार सेना ने आगे चल के कटक के युध्द में भाग लेकर जीत हासिल की थी , इसका ऐतहासिक रेकॉर्ड्स में जिक्र मिलता है ! अगर हर अश्वारोही योध्दा के परिवार जन ५ माने जाये तो सन १७०० के दरम्यान १०००० लोग तो रहे होगे ! अगले १५ से २० सालो में उधर बुन्देलखण्ड रुके हुए और भी पोवार इस क्षेत्र में स्थानांतरित हुए, कुछ उधर ही रुक गये जो फिर कभी इस समूह से नही जुड़ पाए ! सन १७५० के दरम्यान हुयी कटक की लढाई में जीत के बाद पंवारो को वैनगंगा वाढी का पूर्वी क्षेत्र मिला ! सन १७५० तक अनुमानित पंवार जन संख्या करीब करीब २५ हजार रही होगी ! पोवार नगरधन से पहले वैनगंगा के पूर्व में यानि आजके भंडारा, गोंदिया क्षेत्र में फैले और बादमे १७७० के दरम्यान उत्तर की ओर सिवनी व् बालाघाट जिले में जाकर बसे ऐसा रेकॉर्ड्स से पता चलता है ! सन १८६७ की जन गणना में पोवार मात्र ९१५८६ गिने गए! भारत की जनसंख्या वृध्दि दर के हिसाब से व् ८८० गाव व् अन्य शहरो में बसे पोवारो की संख्या के पैमाने से अब करीब ११

लाख होगे ! सिवनी , बालाघाट , गोंदिया , भंडारा के पोवारो में एक प्रकार की संस्कृति पायी जाती है जो स्थानीय समुदायों से भिन्न है ! पोवारो के एक बोली है जिसे पोवारी कहा जाता है !

सामान्यतः पितृ पक्ष व् मातृ पक्ष भिन्न होने से सांस्कृतिक बदलाव आने लगता हैं यह देखा गया है ! इस कारण पहले समुदाय , रिश्ते व् संस्कृति को टिकाने हेतु समुदायों में ही विवाह होते रहते थे ! मध्य भारत में बालाघाट सिवनी गोंदिया व् भंडारा में स्थित पोवार समुदाय में यह देखा गया की उनके ३६ कुलोमें से किसी भी दो कुलो में ही विवाह सबंध होता था और आज भी वे उसका पालन करते है ! इसका जिक्र इतिहासकार रसेल भी अपनी किताब में करते है ! मध्य भारत के इन जिलो में ऐसा हो पाया क्योंकि ये लोग समूह में रहे ! एकदूसरे से जुड़े रहे! एकत्रित रहे ! वे मालवा से जहा जहा गये वहा समूह में रहे ! इस कारण ये मूलतः पंवार या पोवार नामसे जाने जाते रहे! यानि इनके जाती समुदाय का नाम पोवार या पंवार बना रहा! आज मध्य भारत में करीब १२ लाख लोग है जिनकी मूल जाती या प्रकार पंवार या पोवार है !

पोवार जीवनशैली का अध्ययन करने से पाया की पोवारो की पारम्परिक लोक संस्कृति, बोली के शब्द , पूजा पध्दति , त्यौहार, रीति यह सब स्थानीय क्षेत्र में जो प्रचलित है उससे भिन्न दिखाई पडती है ! इनसे हम स्थानान्तरण के बारे में समझ सकते है !

खानपान –

पोवार करीब ७० साल पहले तक खाने में गेरूका उपयोग करते थे ऐसा बुजुर्ग बताते है ! साग या सब्जी में गेरू का उपयोग स्थानीय लोगो से एक अलग ही परम्परा दिखाई पडती है ! यह गेरू गधो पर लादकर

राजस्थान से मध्य भारत के पोवार बहुल क्षेत्रो में आता था ! यह गेरू राजस्थान से आना उनके पहले के मूल स्थान से संबंध को दर्शाता है !

खानपान में पान बड़े, मांडा रोटी, तेल बड़े, पातर रोटी , लहसुन के पत्तो व् चावल से बनी पतली और कडक रोटिया, सुरण की साग , आटेल , घिवारी, घुइया की खास साग , कोचई बड़ी , मयरी , मालपुआ , अनरसा , कोचई बड़ी आदि विशेष है !

पंवार समुदाय में पहले मांस मटन खाना व् मदिरा पान करने पर कड़े सामाजिक प्रतिबन्ध थे ! गलती करने पर समाज संगठनों की ओर से कडा दंड दिया जाता था ! शराब पिना यानि नीचता समझी जाती थी ! हालाकि स्वतंत्रता के बाद से यह सब बदलते गया !

पूजन पध्दति

पोवारो में इष्ट देवता , कुल देवता होते है , सामान्यतः आदि शक्ति देवी, भगवान शिव , विष्णु , कृष्ण , श्रीराम , गणपति आदि का पूजन होता है ! अलग अलग परिवारों में अलग अलग घरदेवो की संख्या होती है ! ज्यादातर कुलो में सात देव या नौ देव होते है ! इन देवो के नाम उपलब्ध नही हो पाए ! सभी पूजाओ में अग्नि पर नैवेद्य देना अनिवार्य प्रथा है ! पहले के जमाने में भोजन के पहले अग्नि को अन्न समर्पित करना पूजा का एक भाग था !

पोवार परिवारों के पूजा घर में एक चौरी होती है ! यह चौरी यानि मिटटी का त्रिकोनी आकार की पिंड ! जिस के सामने प्रतिदिन दीपक लगाया जाता है ! इस चौरी की मिटटी कितनी पुरानी और कहा की है यह किसीको नही पता ! पोवार जहा जहा गये उन्होंने अपने साथ अपनी

चौरी स्वरुप अपने देवता ले गये ! और आज भी उन्होंने वह पूर्वजो से प्राप्त मिटटी सम्भाल के रखी है !

पूजा घरो में एक मटके में पूजा के चावल होते है जिनको   साल में दो बार देवपूजा के अवसर पर मटके से बाहर निकालकर पूजा जाता है ! उस मटके व् उसमे के चावल को   पूर्वजो का स्वरुप माना जाता है ! यह पूजा के चावल कितने पुराने है यह भी आजकी पीढ़ी को नही पता !

किसीभी पूजन के समय मस्तक पर कोई न कोई कपड़ा रखना आवश्यक होता है   , रोज तुलसी पूजन , देवघर में रोज पूजन करना व् नैवेद्य अर्पित करना , चूल्हे की पूजा करना आदि पोवार संस्कृति का भाग है ! पहले अधिकांश पोवार लोग जनेऊ पहनते थे ! बदलते परिवेश में जनेऊ पहनना अब बंद ही हो गया !

पहनावा

पोवार समुदाय के बुजुर्ग बताते है उनका पहनावा समय के साथ बदल गया पर पहले पुरुष बड़ा फेटा , बाराकसी यानि बारा गाठ वाला कुरता , धोती पहनते थे ! कान में कुंडल या बाली पहनते थे ! जनेऊ पहना जाता था ! चोटी भी रखी जाती थी ! बड़ी मुछे शान समझी जाती थी !

महिलाये हिंदुस्थानी प्रकार की साड़ी पहनती थी ! जैसे जैसे समय व् स्थान बदला पहनावा बदलते गया ! कपड़ो में मामले में सदा बदलाव आते रहा , आज भी बदलाव लगातार जारी है !

त्यौहार

प्रमुख हिन्दू त्यौहार दिवाली के दिन पोवार समुदाय में डोकरी जनाते है यानि दिन में घर के आँगन में करीब चार कोनो में गोबर से कुछ

आकृतिया बनाई जाती है , उनका पूजन होता है ! उनके सामने जलती अग्नि पर नैवेद्य अर्पित किया जाता है ! पोवार समुदाय बड़े बुजुर्ग कहते है किसी देवी स्वरुप पूर्वज स्त्री को पूजा करके नैवेद्य अर्पित करने की रीत यानि डोकरी जनाना है ! यह डोकरी जनाना प्रकार अन्य समुदाय में नही ! खोजने पर पता चला की राजस्थानी करणी माताको डोकरी माता भी कहा जाता है जिनको आज भी पूजा जाता है ! अन्यत्र कही भी डोकरी देवी नही पूजी जाती ! यह डोकरी पूजन पोवारो के इतिहास को उजागर करता है !

पंवारो में एक प्रथा पायी जाती है, वह है **दिवाली के दिन आटे व् गेरू से गायखुरी** चित्र उकेरना ! घर के दरवाजे के सामने , पूजा घर में यह गायखुरी बनाई जाती है ! घर में गाय का अस्तित्व होना शुभ माना जाता है ! यह प्रथा प्राचीन आर्य संस्कृति की दर्शक है !

पोवार समुदाय में नवई पूजा होती है जो एक विशेष बात है ! यह नवई देवी की पूजा माताए अपने बच्चो के लिए करती है !

दिवाली त्यौहार के दरम्यान खेतो में से धान की बालिया काटकर लाते है जिसे चरु कहते है ! फिर उनको हाथो से कूटकर , रगड़कर व् पीसकर उसके आटे से रोटी बनाई जाती है जिसे ईश्वर को अर्पित की जाती है !

पोवारो में दशहरा यह त्यौहार शस्त्र पूजन व् रावण दहन के रूप में मनाया जाता है ! सबसे पहले घर के उपयोगी सभी शस्त्र , वाहन धोकर साफ किये जाते है ! घर के भीतर पूजा घर में उनका पूजन होता है ! फिर घर के सारे पुरुष रावण दहन के लिए गाव के बाहर जाकर रावण के पुतले का दहन करते है ! घर आने के बाद घर की स्त्री रावण दहन करके आये सभीका आरती से स्वागत करती है ! यह सब तो होता है

परन्तु घर में उस दिन मीठा नही बनता जैसे की सभी त्योहारों में बनता है ! दशहरे के दिन मयरी / महेरी बनती है जो चावल, दही से बनी होती है ! एक मिटटी के बर्तन में महेरी को पूजा घर में केले के पत्ते से ढककर रखा जाता है ! उस मयरी के पात्र की पूजा होती है ! और उसके बाद उस पात्र से मयरी लेकर घर के सभी लोग बैठकर मयरी का प्रसाद खाते है ! यह मयरी सिर्फ घर वाले या पोवार रिश्तेदार खा सकते है यह एक विशेष बात ! इसके पीछे कारण रावण की मृत्यु के बाद पूर्वज श्रीराम द्वारा जिसप्रकार भोजन उस दिन खाया गया उसका अनुकरण बताया जाता है ! विशेष बात यह की यह मयरी या महेरी खाद्य प्रकार राजस्थान व् बुन्देलखण्ड में प्रसिध्द है ! हालाकि मध्य भारत में यह सिर्फ पोवारो में प्रचलित है ! इससे यह बात समझ आती है की पोवार बुन्देलखण्ड या बघेलखंड में जरुर रहे है !

पोवार समुदाय में होली को होरी या फाग कहते है ! पोवार समुदाय में करीब १० दिन पहले से रात्रि के चन्द्र प्रकाश में फाग के गीत गायन की प्रथा प्रचलित है ! स्त्रियों के गीत गायन , रात्रि में बच्चो के खेल के रूप में उत्सव की शुरुवात होती है ! होलिका दहन के बाद दुसरे दिन से पांच दिनों तक रंग पंचमी चलती है ! इतने लम्बे समय तक होली मनाना बघेलखंड का प्रभाव दीखता है !

बोली -

मध्य भारतीय पोवारो की विशिष्ट भाषा है, जिसका नाम पोवारी है , लिखित साहित्य बहुत कम है और यह समुदाय द्वारा ही बोली जाने के कारण इस भाषा को बोली कहा जाता है ! **पोवारी बोली** मालवी , राजस्थानी , गुजराती ,पुराणी डिंगल /पिंगल, बुन्देली , बघेली , हिंदी का मिलाजुला स्वरुप है ! वैनगंगा नदी के क्षेत्र में बसे मालवा के प्रमारो

की भाषा पोवारी होने की बात भारत के पहले भाषा सर्वे के लेखक श्री ग्रियर्सन लिखते है !

पोवारी बोली में “है” की बजाये “से” , “हु” के बजाये “सु” गुजराती भाषा से सामीप्य दर्शाता है ! तो भयौ , खायौ , पियौ , करयौ आदि क्रियापद राजस्थानी मालवी सबंध दर्शाते है !

पोवारी संस्कृत से उपजी यह तो स्पष्ट है ! उदाहरण के लिए संस्कृत शब्द मुहूर्त को मोहतुर कहा जाता है ! संस्कृत का एक वाक्य ***त्वं कीं करोषि*** को पोवारी में कहेंगे ***तुमि का करसेव*** ! हालाकि पोवारी पर डिंगल / पिंगल शैली , मालवी , ब्रज शैली का बहुत प्रभाव पाया गया है! समय के साथ हिंदी , उर्दू , अंग्रेजी , मराठी , स्थानीय भाषाओ का काफी प्रभाव पड़ा है ! कुछ शब्द तो पूरी तरह अलग है जो किसी भी भाषा से नही मिलते ! उदाहरण जैसे **चोह्यव नही** यानि दिखा नही !

पोवार पोवारी बोली में सामान्यतः “आमी पोवार आजन” कहते है !

मान्यताये /परम्पराए

पोवार समुदाय में अपने से बड़े बुजुर्गो का बड़ा मान होता है जो की एक सनातन परम्परा व् भारतीय संस्कृति है ! पत्नी अपने पति का , जेठ का , अपने ससुरजी का नाम नही लेती ! जेठ या ससुर कभी बहु के कमरे में नही जाते या बिस्तर पर नही बैठते ! हर त्योहार पर बडो से पैर छुकर आशीर्वाद लिया जाता है , बाहर से आने के बाद बिना हाथ पैर धोये किसीको भी घर के अन्दर प्रवेश की अनुमति नही होती , आये हुए रिश्तेदारों को यथायोग्य अन्न व् वस्त्र देकर सन्मानित किया जाता है! किसीको भी घर से भूखे नही जाने दिया जाता , बडो के सन्मान में विवाहित महिलाये सिर पर पल्ला लेती है , पहले उचे स्थान / पाट /

आलनी पर भोजन की थाली रखकर स्वयम किसी आसन पर बैठकर भोजन करते थे , अब डायनिंग टेबल का उपयोग दिखायी पड़ता है ! बिना नहाये व् पूजन अन्न ग्रहण नही किया जाता , चारपाई पर ही सोने के परम्परा है ! माता पिता की सेवा करना आदि कर्तव्य समझा जाता है! यह सब परम्पराये प्राचीन संस्कृति की झलक है जो आज भी बरकरार है !

सामूहिक भोजन के समय कुल देवताओ को नैवेद्य अर्पित किया जाता है , भोजन के पहले श्लोक कहा जाता था , पंगती में भोजन के दरम्यान जबतक सबका भोजन नही होता तबतक सब रुकते थे जो एकदूसरे के लिए सन्मान की भावना दर्शाता है ! चप्पल जूते घर के अंदर या भोजन स्थल पर लेकर जाना वर्जित होता है ! अथितियो के पैर बाहर धुलाने की प्रथा , अतिथियों को भोजन के लिए पानी ले जाना , प्रत्येक पूजा में निवोद / बिरानी / कागुर जनाना यानि नैवेद्य अर्पित करना , मांगने वाला घर से खाली हाथ न जाये ऐसी भावना होना यह भारतीय संस्कृति का दर्शन पंवार समुदाय में होता है !

पोवार समुदाय से सबंधित कुछ और अवलोकन यहाँ उल्लेखनीय है जैसे बडो का छोटो के प्रति प्रेम , बच्चो का बडो के प्रति सन्मान व प्रेम , माता पिता का अपने बेटीसे पैर न छूने देना , मामा मामी का भांजे के प्रति सन्मान , जानवरो के प्रति प्रेम , शाकाहार को मान्यता , शराब की पाबंदी आदि विशेष है ! आज के जमाने कुछ पुरुष घर से बाहर मांसाहार करते नजर आते है परन्तु उनके घरो में जिस चूल्हे पर पूजा नैवेद्य बनता है, उस चूल्हे पर मांस नही पकाया जाता ! पोवार समुदाय के कार्यक्रमों में , त्योहारोंमें , किसीभी पूजा में मांसाहार पुर्णतः वर्जित होता है ! पोवार समाज जन पहले सिर्फ अपने ही पोवार समुदाय के

लोगो के द्वारा बनाया भोजन ग्रहण करते थे हालाकि अब स्थिति बदल चुकी है ! आज भी गाव में हर किसी पोवार समाज जन के यहा कार्यक्रमो में सब पोवार जनों का सहभाग , सहकार्य होता है ! किसी के मृत्यु के बाद तेरह दिन का क्वारंटाइन समय अनिवार्य होता है ! मृतक के घरवालो को बाजार दिखाने का दस्तूर किया जाता है ताकि वह पुनः रोजमर्रा के जीवन से जुड़ जाये ! जिनके यहाँ मृत्यु हुयी है उनके यहाँ रिश्तेदार चावल दाल लेकर जाते है , मृतक को कोसारा /कपड़े रिश्तेदार देते है , मृत्यु वाले दिन गाव वाले मिलकर खाने की व्यवस्था करते है !

पोवार समुदाय में आदिशक्ति / देवी का पूजन महत्वपूर्ण होता है ! पहले बारिश के दिनों में एक दिन भोजन कक्ष की साफ सफाई हेतु बरामदे में खाना पकाया जाता था ! ग्रामीण पोवार समुदाय में माहिल मामा जैसे शब्द प्रचलित था जो की बुन्देलखण्ड उरई के राजा माहिल परिहार है जिनका उल्लेख आल्हा उद्गलकी कहानियों में आता है !

संस्कृति व् कला

मध्य भारत के भंडारा , गोदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्रो में **"दंडार"** एक नृत्य प्रकार है ! उस नृत्य प्रकार का आयोजन पोवारो द्वारा दीवाली त्यौहार के बाद कुछ दिनों तक बड़े में ही धूमधाम से किया जाता है ! यह नृत्य प्रकार आसपास के जिलो में भी पाया जाता है ! यह पोवारो के कारण प्रचारित हुआ या फिर अन्य समुदायों का अनुकरण पोवारो ने किया यह शोध का विषय है ! परन्तु खास बात यह की इस दंडार नृत्य प्रकार में राधा कृष्ण का रास / राजा राणी का नृत्य होना एक महत्वपूर्ण भाग है ! बहुत सारे अन्य नाट्य प्रकारो (ड्रामा) में भी राजा राणी के पात्र होते थे ! इस सोंग (हिंदी में स्वांग) नामक एक लघु

नाटिका नृत्य के बाद होती है ! यह ढंडार रातभर चलती है ! इन सोंग में ब्रम्हा , गणेश, सरस्वती आदि के सोंगो का मंचन होता है ! डन्डार के सोंग में **भिल्लन सोंग** का होता है !   इस भिल्लन के सोंग में एक भील व्यक्ति बामन (ब्राम्हण) व्यक्ति के यहाँ से कुछ सामान लेकर चले जाता है ! ब्राम्हण अपने मन्त्र तंत्रों से उस भील को अपने समक्ष प्रस्तुत करता है और परन्तु उसके मन्त्र प्रभाव से भील अधमरी अवस्था को प्राप्त होता है ! रात्रि भील वापस घर न आने के कारन भिल्लन मशाल लेकर अपने भील को ढूंढने निकलती है ! वह ब्राम्हण को ढूंढ लेती है और उसको अपने पति को पुनः जीवित करने के लिए मजबूर कर देती है ! भील जीवित होता है और वह सारा सामान ब्राम्हण को वापस करता है और भिल्लन के साथ लौट जाता है ! भील नामक आदिवासी जाती गोंदिया जिले में नही है फिर भी परम्परागत डंडार नृत्य में भील्लन का सोंग होना राजपुताना के सबंध दर्शाता है ! इस ढंडार में गीत भी पोवारी बोली में होते है यह एक विशेष !

कलंगी तुर्रा नामक गायन व् नाट्य प्रकार करीब ३५ साल पहले तक पोवार बहुल क्षेत्रो में आयोजित होता था ! यह कलंगी तुर्रा प्रकार राजस्थानी के ख्याल का एक प्रकार है यह बात गौर करने वाली है ! पोवार सम्भवत: यह शैली अपने साथ ले आये थे !

विवाह सबंधित परम्पराए --

पोवारो में विवाह को बियाह कहा जाता है ! विवाह में एक दस्तूर है जिसमें दूल्हा दुल्हन सात फेरे लेते है जिसको **भावर** कहते है ! - उस समय वे मंगल गीतों के हर पंक्ति के अंत में **धीमहि धी** इस संस्कृत शब्द का उच्चारण करते है ! इसका अर्थ हुआ की मन में ध्यान कर लो

ध्यान ! इसका मतलब मंगल गीतों में दूल्हा दुल्हन को विवाह बंधन व् उसके नियमो को मन में गाठ बांधने कहा जाता है !

विवाह में दूल्हा दुल्हन को **कांकण** बांधा जाता है ! यह कांकण डोर बांधना राजस्थान , बुन्देलखण्ड क्षेत्रो में प्रचलित है !

पोवार समुदाय के विवाह में दूल्हे की बारात जब निकलती है तब दूल्हा माँ से आशीर्वाद लेता है तब उस समय के मंगल गीत में माता अपने बेटे को ससुराल में हर बात का दाम अदा करने का संदेश देती है ! यानि किसी से भी बिना मूल्य चुकाए कुछ भी नही लेना है ! यह सीख बड़ी अनमोल है !

विवाह के मंगल गीतों में ज्यादातर श्रीराम व् देवी सीता का उल्लेख दिखाई पड़ता है ! विवाह के मंगल गीतों में ढाल तलवार , राजकुंवर , अवध यानि अयोध्या, जनक राजा जैसे शब्दों का उल्लेख पूर्व इतिहासको दर्शाता है! विवाह पूर्व बिजोरा नामक दस्तूर में गणावा यानि एक प्रकार श्लोक का उच्चारण किया जाता है जिसमे राजा विक्रम का उल्लेख होता है !

पहले कम उम्र में विवाह होते थे परन्तु लडकी का गौना उसके बालिग होने पर ही किया जाता था ! आजीवन बेटी को मायके से कपड़े दिए जाते है ! बेटी का मायके में बड़ा मान होता है ! ससुराल में पहले बहुओ का स्त्री धन होता था जिसे खमोरा कहते थे जिसपर सिर्फ बहु का ही अधिकार था ! विवाह में दहेज की मांग नही होती ! लडके के परिवार के द्वारा दहेज की मांग होने पर विवाह सबंध तोड़ दिया जाता है ! वधु के परिवार के लोग अपने मन से जरूर भेट देते है जिसे पोवारी में दायजो कहते थे ! वधु अपने ससुराल के रिश्तेदारों व् गाव वालो के लिए भेट

वस्तु लेकर जाती है और ससुराल के लोग वधु को भी भेट देते है ! यह सब इच्छा पर आधारित होता है ! उसके लिए किसी प्रकार की जोर जबरदस्ती या उत्पीडन प्रकार कही नही देखा गया ! विवाह व्यवस्था आदर्श रूप में दिखायी पडती है !

आवासीय प्रकार

पोवारो के बडे हवेलियों को बाड़ा कहा जाता है ! एकरो में फैले बाड़े बहुत भव्य होते थे जो अब कुछ जगह पुराने खंडहर में रूप में   दिखाई पड़ते है , हालाकि कही कही सहेज कर रखे पाए जाते है ! हर गाव में एक भव्य बाड़ा अवश्य होता था जिनके अवशेष अब भी पाए जाते है ! गोंदिया जिले के सालेकसा तहसील में तिरखेडी नामक जमींदारी में कभी हाथी भी था ! करीब सात एकर में भव्य बाड़ा था ! तिन प्रवेश द्वार थे ! कचहरी, करीब ३०० साल पुराणी तिन मंजिल हवेली व् अन्य बड़ी इमारतो का समूह था! जिले के गज़ेटियर में इस जमींदारी का उल्लेख है !

ज्यादातर पंवार सामान्य घरो में सामने एक ईमारत होती है जिसमे मध्य भाग में भव्य दरवाजा /फाटक होती है , फाटक से अन्दर आने के बाद एक ओर जानवरों के लिए व्यवस्था होती है , दूसरी ओर जानवरों के खाने पिने की के व्यवस्था वाला क्षेत्र , बिच में बड़ासा आँगन होता है , मुख्य इमारत में निचला कक्ष , अथिति कक्ष , उपरी कक्ष , मध्य कक्ष , देवघर , शयन कक्ष, भोजन कक्ष , पिछला बरामदा , आँगन, उसके बाद धान्य रखने के कक्ष ,   नहानी घर , एक फाटक और पीछे कुआ बगीचा जिसे बाड़ी कहा जाता है !

डीएनए विश्लेषण

एक पंवार व्यक्ति ने स्वयम की डीएनए जाँच की जिसमे उनका डीएनए सबंध मध्य एशिया, सिंध , राजपुताना व् उत्तर भारत के लोगो से मिला ! यह भी इतिहास के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण वैज्ञानिक विश्लेषण का तरीका है !

कुछ घटनाये भी सुनी जो वीरता को बयान करते है जैसे ठाकुर मोतीसिंहप्रसाद इनके मलपुरी निवासी वंशज शेर से भीड़ गये थे ! कटक की लड़ाई व् पुराने समय में कोई बड़ी लड़ाई की बात बड़े बुजुर्ग बताते थे ! करीब ३० साल पहले तक सभी बाड़ो में घोड़े , तलवारे , भाले, ढाल ,बंदूके , घोड़े की बग्गिया थी जो अब समय के साथ समाप्ति के कगार पर है ! क्षेत्र में पंवारो का विशेष सामाजिक सन्मान , प्रतिष्ठा थी ! भव्य घर जिनको ग्रीन बिल्डिंग कहा जा सकता है वे गिराकर अब कांक्रीट के छोटे घर जो गर्मी को पकड़े रहते है, वे अस्तित्व में आने लगे है ! समय के साथ तेजी से पिछले ६० सालो में अब काफी कुछ बदल गया !

अब ज्यादातर पंवार शहरी जीवन को स्वीकार कर शहरो की ओर स्थानांतरित होने लगे है और उनके पूर्वजो के बसाये गाव वीरान होने लगे है ! यहाँ तक की नयी पीढ़ी अपनी पुरानी संस्कृति भूल चुकी है ! उनकी पुरानी पहचान अब इतिहास के पन्नो तक सिमित है ! नयी पीढ़ी इतना भर जानती है की राजा भोज जिस समुदाय के थे, वे उसी समुदाय के है !

सन्दर्भ :

1) Central Province administrative report 1882-83 , page no. 42 –

“The Powar Caste is chiefly found in the Bhandara , Balaghat, and Seoni”

यह रिपोर्ट बताती है मध्य भारत में पोवार बालाघाट , सिवनी व् भंडारा (१८८२ के समय का भंडारा जिला अब भंडारा व् गोंदिया दो भागो में बंट चूका है) इन जिलो में बसे है !

---

2) Gazetteer of the persian Gulf , Oman and Central Arabia – page 45 by John Gordon Lorimer

Muli –

The state of Kathiawar and is the only Ponwar Chiefship . Ponwars entered the Peninsula about 1470 -75 from the Thar and Parkar under the leadership of Laghdirji .

---

3)Book-Hindu Tribes and Castes, Volume II author M A Sherring , year 1879 ,
Page no 93 -

8-The Powar, Pramara, or Ponwar Tribe.

The Pramara or Ponwar kingdom of Malwa probably extended to the western portion of the Narbuddha Valley, seven or eight hundred years ago. Nagpore was at one time apparently governed by the Pramaras of Dhar.

They are a numerous agricultural people in these provinces. Those by the Wyngunga are supposed to be a branch of the Devanuggur Powars of Malwa, who quitted their country in the reign of the Emperor Aurungzebe. As a reward for assistance rendered to the Bhonslas in an expedition to Cuttack, they received lands to the west of the Wyngunga. They also spread out over the northern part, of the Wyngunga district, in the Pargannahs of Thurorah, Kompta, Langee, and Rampylee ; and over fifty years ago entered the waste lands. The tribe is now in the possession of three hundred and twenty- six villages.

The Powars are exclusively devoted to agriculture, and are described as hard-working and industrious, but, at the same time, deceitful, untrustworthy, and litigious (a).

The Ponwars are by far the most numerous of the Rajpoot race in this tract of India, and form a community not far short of one hundred thousand persons. Forty-five thousand of these are at Bhandara, thirty thousand at Seonee, and nearly fourteen thousand at Balaghat ; the remaining districts possessing very few of the tribe. The Ponwars came from Aialwa to Nundurdhan, near Ramtek, a little more than a hundred years ago. From this place they gradually extended themselves to Ambagarh and Chandpore, east of the Wyngunga. In Seonee they first occupied Largarhi and Partapgarh. They are very successful in clearing the jungle, digging tanks, and making embankments. In the last Census Report of these provinces the Ponwars are classified under the agricultural tribes as distinct from Rajpoots, which is a mistake. They are genuine Rajpoots. They are a very enterprising race. The Ponwars and the Lodhis are the chief colonists in the Balaghat districts.

---

4) Administrative Report Central Provinces, 1882-83 -

Page 42-CENTRAL provinces' ADMINISTRATION REPORT. [1882-83]

Of Hindu castes above listed, the Ganda, Kewat and Panka are special to Chhattisgarh, the Gaur to Sambalpur and its Feudatory States, the Kachhi to the Vindhyan districts, Saugor and Damoh, with the Nerbudda Valley districts and the Mahar to the Nagpur

Valley. The Koshtis also are most abundant in this Valley with overflow into Raipur and Bilaspur. ***The Powar caste is chiefly found in Bhandara, Balaghat and Seoni,*** *and the Gowari in these districts with Nagpur, Wardha andChanda.of other large castes and tribes the following are also special tocertain districts, viz: the Ghosia (34,.31O) to Chhattisgarh, the Dumal(33,983) Kolta (92,827) and Kura (31,644) to Sambalpur with its FeudatoryStates, Dorn (45,345) to Kalahandi, the Kori (48,826) to Jubbulpore,Saugor and Damoh, the Koi (76,148) to Jubbulpore, Mandla andSambalpur with its Feudatory States, the Balalii (45,317) to Hoshangabadand Nimar, the Gujar (44,289) to these districts with Nareinghpur,the Bhil, including Bhilala, (51,916) to Nimar, Hoshangabad and Betuland the Korku (85,438) to these 3 districts with Chhindwara; tho Kiror(40,262) to Narsinghpur, Hoshangabad aud Betul, the Kabia (30,091) toSeoni, Chhindwara and Hoshangabad, the Bhoer (39,840) to Betul,Chhindwara and Wardha, and the Mana (39,454) to Chanda.*

Page 41

No of Powar in 1882 – 1,06,086

---

5) भारत के पहले भाषा सर्वे में श्री गियर्सन सन १९०४ में पृष्ठ क्रमांक १७७ में लिखते है की

पोवारी पोवारो की भाषा है ! जो मूलतः मालवा के प्रमार राजपूत है , मालवा से प्रमार पहले उत्तर भारत की और फैले और उन्होंने व्यापक तौर पर बस्तिया बसायी जो आज हमें वैनगंगा की वादियों में मिलते है ! इस समुदाय के लोगो का परम्परागत निवासस्थान धार है !

(मूल अंग्रेजी लेख का नामो में बदल न करते हुए हिंदी अनुवाद)

---

6)Central Provinces District Gazetteer , Balaghat district Volume A , Descriptive by Mr. C E Low ICS , year 1908

Page 100

The Ponwars or Pramaras as they were called are kshatriyyas in origin . They are said to have ruled in Marwar and Afterwards in Malwa and to have numbered among their caste the famous ruler of Ujjain , Vikramaditya .

Page no 101

Earliest account speaks of them as having been expelled from Dhar in the time of Emperor Aurangzeb and settleing at Nagardhan near Ramtek . Hence they spread over Ambagarh and Chandpur and gradually occupied much of Bhandara , Chanda and Balaghat . As a reward for help given to the Bhonslas in the cuttuck expedition , it is said that they were given waste of the wainganga River . Thence they found their way inti Mau & baihar as already described . The district where they predominate are Seoni , Balaghat , Bhandara , Chanda and Nagpur . in 1901 they numbered in these districts 120818 .

Page 103

Their Caste meetings are presided over by a man called Sendia , a member of the Katra Gotra , the division of the caste to which the Tumsar Sendia belonged. He usually gets a substancial sum of money for presiding at caste feasts and absolving excommunicated parties .

---

7)Central Provinces Census 1872
पृष्ठक्रमांक३८

71. The Ponwars trace their origin to the Rajpoot class of the same name (Pramaras) who were settled in Malwa, but their

appearance in these parts dates from not much more than a Century ago , when they settled at Nagardhan near Ramtek in the Nagpur District. Here they erected a fort and located themselves in numerous villeges, and as time went on they extended themselves over Ambagarh and Chandpur, east of the Wainganga. Some of the members of this caste accompanied Chimaji Bhonsla in the Cuttack expedition, and on their return received as a reward for their services lands in Lanji and other tracts to the west of the Wainganga in the Balaghat district. In the Seoni district the Ponwars came first to Sangarhi and Partapgarb, and ultimately into Katangi, re- cently transferred from Seoni to Balaghat. The Ponwars are an agricultural class, chiefly growing rice, and are a very enterprising race.

---

८) भंडारा गज़ेटियर में पोवारो का उल्लेख मिलता है की –

पृष्ठ क्रमांक २०१

पोंवार मूल रूप से मालवा के थे। पोंवारवंश ने 9वीं से 18वीं शताब्दी तक मालवा में शासन किया। बारहवीं शताब्दी में नागपुर को मालवा साम्राज्य में शामिल किया गया था और पोंवारों की पहली बसावट को शायद इसी अवधि के लिए ठहराया जा सकता है। वे स्वयं कहते हैं कि वे मूल रूप से रामटेक के निकट नगरधन आए और फिर आसपास के देश में फैल गए। जाति के सबसे प्रभावशाली सदस्यों में से कुछ चिमनाजी भोसले के साथ उनके कटक अभियान पर गए थे और उनकी वापसी पर लांजी और वैनगंगा नदी के पश्चिम में अन्य इलाकों की भूमि मिली थी , जो बड़े पैमाने पर जंगलों से आच्छादित थी !

पृष्ठ क्रमांक २०२

पोंवार कभी भोजन की थाली को निचे जमीन पर नही रखते बल्कि लोहे के स्टैंड पर रखकर खाना खाते है !

---

9)The Cyclopædia of India and of Eastern and Southern Asia ..., Volume 2, year 1885 , By Edward Balfour

Page no 294

Number of Powars in British India as per census in year 1881 was 106081

---

10) Rajputana Gazetteer Volume 2 **के पृष्ठ ३५ में लिखा मिलता है -**

"In the time of Akbar , Raja Bital Das founded the town of Rajgarh , and called it after the name of his grandson Raj Singh . The Son of the latter took Srinagar from the ***Powar Rajputs*** *who have disappeared from the district."*

इससे यह पता चलता है की अकबर के समय राजस्थान के मारवाड़ , जुनिया , सरवाड, देवलिया व् आसपास के क्षेत्रो में पोवारो का राज था जो अब वहा से पूरी तरह निकल गए ! अकबर करीब १६०५ तक जीवित था ! अकबर के ज़माने में राजा विठठल दास थे , उनके पौत्र ने वह क्षेत्र पोवारो से लिया यानि राजा विठठल दास के करीब ५० साल बाद यानि १६६५ के दरम्यान ! यही वह समय था जब पोवार मध्य भारत की और आये ! वे करीब ३५ साल बुन्देल खंड व् बघेलखंड के सीमावर्ती इलाको में रहे ! इन दस्तावेजो में पोवारो के बारे में स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है जिससे स्थानान्तरण का समय समझ आता है ! पोवारो की बोली में मालवी राजस्थानी गुजराती क्रियापद इसी कारण दिखाई पड़ते है ! वे प्राचीन समय से गुजरात व् राजस्थान क्षेत्र में रहे है यह निष्कर्ष निकल आता है !

---

११) सन १८६७ के Gazetteer of Central province में जिला गोंदिया के तिरखेडीके पोवार जमींदारो का उल्लेख आता है -

तिरखेडी – मलपूरी --

Seven villages form this estate. The area is about 15 square miles, of which 4 are under cultivation; 469 houses have been constructed on the estate, which are inhabited by a population of 1,351 souls. The holder is assessed with a revenue of Rs. 350. The present family is said to have obtained possession of the estate in ***A. D. 1815****from Rajah Rughojee II., of Nagpore. The original Grantee was* ***Pandoo Patel, who was a Powar by caste****. estate. His son Kurnoo now holds the Estate . The nature of this tenure, owing to the absence of documentary evidence, is not clear. Terkheree is situated to the east of the KamptaPergunnah, near the eastern boundary of the district and Mulpoorée to the west of the KamptaPorgunnah at the point where the Sahanguree and TiroraPergunnahs meet it*

---

१२) Report on the Census of the Central Provinces 1866 Volume 1-3 में पोवारो का उल्लेख कुछ इस प्रकार आता है -

पृष्ठ क्रमांक १५

No of Powars -- 91586

पृष्ठ क्रमांक १६

Powars are a clan *of landholders and farmers who hold the best rice-lands of the upper valley of the Wyngunga.****Emigrating about a century ago from that part of Malwa where a prince called "the Powar of Dhar" bears sway, they settled in the Bhundara district, and thence spread into the Kuttungee valley*****.**

---

13) ANNALS AND ANTIQUITIESOFRAJASTHANOR, THE CENTRAL AND WESTERNRAJPOOT STATES OF INDIABY**Lieut. -Col. JAMES TOD(**POLITICAL AGENT TO THE

WESTERN RAJPOOT STATES) इस किताब में पोवारो का उल्लेख कुछ इस प्रकार आता है –

पृष्ठ क्रमांक १६६

The vestiges of large towns, now buried in the sands, confirmthe truth of this tradition, and several of them claim a high antiquity;such as the Rung-mahel, already mentioned, west of Bhutnair, havingsubterranean apartments still in good preservation. An aged native of Dhandoosir (twenty-five miles south of Bhutnair) replied, to my inquiry as to the recollections attached to this place, that " it belonged to a Powar prince who ruled once all these regions, when Sekunder Roomi attacked them."

पृष्ठक्रमांक१६७

Phoolra and Marote have still some importance : the first is veryancient, and enumerated amongst the ***' No-koti Maroo-ca,'*** *in the earliestperiods of* ***Pramara (vulg. Powar) dominion****. I have no doubt that inscription in the ornamental nail-headed character belonging to the Jains will be found here, having obtained one from Lodorva in the desert, which has been a ruin for nine centuries. Phoolra was the residence of Lakha Phoolani, a name well known to those versed in the old traditions of the desert. He was cotemporary with Sid Rae of Anhulwarra, and UdyaditofDhar.*

पृष्ठ क्रमांक २३४

We may here repeat the tradition illustrating the geography of thedesert, i.e. that in remote ages it was ruled by **princes of the Powar (Pramara) race**, which the sloca, or verse of the bard, recording the names ofthe nine fortresses (No-kotiMaroo-ca), so admirably adapted by theirposition to maintain these regions in subjection, further corroborates. Weshall divest it of its metrical form, and begin with Poogul, to the north ;Mundore, in the centre of all Maroo ;Aboo, Kheraloo, and Parkur, to thesouth ;Chotun,

Omurkote, Arore, and Lodorva, to the west ; the possessionof which assuredly marks the sovereignty of the desert. The antiquity of this legend is supported by the omission of all modern cities, the presentcapital of the Bhattis not being mentioned. Even Lodorva and Arore,cities for ages in ruins, are names known only to a few who frequent thedesert ; and Chotun and Kheraloo, but for the traditional stanzas whichexcited our research, might never have appeared on the map.

---

14)Ethnological Report Nagpur year 1868 में सिवनी क्षेत्रमें बसे पोवारोका उल्लेख इस प्रकार है –

<u>पृष्ठक्रमांक २</u>

We have therefore ventured to exclude from our analysis all accounts of races or castes which are mere immigrants into these Provinces, and which have a general history perfectly well known elsewhere, such as Rajpoots and Brahmins, whose history belongs not at all to these Provinces. We have even omitted mention of such colonies as that of the ***Powars in Bhundara and Seonee****, or the Kohrees in Bhundara and Chanda, because, though these offshoots are now quite separate from the main stock, yet we believe that there is no doubt that the* ***Powars are direct descendants from the Rajpoots of Daranuggur,*** *and we understand that the Kohrees belong to a tribe very well known in the south.*

<u>पृष्ठ क्रमांक 50</u>

Ponwars

These assert that they came from DharaNuggur, near Oojein; their ancestors being expelled thence in thereign of Aurungzebe. The cause is not known. They avowthemselves then to have been Rajpoots, wearing the janeo,or Brahminical thread, which has been

dropped since theyhave taken entirely to cultivating pursuits. To these theyare now confined. They say they first settled at Nuggerdhun, near Ramtek, where they built a fort; thence at Sanghurree in the Bhundara district, whence they dispersed intoChanda and Bhundara, and eventually into Kerowla of Kuttunghee. They are now tending to the north, and are valuableas generally men of substance and first class cultivators.

***They have 30 divisions** :—*

1 Putuleea.2 Rayhigdala.3 Chowdree.4 Pudhar.5 Termurreea. 6 Pardhee '7 Gotum. 8 Chohan.9 Hurniukurria 10 Thakoor.11 Bhugut.12 Cheersagur.13 Aida. 14 Pond. 15 Rana. 16 Katra.17 Saindhia.18 Baisun.19 Toork.2O Surnagut.. 21 Sonwaneea 22 Saihur.23 Bhugla.. 24. Koleea.25 Bobecheea.26 Rawut.27 Bhurum.28 Sutteebugut.29 Bhorbugut.30 Jytwar.

CHARACTERISTICS.

***The Ponwars are generally fair, and nice looking**; most often wear a bracelet of a peculiar shape, but this is not indispensable; invariably wear turbans, but not distinctive ones. **From physical conformation and general appearance, are recognizable as Ponwars at once**; rarely or never mount a horse. There is not, it is said, a single Ponwar, rich or poor,who has not a little temple for his favourite god in his own house. In changing from one house to another, the god is always removed. They worship Bhugwan, Mahadeo, Debee and DoolaDeo.*

Their language savours most of the Oordoo, but they have adopted or corrupted words from the Gondee and Mahrattee dialects.

All their ceremonies and Observances assimilate to those of other Hindoos, but a widow can remarry irrespective of the wishes of her relations, though the new husband must give a feast before they would be associated with.

They have a more than ordinary abhorrence of defilation by shoes, not at all confined to a carpet. A shoe worn inside a house is defilement under any circumstances; even if worn in an upper story or thrown on to the top of a house, the lower story would be defiled.

A bed slept on by a son and his wife, or by a daughter and her husband, is impure to the father; one slept on by a younger brother and his wife, or a sister and her husband, is impure to the elder brother.

Excepting a casual mention of them at page 36 of Mr. Jenkins' report on Nagpore, I can find no other in any book at my disposal; but in Shakespear's dictionary I find the words ***" Ponwar—a tribe of Rajpoots."*** *Such they, no doubt, were ; and though such no longer, they must here be considered as a decidedly distinct tribe or race.*

---

15) Reporton the Territories of The Raja of Nagpore submitted to the Supreme Government of India in Year 1827 By **RICHARD JENKINS**, Esq. Resident of the Court of his Highness the Raja of Nagpore printed at Calcutta from the GOVERNMENT GAZETTE PRESS, BY G, H, HUTTMANN.के अनुसार ---

"*All the cultivating classes were established in Deogurh previously to the Marhatta conquest. The four classes of* ***Kshatriya cultivators*** *came originally from Hindoostan during the reign of Bukht Boolund. The most numerous of these classes, are Lodees, great numbers of whom are settled in the districts on the Wynegunga. Another class,* ***the Powars, are also established in the same quarter. They say their ancestors were expelled from Dhar, in Malwa, in the reign of Aurengzebe."***

---

16) The Gazetteer of the Central Province of India , edited by Charles Grant ESQ में जो पंवारो का उल्लेख आता है वह इस प्रकारहै -

पृष्ठ क्रमांक १२६

It would seem indeed as if the stronger race had rolled back the weaker one on their common meeting ground. Though for hundreds of years no Rajput king had held sway in Central Gondwana, while every part of it had been subject to the Marathas, ***there are whole colonies of Ponwars, Lodhis, and other northern tribes in the Nagpur plain,*** *and the Hindi language is understood throughout it, while above the ghats Maratha would be of very little assistance to a traveller out of the larger towns. The predominance of the northern races may, perhaps, be referred to that seeming law of Indian population which directs the course of immigration from north to south*

पृष्ठ क्रमांक २० व् २१

" **Of all the people who have gone above the ghats these Ponwars promise to be the most valuable and successful.** Wherever men of this classhave taken up land they have set to work in earnest in embanking up their fields and constructing tanks. In many places where they have settled down, where never sod was turned before, may now be seen fields covering many acres, with their embankments (bandis) three and four feet high, and everything ready for the rains now commencing.

" The Ponwars and other settlers have perhaps done much, considering the fewness of their numbers and the recentness of their arrival; but their example lias, I believe, done more. The former inhabitants of the tracts seem now to have realized the fact that formidable competitors for the rich lands around them are daily becoming more numerous, and they no longer imagine that they alone are the occupiers of the soil. Gonds and others who were formerly satisfied with their rough and shifting cultivation, now vie with each other in raising embankments round their fields, and in

constructing tanks where nothing of the kind before existed."

This is only a beginning, but it is regarded as promising by those who know the country. Special causes have been at work during the two years, for which this district has existed, to check immigration, in addition to the ordinary obstacles arising from absence of enterprise among the people.

---

17) सन १८७२ में प्रकाशित किताब Various Census of India me पंवारो का उल्लेख इस प्रकार आता है --

पृष्ठ क्रमांक ३८

71. The Ponwars trace their origin to tho Rajput class of the same name (Pramaras) who were settled in Malwa, but their first appearance in these parts dates from not much more than a century ago, when they settled at Nandardhan near Ramtek in the Nagpur district. Here theyerected a fort and located themselves in numerous villages, and as time went on they extended themselves over Ambagarh and Chandpur, east of the Waiuganga.Some of the members of this caste accompanied Chitnaji Bhonsla in the Cuttack expedition, and on their return received as a reward for their services lands in Lanji and other tracts to the west of the Wainganga in the Balaghat district. In the Seoni district the Ponwars came first to Sangarhi and Partapgarh, and ultimately into Katangi, recently transferred from Seoni to Balaghat. The Ponwars are an agricultural class, chiefly growing rice, and are a very enterprising race. It is chiefly through them and the Lodhis that the work of colonising the Balaghat district is going on.

Population of ponwars

Bhandara - 45404

Seoni - 30305

Balaghat - 13906

और बाकि ३३३८ पंवार ब्रिटिश राज्य के बाकि जिलो में थे ! उस समय का भंडारा यानि आज का भंडारा + गोंदिया था !

जिलो के अनुसार संख्या आगे के विवरण में दी गयी है -

No. VB.—Statement of Nationalities,

ASIA

NATIVES

HIN

SU

Division.	District.	Ponwar. Males. Adults.	Ponwar. Males. Children.	Ponwar. Females. Adults.	Ponwar. Females. Children.	Ponwar. Total.	Gujar. Males. Adults.	Gujar. Males. Children.	Gujar. Females. Adults.	Gujar. Females. Children.	Gujar. Total.
		62					63				
Nagpur.	Nagpur	662	76	207	58	1,003	71	26	77	31	205
	Bhandara	12,731	9,358	14,153	9,162	45,404	77	34	83	41	235
	Chanda	92	45	105	41	283	5	2	4	..	11
	Wardha	106	59	107	49	321	44	21	40	12	117
	Balaghat	4,009	2,925	4,185	2,787	13 906	7	2	7	3	19
	Divisional Total ...	17,600	12,463	18,757	12,097	60,917	204	85	211	87	587
Jabalpur.	Jabalpur	9	2	5	...	16	83	43	74	35	235
	Sagar	48	22	43	31	144	135	59	86	43	323
	Damoh	13	9	15	9	46	30	8	19	13	70
	Seoni	8,852	6,283	9,168	6,002	30,305	22	16	19	15	72
	Mandla	12	6	6	5	29	3	...	...	...	3
	Divisional Total ...	8,934	6,322	9,237	6,047	30,540	273	126	198	106	703
Narbada.	Betul	2	...	...	...	2	8	...	1	...	9
	Chhindwara	29	10	24	13	76	169	137	179	155	640
	Hoshangabad	17	13	16	7	53	8,089	4,845	7,525	4,300	24,759
	1 Feudatory State	2	3	4	3	12	120	60	105	44	329
	Total	19	16	20	10	65	8,209	4,905	7,630	4,344	25,088
	Narsinghpur	241	27	115	22	405	1,389	846	1,338	747	4,320
	Nimar	69	16	41	22	148	4,215	2,380	4,020	2,217	12,832
	Total Khalsa ..	358	66	196	64	684	13,870	8,208	13,063	7,419	42,560
	Total Feudatory ...	2	3	4	3	12	120	60	105	44	329
	Divisional Total ...	360	69	200	67	696	13,990	8,268	13,168	7,463	42,889
Chhattisgarh.	Raipur	63	48	49	34	194	25	23	31	15	94
	4 Feudatory States	40	30	30	18	118	26	22	19	18	85
	Total ...	103	78	79	52	312	51	45	50	33	179
	Bilaspur	162	136	180	140	618	2	1	3	5	11
	2 Feudatory States	1	1	1	...	3	30	21	30	25	106
	Total ...	163	137	181	140	621	32	22	33	30	117
	Total Khalsa ...	225	184	229	174	812	27	24	34	20	105
	Total Feudatory ...	41	31	31	18	121	56	43	49	43	191
	Divisional Total ..	266	215	260	192	933	83	67	83	63	296
	Upper Godavari District ...	...	...	...	...	...	70	42	66	45	223
	1 Feudatory State	...	...	...	...	...	...	...	..	..	...
	Total ...	...	...	...	...	...	70	42	66	45	223
	Grand Total British Territory.	27,117	19,035	28,419	18,382	92,953	14,444	8,485	13,572	7,677	44,178
	Grand Total Feudatory States.	43	34	35	21	133	176	103	154	87	520
	Provincial Total ..	27,160	19,069	28,454	18,403	93,086	14,620	8,588	13,726	7,764	44,698

---

१८) सन १८९१ के Census of India Volume XII , The central Province and Feudatories part II Imperial Tables and

Supplementary Returns इस शासकीय रेकॉर्ड के किताब के पृष्ठ क्रमांक १०८ में श्री बी . रोबर्टसन (Indian Civil Services Provincial Superintendent of Census Operations) पोवारो का उल्लेख करते है जिसमे वे पोवारो को प्रमुख व् सैन्य समूह होने की बारे में लिखते है !

---

19) **Census of India 1891** ,Volume XI , **The central Province and Feudatories part 1** , The REPORT by **B Robertson** of the Indian Civil Service Provincial Superintendent of Census Operations के पृष्ठ १६५ व् १६६ में पोवारो का उल्लेख इस प्रकार आता है --

"Without distinguishing between the varying elements that compose the caste, we find it to be most strongly represented in the lower parts of the Nerbada valley, Hoshangabad, and Nimar, in the ***Seoni*** *district on the Satpura plateau, and in* ***Bhandara and Balaghat*** *in the Maratha country. In the* ***three latter districts*** *the preponderance of the caste is due to the* ***presence of the Powars,*** *by far the* ***largest section of the Rajputs*** *in these parts.* ***The Powars trace their origin to the Pramaras of Malwa,*** *whence the members of the caste have spread over Northern India and* ***in later times formed the extensive colonies which we find in the Wainganga valley at the present day.***

In the ***northern districts of the Province*** *it is probable that the* ***Powars are offshoots from the settlements in Upper India,but in the Nagpur country and on the Satpuras the Powars are immigrants of a later period from Dhar in Central India, which is the traditional home of the tribe****. Their first appearance in these parts was at Nandardhan near Ramtek, in the Nagpur district, where theybuilt a fort and settled several villages, and whence as time went on they spread themselves to the east of the Wainganga. Some of the more influential membersof the caste accompanied Chimnaji Bhonsla in the Cuttack expedition,and on their return were given lands inthe low lands of the present districts*

of Bhandara and Balaghat. From here about the commencement of the present century they first set out to people the waste lands above the ghats, where they have all along been among the most successful of the settlers who have helpedto reclaim these wilds." Regarding them the writer of the Seoni Settlement Report has noted :—

*" As agriculturists this class ranks high, and **their cultivation** may almost be termed **scientific.** From long practice they have acquired great skill in the arrangement of irrigation works and an extraordinary eye for the levels of the country over which water for irrigation is led for miles by them. They have also unusual aptitude for the management of the aboriginal classes, through whose agency they get the whole of their rough work of cultivating and clearing jungles and making the commencement of irrigation works effected. Their capabilities are proved by what they have effected within a century in Katangi —now part of Balaghat—and in the eastern portions of the Seoni tehsil. In respect of their energy and enterprise they are interesting, but from their litigious tricky habits and servile manners, and their close illiberal dispositions, they are not pleasant to deal with. They are almost all well-to-do, and mostly carry on money dealings chiefly with their tenants and servants."*

The distribution of the Powars in the three districts of the upper Wainganga valley is worth noting; they occur, it will be seen, all over Balaghat, but in Seoni they are confined to the southern portion of the district, and in Bhandara to the northern tehsil.

*As per Table **in 1891 ,Powar population in central province**was 128158 .*

No of Powars :

Seoni – Seoni - 16665 nos
Lakhnadon – 46 nos
Balaghat - Burha – 34415 nos
Baihar - 6830 nos
Bhandara – Tirora – 52343 nos

Bhandara – 8730 nos
Sakoli - 2480 nos

---

20)श्रीमती इरावती कर्वे व् विष्णु महादेव दांडेकर इनकी किताब Anthropometric Measurements of Mahārāṣhṭra - Page 37 में लिखते है –

Powar (also called Panwar ,Puar ,Ponwar and Parmara Rajpoots) .

व् सन १९६८ के Maharashtra State Gazetteers: General Series: Maharashtra**,** पृष्ठ क्रमांक ३४ में लिखा मिलता है --

The Powar or Paramara is one of the most ancient and famous of Rajput clans .The kings of Malwa from the nineth to the twelfth century belong to this clan . Their capital was Dhar and even now all Powars claim to have come from Dhar ...One branch of the clan came to Nagpur .

अध्याय ५- मध्य भारतीय ३६ कुल

सन १७०० के दरम्यान पश्चिम मालवा से एक बड़ा सैन्य समूह नागपुर जिले में रामटेक के समीप नगरधन किले में आकर रुका और वहासे पंवार आजके जिले जैसे गोंदिया , सिवनी , भंडारा, बालाघाट में जा बसे ! पंवारो के मात्र ३६ कुल होने की बात बड़े बुजुर्ग बताते है ! हालाकि अब मात्र ३० के करीब कुल पाए जा रहे है ! ३६ कुलो की जानकारी निम्नलिखित है --

१) अम्बुले / अमुले -

पोवारी भाषा में इस कुल अम्बुल्या यानी **अम्बुलिया** कहा जाता था ! पंवार बुजुर्ग इस कुल नाम का अर्थ जलधारी , जल से उत्पन्न , जलके समीप रहनेवाला ,कमल रूप सुन्दर व्यक्ति कहते है ! सभवत: वे संस्कृत शब्द अम्बुज यानि कमल से इसका सबंध जोड़ते है !

“Encyclopedia: Aa-gyro” इस किताब में पृष्ठ क्रमांक ७८ पर श्री जेम्स गार्डनर अम्बुलिया का अर्थ -a Surname under which the Spartans worshipped Athena इस प्रकार बताते है ! ग्रीक देवी देवताओ पूजन करनेवाले यह नाम धारण करते थे ! प्राचीन ग्रीक कुलनाम से पंवारो के इस कुलनाम की साम्यता दिखाई पडती है !

हालाकि यह कुल उन पोवारो का है जो आबू से आये ! जिन्हें पहले **आबुवाले** कहा जाता रहा होगा जो बाद में अपभ्रंश होकर आम्बुले अम्बुले हो गया !

२) कटरे -कटरा (देशमुख भी लिखते है महाराष्ट्र में) -

इनको सेंडिया भी कहा गया है ! सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ४०८ पर सेंडिया यह पंवार राजपूतो का एक उपाधि जो जाती के मुखिया की होती है !

इतिहासकार रसेल कटरे नामक कुल का उल्लेख भी करते है जो सनाढ्य ब्राम्हणों का कुल है ! सेंडिया और सनाढ्य ब्राम्हणों का एक कुल कटरे होना यह एक योगायोग है या इसके पीछे कुछ इतिहास होगा यह विचार आता है ! खास बात यह की जाती के किसी व्यक्ति द्वारा गलती करने पर उनको शुध्द करने का अधिकार कटरे यानि सेंडिया पंवारो को था ! सेंडिया का अर्थ मुख्य या शीर्ष बताया जाता है ! कुछ कटरे परिवारों को देशमुख यह पदवी भी मिली हुयी है ! इसलिए कुछ लोग देशमुख कुल भी लिखते है !

भाट कटरा कुल को **काठी क्षत्रिय** कहते है ! कटरिया / कटरा इस प्रकार का सम्बोधन पहले होता था ! अब कटरे लिखा जाता है ! यह भी उल्लेख मिलता है की कठोपनिषद लिखने वाले कठ ऋषि के वंशज यानि आजके कठरिया / कटरिया है ! सिकंदर या अलेक्झांडर से युध्द के वर्णन में सिंध प्रान्त के काठी क्षत्रियो का उल्लेख आता है , जो बाद में राजपुताना , मध्य भारत व् गुजरात में जा बसे थे जिसमे पोवारगढ़ का उल्लेख मिलता है ! अब पोवारगढ़ को पावागढ़ कहते है !

3) कोल्हे -कोलीहया

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३७१ पर यह पंवारो का एक कुल कहा गया है !

कोली नामक एक गोत्र प्राचीन समय में था जिसमे प्राचीन वैदिक ऋषि प्रवर थे ! भाट लोगो ने सहेज कर रखी पोवारो की वंशावली में सप्तर्षि है !

४) गौतम-

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३६४ पर यह पंवारो का एक कुल कहा गया है ! यह एक संस्कृत / वैदिक नाम है और यह कुल प्राचीन गौतम ऋषि से सबंधित है ! गौतम ऋषि सप्तर्षियो में एक होने की बात पौराणिक कथाओ से पता चलती है !

५) चौहान

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३५४ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

चौहान अग्नि कुल के चार शाखाओ में से एक है जो मध्य भारतीय ३६ पंवार कुल में शामिल है !

६) चौधरी

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३५४ पर यह पंवारो का एक कुल कहा गया है !

गाव के मुखिया , महाजन , सन्मानित , प्रतिष्ठित लोगो को यह उपाधि दी जाती है !

७) जैतवार

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३६८ पर यह मुख्य राजपूतो का एक वंश कहा गया है !

पोरबंदर के राणा जैतवार है यह एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है !

८) ठाकुर / ठाकरे- ठाकुर / ठाकरिया

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ४१४ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

शिलालेखो में ठक्कुर इस शब्द का उल्लेख आता है ! ठाकुर ईश्वर के लिए सबोधित किया जाता है ! ठाकुर क्षत्रियो , राजपूतो की एक उपाधि के रूप उपयोग में लाया गया शब्द है !

९) टेंभरे / टेमरे - टेम्भरिया

- Rājasthāna kī sāṃskr̥tika paramparāeṁ, Mahārājā Mānasiṃha Pustaka Prakāśa Śodha-Kendra, 2006 इस किताब के पृष्ठ क्रमांक १२७ पर श्री महेंद्रसिंह तंवर लिखते है की -

सम्भवतः तोमर (एक प्रकार का शस्त्र) से वार करने में कुशल योध्दा को तंवर या तुंवर कहा जाता था !

- Bibliotheca Indica, Volume 61, Issue 2 इस किताब के पृष्ठ क्रमांक १७६ पर लिखा मिलता है -

तंवर or तुवर एंड तोमरा a well known Rajpoot tribe .

- **A Dictionary of Urdū, Classical Hindī, and English, By John Thompson Platts , इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ३४४ पर लेखक ने लिखा है -**

तोमरा - Name of the class of Rajpoot

तोमर से तेमरे हुआ और टेमरे टेम्भरे जैसे अपभ्रंश हुए !

१०) तुरकर/ तुरुख, तुरुक

सन १११६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ४१५/४१६ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

तुर्कों पर विजय पाने वाले पंवार तुरुक ऐसा इसका अर्थ हुआ ! ये बड़े वीर थे ! राजा भोज ने तुर्कों को परास्त किया था !

बहुत प्राचीन समय में तुरुष्क राजा भी थे यह भी ध्यान देने योग्य बात है ! क्षत्रिय कुल प्राचीन क्षत्रिय राजाओं के नामो से भी प्रचलित हुए है !

तूर्णकरनी नामक एक गोत्र प्राचीन समय में था जिसमे प्राचीन वैदिक ऋषि प्रवर थे ! संभवतः यह उस गोत्र का अपभ्रंश हो ! भाट लोगो ने सहेज कर रखी पोवारो की वंशावली में सप्तर्षि है !

११) पटले / (देशमुख भी लिखते है मध्यप्रदेश में) -

सन १११६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३११ पर यह पंवार राजपूतो की एक उपाधि कहा गया है !

प्राचीन समय में pattala पट्टल यानि किसी जिले या विशिष्ट क्षेत्र को कहते थे ! उस क्षेत्र के प्रमुखों को पट्टलिक: , पट्टकिल: कहा गया है ! शिलालेखो में इन शब्दों का अनेक जगहों पर उल्लेख आता है ! पटेल,पटले , पटला आदि शब्द इन्ही संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश है ! यानि पटला या पटले कुल के पूर्वज प्राचीन समय में किसी क्षेत्र के प्रमुख थे !

प्रमारो के पटला कुल का उल्लेख धन्धुकपूरा में मिले सन १२१० के शिलालेख से पता चलता है ! शिलालेख में "परमारा पटला सूत अर्जुन" ऐसा उल्लेख है ! परमारो या पोवारो में पटला यह कुल या उपाधि नाम उस समय भी था !

१२) परिहार

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३९७ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

यह एक अग्निवंशी कुल है जो मध्यभारतीय पंवार समुदाय में शामिल है!

१३) पारधी

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३९७ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

*यह शिकार करने में निपुण पंवारो का कुल कहा जाता है ! पारधी यह एक संस्कृत शब्द भी है ! परन्तु संभवतः यह पारधिया शब्द **"पार्थिया" (Parthia)** से अपभ्रंशित शब्द है!*

१४) पुन्ड -

पुंड कुल मूलतः पुंडीर क्षत्रिय कुल है !

१५) बघेले / बघेल -बघेला

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक 344 में यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !इसका अर्थ मनुष्यों में शेर जैसा ! इनके नाम से बघेलखंड नाम का क्षेत्र भारत में है ! ऐसा रसेल लिखते है ! बघेला

मूलतः अग्निवन्शीय चालुक्य या सोलंकी होने की बात इतिहास से पता चलती है !

राजा उदयादित्य के एक पत्नी बघेला कुल की बेटी थी ! हिमाचल में इस बघेला पंवार कुल की बाघल रियासत है , इनको राजा भोज के वंशज कहा जाता है !

१६) बिसेन -बिसनिया

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३५२ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है! पंवार बुजुर्ग बिसेन यानि विश्वेन होने की बात कहते है !

भगवन विष्णु को जन भाषाओ में बिष्णु कहा जाता है ! वैष्णव को बीसनव कहा जाता है ! बीसनव पुकारते समय ओ बिसन्या जैसा अपभ्रंश होने की सम्भावना ज्यादा है ! हालाकि कुछ लोग मानते है की विश्वसेन राजा के वंशज यानि विश्वेन जो बिसेन कहलाये !

१७) बोपचे-बोपच्या

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३५२ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है ! रसेल इस कुल को बोपची लिखे है ! कुछ लोग कहते है की इस बोपचे कुल का अर्थ वाकपटु होता है !

१८) भगत / भक्तवर्ती -

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक 348 में यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है ! रसेल भगत का अर्थ भक्त बताते है !

१९) भैरम

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक 348 / 349 में यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है ! रसेल भैरम को भैरव / भैरो कुल कहते है ! इसका अर्थ भेरीसे भीषण व् भयानक तरीके से ललकार करके युध्द करनेवाले वीर बताया जाता है !

२०) एडे / येड़े - येडा

येड़े कुल को पोवारी बोली में येडा कहते थे ! भाट अपनी पोथी में येड़े कुल को हाडा होने की बात लिखते है ! हाडा राजपूतो की एक शाखा है !

२१) राणा -

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक 401 में यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है ! अपभ्रंश रूप में राणे भी लिखते है !

राणा कुल तो सर्व विदित कुल है जो राजा की उपाधि को परिभाषित करता है !

२२) राहांगडाले / रहांगडाले - राहांगडाला-

इस कुल के लोग बड़ी संख्या में पंवारो में है ! भाट इनको बहुत वीर होने की बात लिखते है ! पोवारी में इस कुल को रहांगडाला कहा जाता है ! पोवारी में कई बार इस कुल वालों को रांगडया कहते है यानि ऊचापूरा , धष्ट पुष्ट, वीर , न डरनेवाला व्यक्ति !

सम्भवतः ये धारानगर के पंवार राजा उदयादित्य की बघेला कुल की राणी के पुत्र राणा रणधवल के वंशज है , जिनको रणधाला , रंग्दाला, रहांगडाला कहा गया ! इस पंवारो के विशेष कुल नाम के पीछे कुछ तो कारण निश्चित है !

भाट इस कुल को रांघडाले कहते है और इनको पुराने राठोड होने की बात लिखते है ! राठोड से रांघडाले अपभ्रंश होना कुछ बराबर नही लगता !

कुछ लोग कयास लगाते है की रहांगगड / रांघगढ़/ रांगगढ़ से आये पंवारो के लिए यह पंवार कुलनाम उपयोग में लाया गया है ! राजस्थान में पुराने जमाने में रांगगढ़ था !

२३) रिनाईत / रिनाहित / रिणायत

इस कुल का अर्थ **रणाहत** यानि रण में आहत पंवार हुआ !

२४) शरणागत –

इस कुल का शब्दशः अर्थ शरण में आया हुआ है और यह संस्कृत शब्द है !

२५) सहारे -

सहारे - सहारिया का अर्थ आश्रयदाता पंवार बताया जाता है !

२६) सोनवाने -

सोनवानिया का अर्थ स्वर्ण के समान यानि सुन्दर गौर वर्णीय पंवार बताया जाता है !

२७) हनवत / हनुवत -

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३६८ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

२८) हरिणखेडे / हरिनखेरे - हरणखेडा

पंवारो का यह कुलनाम कैसे अस्तित्व में आया इसपर निम्नलिखित कुछ तर्क है ! कुछ पंवार बुजुर्ग तर्क लगाते है की यह हिरन के शिकारी रहे होगे ! हिरन के बाद जो खेडा शब्द आता है वह शिकारी से सबंधित नही लगता ! हिरण को भगाना यानि खदेड़ना इस शब्द से हरिनखेदया नाम पड़ा होगा ऐसा कुछ लोग सोचते थे !

पंवार मालवा से स्थानांतरित होकर बुन्देलखण्ड में कुछ समय रहे ! हुशंगाबाद के पास एक हिरनखेडा गाव है ! सम्भव है की हरणखेडा कुल नाम वाले पंवारो ने यह गाव बसाया हो! सिवनी की एथोनोलोगिकल रिपोर्ट में यह कुल अंग्रेजो अपने तरीके से Hurmukurria लिख रखा है ! इस से एक बात सामने आती है की वर्तमान के खेडया या खेरया की जगह **कुरया** रहा होगा ! अब भाट की

पोथी का अवलोकन करे तो वहा हरणखेडा को परमारों की **हुण शाखा** लिखा है ! अगर हम दोनों सम्भावनाओ को जोड़े तो मूलतः यह कुल **हुणकुरया** सम्भव है ! कुर यानि कुल होता है ! प्रमार वंशीय हुण नामक राजा का उल्लेख इतिहास में आता है यह भी एक विशेष बात है !

उज्जैन से आगे रतलाम की ओर जाते समय एक हुण खेडी नामक गाव भी है ! यह भी सम्भावना है की इस कुल नाम के पंवारो ने **हुणखेडी** गाव् बसाया हो !

ज्यादा सम्भावना यह है की पोवारो के कुछ परिवारों को प्राचीन समय में **ये-रणखेडया** या **हे-रणखेळ्या** ऐसे उच्चारण से पुकारते रहे हो जिससे आगे चलके हरणखेड्या यह कुल नाम बन गया हो ! **यानि ऐसे लोग जो रण खेलते हो ! जिनके लिए रण यानि एक खेल हो !**

एक और सम्भावना है यह कुलनाम **हरिकर्ण** का अपभ्रंश हो सकता है ! हरिकर्ण यह गोत्र के प्रवर प्राचीन वैदिक ऋषि है ! और प्रमारो की वंशावली में सप्तर्षियो का उल्लेख भाट करते है !

२९) क्षीरसागर-

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३८१ पर यह पंवारो का एक कुल कहा गया है !

यह एक संस्कृत शब्द है !

३०) फरीदाले - मध्य भारत में पोवारो में शामिल पाए नही गये !

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ३६२ पर यह पंवारो का एक कुल कहा गया है !

भाट लोग इस कुल को दाहिया राजपूत लिखते है ! इस कुल के लोग मध्यभारत के ३६ कुल पंवारो में अब मौजूद नही !

३१) रजहांस -

मालवा से इधर साथ नही आये या कही अन्यत्र स्थानांतरित हुए !

३२) रंदिवा

मध्य भारत के पोवारो में पाए नही गये ! यह कुल मूलतः **रणदेवा** है !

३३) रणमत्त -

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ४०१ पर रहमत यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

*यह कुल नाम दरअसल **रणमत्त** या **रणमात** जैसे शब्द का अपभ्रंषित स्वरूप है क्योंकि रहमत जैसा कुलनाम भारत में हिंदुओ में नही पाया जाता। रसेल ने लिखने में जरूर कुछ गलती की है। इस प्रकार का कोई कुल मध्यभारत के 36 कुल पँवारो में नही मिला। **रणमत्त का अर्थ जो रण में मत्त रहते है वे पंवार !***

३४) राउत /रावत -

सन १९१६ में रसेल द्वारा लिखित दी ट्राइब एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रोविन्सेस वॉल्यूम १ के पृष्ठ क्रमांक ४०२ पर यह पंवार राजपूतो का एक कुल कहा गया है !

राउत कुल के क्षत्रियो का उल्लेख शिलालेखो में पाया जाता है ! राऊती नामक एक गोत्र प्राचीन समय में था जिसमे भारद्वाज प्रवर थे ! पोवारो की वंशावली में ऋषि भारद्वाज का उल्लेख भाट करते है ! हालाकि राउत कुल के परिवार मध्य भारत के ३६ कुल के पंवारो में नही पाए गये !

३५) डाला -

यह कुल मध्य भारत में पोवारो में नही मिलता ! सम्भव है की यह परमारों की शाखा **"झाला"** हो !

३६) भोएर

हालाकि इस कुलनाम के एक दो परिवार बरघाट सिवनी के पंवार बहुल क्षेत्रो में पाए गये है ! इसका अर्थ खेती करनेवाले , भोर में जागनेवाले होता है ऐसा बताया जाता है ! हालाकि १८७२ के ब्रिटिश रिपोर्ट में इस कुल का उल्लेख नही है बल्कि इस कुल के बजाये भोरभगत , छत्रीभगत (क्षत्रियभगत) यह कुल नाम जरुर है ! परन्तु भोरभगत या क्षत्रियभगत नामक परिवार पंवारो में नही मिलते ! सम्भव है की यह प्रमारो की **भायल शाखा** हो जो अपभ्रंशित होकर भायल से भोयल भोयेर बन गए !

३६ कुल के पंवार का मतलब संख्या से नही बल्कि उनके प्राचीन व् मुख्य होने का दर्शक है ! ३६ क्षत्रिय शाखाओ का दर्शक है ! जबकि

वर्तमान में मुख्यतः ३० कुल या शाखा मध्य भारत के चार पांच जिलो में पाए जाते है ! ३६ कुल पंवार भी एक प्रकार से पहचान है ! मालवा में प्रमारो या पंवारो की ३६ शाखाये थी ऐसा जेम्स टॉड द्वारा संकलित इतिहास के वर्णन में लिखा मिला ! बुन्देलखंड में दो प्रकार के राजपुत कहे जाते थे , एक प्रकार तीन कुल के राजपूत और दूसरा प्रकार ३६ कुरी राजपूत , इनमे ३६ कुरी राजपुत पश्चिम राजपुताना के क्षत्रिय कहे गये है ! और पोवार पश्चिम राजपुताना से आये है और अभी भी कुछ उधर बसे हुए है !

३६ कुल पंवारो के ज्यादातर कुल मूल रूप में यानि जिनका अर्थ निकल आता है जिनका इतिहास में उल्लेख मिलता है वे आज भी मौजूद है ! यह ज्यादातर सभी मुख्य प्रवर क्षत्रिय कुल है ! ज्यादातर कुलनाम संस्कृत से परिवर्तित नाम है !

मध्य भारत में पोवार संख्या

सन १७०० के दरम्यान --- १०००० (अंदाजन)
सन १७५० के दरम्यान - २०००० (अंदाजन)
सन १८७२ की पहली जनगणना -९३०८६ सेंट्रल प्रोविंस में
सन १८८१ की जनगणना - १,०६,०८१
सन १८९१ की जनगणना - १२८१५८

<u>सन्दर्भ :</u>

१) The Quarterly Oriental Magazine, Review, and Register- year 1826 page 158 –

*“he has given number of puars , but not a complete nor satisfactory survey . The Pramára tribe enumerated formerly **thirty - six branches” but few of them are now to be met with.***

---

2) Book - Studies in Rajput History - Page 89 by Kalika Ranjan Qanungo, Kālikā Rañjana Kānūnago · 1960

Page 89

*The Charan went to **Hun Panwar** , the ruler of Abu , and broke the proposal of marriage . " Alright " , said the Rajah ; but one discreet person among the Panwars raised objection*

---

3) Book – Who's Who in India containing lives and Portraits of Ruling Chiefs..page 52 year 1911 –

*The Raja belongs to the family of **Ponwar Rajpoots of the Rawat Branch** descended from the Hindu Emperor Vikramaditya*

---

4) Book - Rajputana Classes , year 1921 by Major B. L. Cole
Page 27 –

The Ponwar, or Pramara**, though not, as his name implies, the **Chief Warrior'** was them ost potent of the fire-born tribes. **'There were thirty-five branches, several of whom enjoyed extensive sovereignties."The world is the Ponwar's'is an ancient saying,** denoting their **extensive sway**. The first authentic dynasty of the Ponwars was founded in Malwa about 820 A. D, by a chief named Upendra who came from Abu where his clan has been settled for a long time. The names of their two strongholds in Malwa are Dhar and Mandu—the extensive ruins of the latter place being well worth a visit. Dhar was the capital of the famous King Bhoj the Pramara. The past glory of the Ponwars has certainly faded and except for a branch known as Sankla in Marwar, **not many Ponwars aro to be found in Rajputana at the present day.

---

5) Comments on an Inscription upon Marble, at Madhucarghar; And Three Grants Inscribed on Copper, Found at Ujjayani by Colebrooke, James , Publication date, 1826-01-01-

XII. Comments on an Inscription upon Marble, at Madhucarghar ; and three Grants Inscribed on Copper, found at Ujjayani, By Major James Tod., Read on June 19, 1824 –

Page no 207 /208

I have the honour to present to the Society, three copper-plates, and to submit translations of the inscriptions on two of them. They were obtained by me from the ancient city of Avanti, or Ujain (Ujjayani), about twelve years ago.*

At the same time I adjoin a translation of a third inscription relative to the same family (of which these plates are records), and which I was so fortunate as to discover in my last tour of Central India, in 1822.

These will be considered of consequence, as they at once fix the period of a celebrated dynasty, and an important era in the history and literature of India

The dynasty, of which they are memorials, is the ***Pramara,*** *vulgarly Puar* ***or Powar****, one of the most distinguished of the Raja-cula, or Royal Races of India. It is one of the four tribes, to which I alluded in a former paper, claiming their origin from the personified element of fire, in common with the other races of Agnicula ; the Chahamana, Parihara, and Solanki.*

I know of no tribe having a more wide range over the historical field of India, than that in question. It enjoyed more extensive dominion than any other of the race of Agni ; and had acquired it at a much earlier period : for, though four existed collaterally, as independent monarchs, yet the glory of the Pramaras was on the wane, when that of the Solankis, the famed Balhara (Ballabhrai), kings of

Narhwara, was in the zenith ; to which the Chahamanas were rapidly approximating ; and, in their success, extinguished the independence of the fourth, or Parihara, dynasty of Mandawar.

So extensive was the Pramara sway, that the couplet, or " Doha," in the Doric dialect of these parts, **" Pirthi ! tain na Powar ka,"** " Earth, thou art the Powar's," has little of the hyperbole, when restricted to the Indian world and, though we cannot see the link of succession, it seems to have been the first tribe that succeeded to the extensive power which the Yadavas had so long maintained before them.

There are more ramifications (Sachas) of the Pramara, than of any of the " Ch'hetisRaja-cula," or thirty-six royal races, excepting the Ch'hepan cula Yadava, or fifty-six tribes of the Yadavas, celebrated in the Sacred Books. **The Pramaras enumerate no less than thirty-six.**

On an inscription, in my possession, of the Grahilote race, the eulogist does not limit their number ; and says, in the usual figurative style, " Apramana sacha" " of innumerable ramifications ;" though the Grahilotes are in fact limited to twenty-four.

The names of all the thirty-six Pramara tribes are not now to be collected. About one third may be given with tolerable certainty of being accurate; but only the names. They are few in numbers, and without power ; and, but for the itinerant bard and genealogist, would cease to know themselves.

Page no 210

But what will excite some surprise, the celebrated ***Hun is enrolled as a branch of the Pramaras.*** *That Europe only was deluged with this race, we knew well was not the case : Cosmos relates the White Huns, or Abtelites, being in India in the fifth century;……*

The Pramara genealogist enlists the Kathi into his catalogue

6)Book – History of Mediaeval Hindu India (Being a History of India from 600 to 1200 AD) Volume II Early History of Rajput (750 to 1000AD) by C V Vaidya , Year 1924 .

Page no 233

The Malwa grants under the Paramara Vakpati and Bhoja contain the expression ***प्रतिवासिन: पट्टकिल जनपदादीश्च बोधयति -***“*The king informs the inhabitants , Pattakila (Patel) , Janapada (Villagers) and others” The word Pattakila which occurs here for the first time in Malwa Grant of about 1000 AD has spread all over India and is now the designation of the headmen of a Village from the Panjab down to Maharashtra in the modern form Patel which is plainly derived from it . But whence comes Pattakila and what is its meaning ? It seems to us that it is a contracted form of Akshapatalika which we saw was in use in Harsha’s Time and Patalika was changed inti Pattaki la by transpostions of letters and this again into Patel.*

---

७) सन १९१६ में लिखित किताब TRIBES AND CASTESOF THE CENTRAL PROVINCESOF INDIA, Volume 1 के पृष्ठ क्रमांक ३७३ में श्री R. V. RUSSELL (INDIAN CIVIL SERVICESUPERINTENDENT OF ETHNOGRAPHY,CENTRAL PROVINCES) में चालुक्य या सोलंकी यह जाती पंवार राजपूतो की एक उपजाती बताते है !

Chalukya. *—A synonym for Solanki Rajputs. (Perhaps from chhiillu or challu, hollow of the hand.)A subcaste of* ***Panwar Rajput.***

(इससे यह समझ आता है की चालुक्य इस अग्निवंश के समूह में भी प्रवर यानि पंवार क्षत्रिय शामिल थे ! चालुक्य यह कुल ३६ कुल पोवारो

में नही मिलता परन्तु बघेला यह कुल मध्य भारतीय ३६ कुल पोवारो में है ! सोलंकी चालुक्य कुल को बघेला भी कहा गया है ! बघेला यह शौर्य को दर्शाती उपाधि थी जो चालुक्य या सोलंकी समूह के एक राजा को इतिहास में दी गयी थी !

इसी प्रकार परिहार /पडिहार / प्रतिहार व् चौहान अग्निवंशी समूह में भी प्रवर या पोवार शामिल थे इसीलिए आज भी इन कुल नाम वाले लोग ३६ कुल पंवारो में है !)

०८) सन १८७२ में श्री Monier Williams द्वारा लिखित A Sanskrit - English Dictionary के अनुसार

पृष्ठ क्रमांक ५६१

पट्टला pattala - meaning a district , a Community

09) Book- "The Paramaras (c. 800-1305 AD)" by Historian Pratipal Bhatia page 181.

An inscription from Dhandhpur dated V.S. 1347=1290 A.D. describes one 'Paramara Patala suta Arjuna . This Patala has been identified with Pratapasimha. Dr. Sukhthankar, however, thinks that Paramara being too common a clan name among the Rajputs, there is no sufficient reason for identifying Paramara Patala with Paramara Pratapasimha. The nearness of the dates of Pratapasimha and Arjuna's inscriptions (viz, 1287 A.D. and 1290 A.D.), however leads us to think that the identification is not improbable.

10) Book- "Progress Report of the Archaeology survey of India , western circle year 1918 , page 70

In these old records the name of the place is given as Dhandhukapura, probably so called after the Paramara king Dhandu(ka). Resting against the wall of a square chhabutra in the village is a memorial stone on which is sculptured in high relief a

mounted rider armed with a spear. Below is a short record of three lines giving the date V. 1347 and the name of him in whose memory the stone was set up, viz., Arjuna, son of Paramara Patala. Paramara is a very common clan-name among the Rajputs. So there does not seem to be sufficient reason for identifying this ***Paramara Patala*** *with the Paramara chieftain Pratapasimha and investing the latter, on the strength of it with a son of the name Arjuna, as one antiquarian has done.*

11) Book – The History and culture of the Indian People – "The Struggle of the Empire" forward by K M Munshi , General Editor R C Mujumdar , year 1957 page 72 and 73 ---

In the latter part of the tenth century Vakpati - Muñja , king of Mälava , placed his son Aranyaraja on the throne of Mt. Abu , Sirohi State , Rajputana , with its capital at Chandravati . Aranyaraja's successors were Krishnarāja , Dharanivaräha , Mahipala alias Dhruvabhata (A.D. 1002) , and Dhandhuka . Dhandhuka was dethroned by the Chaulukya Bhima I of Gujarat before A.D. 1030 , but was subsequently restored to power by the Chaulukya king at the request of Vimala of the Prägväţa family . Dhandhuka had three sons , Pürnapāla , Dantivarman , and Krishna II , all of whom ascended the throne one after the other . Pürnapala (A.D. 1042 , 1045) declared independence , but Bhima I brought Mt. Abu again under his control in the later part of his reign . Since then the country remained a part and parcel of the Chaulukya kingdom . Krishna II was succeeded by Dantivarman's son Yogaraja , who was succeeded by his son Ráma deva . After the reign of Ramadeva the throne of Mt. Abu seems to have been usurped by Krishna II's son Käkaladeva , who was succeeded by his son Vikramasimha . Vikramasimha revolted against the Chaulukyas but was defeated and thrown into prison by king Kumarapala , who then placed Ramadeva's son Yasodhavala on the throne of Mt. Abu . Yasodhavala , who is known to have been ruling in A.D. 1145 and 1150 , fought with Balläla , king of Malava , on be half of his overlord Kumäräpäla , and killed him . He was succeeded by his son Dhärävarsha some time before A.D. 1063.

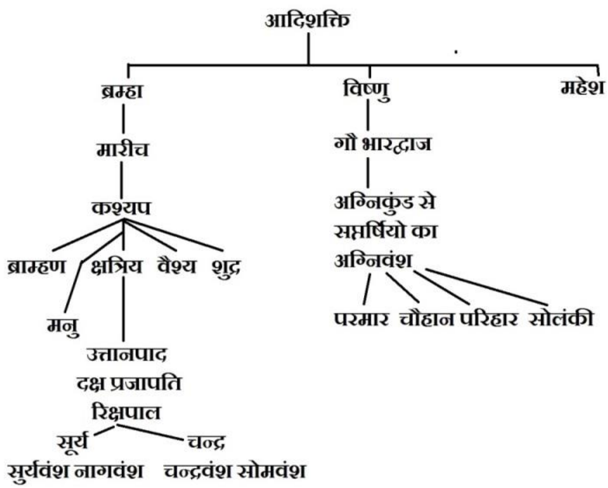
Dharavarsha helped Kumārapāla in his war against Mallikarjuna of Konkana , and his younger brother Prahladana saved the power and prestige of the Chaulukya Ajayapäla , successor of Kumarapala , by defeating the Guhila Sämantasimha of Medapăṭa. It is stated that Ranasimha , son of the Paramära Vikramasimha , defeated the warriors of Malava on the banks of the Parla and obtained Antară . It is further stated that Dhärävarsha got back his territory through the favour of Ranasinha . It may only be suggested that Ranasimha . son of the denosed Vikramasimha , usurped the throne of Mt. Abu some time after the death of Kumarapala , but restored Dhärävarsha to power after a short reign . Dhärävarsha repulsed an attack of the Chahamána Prithvi räja III against Bhima II of Gujarat . In A.D. 1197 he suffered a defeat at the hands of Qutbuddin's general Khusrav near the foot of Mt. Abu . He helped Viradhavala of Gujarat in repulsing an attack of Sultan Iltutmish , and was succeeded by his younger brother Prahladana after A.D. 1219. Prahladana is the author of the drama Partha -parakrama . Some time before A.D. 1230 Prahladana was succeeded by Dhärävarsha's son Somasimha , who declared independence . Somasimha's son and successor was Krishnaraja . Krishnarāja's son ***Pratāpasimha , also known as Patala*** *, reconquered , with the help of the Vaghelas , his paternal throne , which was occupied by Guhila Samarasimha . He ruled his kingdom as a vassal of the Vaghela Sarangadeva , and was succeeded by his son Arjuna , who is known to have been ruling in A.D. 1290. Some time before A.D. 1320 Mt. Abu passed into the hands of Chahamāna Luntiga of South Marwar .*

{ किताब में दिए उपर के लेख से वंशावली निम्नलिखित वंशावली की जानकारी मिलती है -

वाक्पति मुंज -- अरण्यराज ---धंधुक----कृष्ण द्वितीय ----योगराजा----रामदेव----यशोधवल ---धारावर्ष ---सोमसिंह ---कृष्णराज ---प्रतापसिंह पटला ...... (सन 1287)}

अध्याय ६- भाट लोगो की पोथिया

मध्य भारत में रतलाम से पंवारो के साथ आये भाटो ने व् उनके वंशज श्री बाबूलाल भाट ने मध्य भारत के पोवारो के परिवारों की वंशावली का करीब सन १९८५ तक लेखन किया है ! श्री बाबूलाल भाट मध्य भारत के भंडारा गोंदिया , बालाघाट , सिवनी , नागपुर इन जिलो में बसे पोवारो को परमार कहते है ! उनकी पोथिया राजपुताना , गुजरात , मालवा , उत्तर में हरियाना के क्षेत्र किस किस गाव से पंवार कुल इधर आये इसकी जानकारी देते है ! वे उनकी सारी पोथियो में पंवारो को परमार ही कहते है ! उनके पास की पौराणिक जानकारी के अनुसार वे अग्निवंश की कहानी एक निम्नलिखित तरीके से बताते है -



भाट पोवारो (जिनको वे पोथियो में परमार कहते है) को वर्णाश्रम से बाहर रखते है ! वे उनको भगवान विष्णु , ऋषि भारद्वाज व् सप्तर्षियो के

वंशावली में बताते है ! भाट सप्तर्षि यानि अगस्ति , अत्री , भारद्वाज , गौतम , जमदग्नि , कश्यप , वशिष्ठ इनका उल्लेख करते है !

पोथियो में दिए वंशावली का अवलोकन करे तो उसमे जो पूर्वज पहले नगरधन आये उनके नामो में व् बाद की पीढ़ी के नामो में बहुत अंतर दिखाई पड़ता है ! इसमें जो नगर धन पहुचे थे उनके नाम में सिंह/ सिंग जुडा हुआ पाया गया ! वंशावली ज्यादातर नगरधन आकर अलग अलग गावो में बसने का इतिहास बयान करती है ! अनेक सेनानायक, सरदार , किलेदार आदि लोगो के नाम पोथियो में मिलते है ! उमरकोट से गुजरात , मालवा में रहे वहासे नगरधन आये सेनानायक श्री ठाकुर मोतिप्रसादसिंह / उनके पुत्र जितसेन व् सुमेरसेन इनका उल्लेख आता है ! उज्जयनी से आये श्री दिगपालसिंह बिसेन/ श्री श्रीराज / श्री लक्ष्मणदेव /श्री वीरसिंह बिसेन , श्री सुमेरसिंह येड़े / श्री रामसिंह येड़े , आबू चन्द्रावती से रतागड होते हुए नगरधन आकर पांचगाव , बेहरगाव आदि स्थानों पर बसने वाले श्री जयसिंह रांघडाला (रहांगडाला) , श्री राजसिंग रांघडाला इनका उल्लेख आता है ! पोथियो में भाट लोगो ने पोवारो के पुराने स्थान जैसे **धारानगर , उज्जयनी,उमरकोट , चन्द्रावती , आबू** , **रतागड (यह रताकोट है),** चक्कीगड , धागेटी, **नांगलपुर** , करसगाव , अर्बगड , ब्रम्हांडगड , **बूंदीगड** , **हस्तिनापुर** , **मांडोगढ़**, दिल्लीगड़, **टोंकगड** ,ठाकरगड , **कन्नौज** , पिंगलगड इनका उल्लेख किया है (जो नाम बोल्ड किये है वे आज भी विद्यमान है) ! इनमे से कुछ स्थान मिल नही रहे है ! संभवतः अब वे स्थान उजड गये हो, किले पूरी तरह ध्वस्त हो चुके हो! या इन स्थानों के नाम अब बदल गये हो या अपभ्रन्षित हो चुके हो!

अध्याय ७- इतिहास में उल्लेख के अन्य संदर्भ

1) Cyclopedia of India and of Eastern & southern asia Volume III (year 1873) Author Edward Balfour इनके टीम द्वारा बनाये गये शोध ग्रन्थ में गुजरात के खेडा शहर में पोवार वंश का उल्लेख आता है -

Kaira : - A town in Gujrat , in which several ancient copper plates have been found, with inscriptions elucidating the condition of that country. One of these with an inscription in Sanskrit with gross errors of grammar and incorrectness of expression,.is of date Samvat of Vikramaditya1116, corresponding to 981 Salivahana, and to 446 of the era of Udyaditya, A. D. 1059. The character used in the inscriptions is almost modern Deva Nagari. It contains salutation to Ganesa, Parvati, Siva, with five faces and mentions the Vedas, Swaha Meru, and Sastra.

The kings or princes mentioned are raja Suravirak, of the pavara ***(Powar)*** *line. Gondala hisson, Arevalamathana, son Udayaditya, his son, Salivahana, hisson. This inscription is ofimportance, as it discloses a new era, that of the family of Udyaditya, the probable founder of Udyapur, corresponding to the era of Vikramaditya1116, and of Salivahan 981, and Kaliyaga, 4160. This would place the foundation of Udyapur A. D. 614.*

2) सन १८५७ में लिखित Cyclopedia of India & Eastern and Southern Asia के पृष्ठ क्रमांक ५५ पर Edward Balfour बीकानेर के पोवार या प्राचीन प्रमार वंश के मुख्य सरदार पद्मसिंह का उल्लेख करते है !

3) श्री कोटा वेंकटाचेलम द्वारा लिखित किताब ***Chronology of Kashmir History Reconstructed****में वे लिखते है -*
पृष्ठ क्रमांक १२५ -

In 850 BC , a Brahmin by name Dhunji with the help of the people united Malwa and became King . But he was obliged to be a vassal of the sovereigns of Magadha Empire . In 730 B.C. , a descendent of Dhunji family declared Malava an Independent State .

" In Indian Manuscripts we find Malwa noticed as a Separate province eight hundred and fifty years before the Christian Era . When Dhunji , to whom a divine origin is attributed is said to have established the power of the Brahmins and to have been the founder of a powerful dynasty . "

" The family of Dhanji is said to have reigned three hundred eighty seven years when Putraj , the fifth in descent , dying without issue , ***Adab Panwar*** *a* ***prince of a Rajput clan still numerous in Malwa*** *, ascended the throne , establishing the* ***Panwar dynasty*** *which continued to hold sway for upwards of one thousand and fifty eight years .*

पृष्ठ क्रमांक १७४ –

Afterwards , in BC 82 Vikramaditya was crowned King .

पृष्ठ क्रमांक १७५ –

Jyotirvidabharana is astrological work by Kalidasa . In that work the great poet says that he was writing it to enhance the fame of Vikramaditya of the Paramara dynasty (Panwar Dynasty his patron king) .

पृष्ठ क्रमांक १७६

ज्योतीर्विद्वाभरणं श्लोक ४- ८९ --

पर्वान्यमानीह सद्वाऽ ***पवरजनै: !***
श्री विक्रमार्केण विनाड़ीकं प्रति !!
तद्वोषबोधाय तथापि सत्कृता !
विद्रु: सद्वा सत्कृतिनाहयमुनि च !!

पृष्ठ क्रमांक २२१

भविष्य पुराण श्लोक -
एतस्मिन्नतरे तत्र शालिवाहनभूपतिः ।
विक्रमादित्यपौत्रश्च पितृराज्यं गृहीतवान्
जित्वा शकान् दुराधर्षांश्चीनतैत्तिरिंदेश जान् ।।

" During this interval , the great grandson of Vikramaditya , by name Salivahana was crowned king in Ujjain to the paternal throne. As soon as he became sovereign, he saw the ravages of the country by the cruel Sakas and the anarchical condition of the state . So he invaded agains : them and conquered the Sakas , the Chinese and the Tartars

पृष्ठ क्रमांक २२२

" बाहलिकां कामरूपांश्च रोमजान खुरजान् च्छ्ठान् ।
तेषां कोशान् गृहीत्वा च दंडयोग्यानकारयत् ।।

Salivahana won victories over the Bahlikas , Romajas and the people of Kamarupa and Khorasan countries . He seized again the plundered amounts from them , punished and expelled the miscreants from the country in 78 A.D. In the same year he established his Era and this was called Salivahara Saka . The details of the beginning of this era were discussed with reasons in connection with Vikramaditya Saka , When Salivahana returned after his triumphant Victories

4)Gazetteer of the Bombay Presidency: Cutch, Palanpur, and Mahi Kantha–year 1880 , Volume V , Authority – James M Campbell

इस किताब के पृष्ठ क्रमांक २३४ पर लिखा मिलता है की --

माजल या मांजल नामक गाव का उल्लेख है ! यह गाव भुज से पश्चिम में १७ मील दूर है , इस गाव से २ मील उत्तर पश्चिम में एक पहाड़ी है जहा

प्राचीन अवशेष है जिसे "पूंवारो नो गड" / पढ़ारगड या पाटन कहा जाता है ! यहा के अवशेष देखकर लगता है ! करीब सन ८७८ में यह गड केरा के राजा घाव के बेटे द्वारा बसाया गया जिसे पूंवारो नो गड कहा जाता है ! यहाँ एक मन्दिर भी है जिसे पुन्वारेश्वर कहा जाता है !

5) The History of British India: From 1805 to 1835, Volume 2, By Horace Hayman Wilson, published in year 1846-

West of the territories of Holkar, extending towards Guzerat, are situated the two small states of Dhar and Dewas, the governments of kindred chiefs. ***Their ancestors were Rajputs of the Powar tribe****,* ***but they had migrated at an early period to the south, and had become naturalised as Mahrattas.*** *Included among the Peshwa's officers, they obtained assignments of land and tributes in Malwa upon the Mahratta conquest; and, although their possessions had been reduced to extreme insignificance by dissensions among themselves, and the encroachments of Sindhia, Holkar, and the other more powerful Mahratta leaders, they still retained a portion oftheir patrimony, and a place among the Mahrattaprinces of Malwa. Upon the advance of the British armies, they applied to be taken under protection, and, as part of the plan of effecting a settlement of Malwa, the application was, after some investigation, complied with. Allegiance, military service on the one hand, and protection on the other, were the main conditions of the contracts .Dhar ceded to the British government. Its claims of tribute on the Rajput principalities of Banswara and Dungerpur, and as security for a pecuniary loan, the province of Bairsia for five years. This district was eventually restored to Dhar….*

6) Book 'Roller Coaster : My Early years" by Abdur Rashid Rao year 2005 , page 35

.All Panwars , a sub Caste of Rajpoots considered to be fairly high on the blood scale . …… old saying Haddi Badi Panwar …… the blood of Panwars was superior .

" हड्डी बड़ी पंवार की" यह हरियाणा क्षेत्र की कहावत दरअसल "पृथ्वी बड़ा पंवार" इस राजस्थानी कहावत का संभवतः दूसरा रूप है जो प्रचलित था !

***7)* Book THE INDIAN ANTIQUARY,A JOURNAL OF ORIENTAL RESEARCH INARCHAEOLOGY, HISTORY, LITERATURE, LANGUAGES, PHILOSOPHY, RELIGION, FOLKLORE,EDITED BYJASBURGESS,Volume V year**

Feb1877 –

On Three Malva Insciptions BY NILKANTHA JANARDAN KIRTANE
Page 49

*The figure of Garuda, I conjecture, signifies that the king whose royal device it is, is of the line of the Śeshari kings of Ujjain or Malwā, the hereditary enemies of Sãliváhana of Pratishthana or Paithana on the Godāvari—in other words, the successors or descendants of the famous, but almost fabulous, Vikramaditya of Avanti or Ujjain **

**-The Bhairágis called Naths sing a song of Bhartri which is a strange mixture of kings and places. The songsays there was a marriage between Râni Pingalâ, whom it makes the daughter of Bhoja, and the Rāja Bhartri ofUijain. Bhartri is asked to accept the hand of Pingalâ by Bramhan on the part of Bhoja. Bhartri wants to knowthe family and race of the damsel. The reply of the Brāhman, which is the only true and valuable assertion in thewhole song, is—*

जात बतलाई सिसोधाकी / गजमनधारके पोंवारकी !
गादी बतलाई गर्दभ सेनकी !!....

This song supports the view I have taken above. Gardabhasena, as the reader will easily remember, is the reputed father of the Vikramāditya who is supposed to have reigned at Ujjain 465 A.D.

8) किताब - राजस्थानी कहावते- एक अध्ययन , वर्ष १९५८ , लेखक कन्हैयालाल सहाला , पृष्ठ क्रमांक १२२ -

अर्थात पृथ्वी पर पंवार राजपुत बड़े है, पृथ्वी ही पँवारो की है....

---

(9) **Book –" South Asia A short History" Author Hugh Tinker – page 9 –**

*The Fire born Rajpoots were the **Powar, Parihar , Solanki and Chauhan** Clans. When at the beginning of the eleventh Century , invaders began to appear beyond the Khyber , the Rajpoots rallied to repel them . But despite their Valour , they lacked organization and cohesion and they failed to halt the invader.*

10) Book – Parashaprasna: Or the Baisakhi of Guru Gobind Singh (an exposition of Sikhism) by Kapur Singh - Page 340

*The Mallavas of the Punjab , migrated to Malwa in Central India under the impact of White Huna invasions and later on established powerful states there as Agnikula Rajputs . **The Powars or Parmars , a branch of these Agnikula Rajputs founded the Malwa .***

---

११) पंवार वंश दर्पण इस किताब के सम्पादक श्री दशरथ शर्मा अपनी कीताब के पृष्ठ क्रमांक ५७ पर लिखते है की -

जिस जाती ने वाक्पति और भोज , उदयादित्य एवं जगदेव जैसे त्रिविध वीरो को उत्पन्न किया वह वास्तव में महान थी , उसका प्रभाव अत्युच्च था! चाहे परमार प्रारम्भत: ब्राम्हण रहे हो या क्षत्रिय , दक्षिणी या उत्तर भारतीय वे राजपुत्रो में तब भी श्रेष्ठ थे और अब भी श्रेष्ठ है ! अपनी प्राचीन गरिमा से परमार वंश अब भी गौरवान्वित है !

12) **Report of the Administration of the Central Province for the year 1867-68 by Mr H Morris , published in 1869 , regarding the Bhandak Temple**

*The style of architecture of this temple is apparently very ancient, though it has been evidently restored within comparatively recent times. The last **Powar ruler of Dhar, Jye Chund**, was deposed, in the 11th century, but a branch of the same family appears to have regained power, and to have reigned at Dhar until about 1225 A D.*

----

१३) **Corpus Inscriptionum Indicarum Vol.VII part 2 , Introduction to Inscriptions of The Paramaras , chandellas , Kachchhapaghatas and other two Dynasties etc by Harihar Vitthal Trivedi , Hony Fellow of the epigraphical Society of India , Published by The Director General of Archaelogical Survey of India ,**

पृष्ठ क्रमांक २७४ पर सन १२८७ में प्रतापसिंह के समय लिखवाये गये शिलालेख के बारे में उल्लेख आता है जिसमे ४ थे श्लोक में परमारजाती का उल्लेख आता है ! यानि पंवार या परमार यह एक जाती थी ! न की एक परिवार !

---

१४) कवी कालिदास कृत “ज्योतिर्विदाभरणम” इस ग्रन्थ में वे उज्जयनी के सम्राट विक्रमादित्य के सैन्य व् उनके प्रताप का निम्नलिखित श्लोक के द्वारा वर्णन करते है जिसका उल्लेख महत्वपूर्ण है -

सैन्यवर्णनम् -

यस्याष्टादशयोजनानि कटके पादातिकोटित्रयं
वाहानामयुतायतं च नवतिस्त्रिघ्ना कृतिर्हस्तिनाम् ।

नौकालक्षचतुष्टयं विजयिनो यस्य प्रयाणे भवत्
सोऽयं विक्रमभूपतिविजयते नान्यो धरित्रीधरः ॥ १२ ॥

अर्थात – विक्रमादित्य की सेना १८ योजन (२३० किमी) तक फैली है ! उसमे तीन करोड़ पैदल सेना है ! अयुतायुत १००००००० घुड़सवार एवं ९० के वर्ग का तीन गुना यानि २४३०० हाथी सेना तथा चार लाख नौका (जलसेना) सम्मिलित है ! जिसके प्रस्थान मात्र से विजय होती है , इस प्रकार विक्रम नामक भूपति जिसके समान अन्य कोई नृपति नही है उसकी सदा जय हो !!१२!!

यो रूमदेशाधिपति शकेश्वर जित्वा गृहीत्वोज्जयिनी महाहवे !!
आनीय संभ्राम्य मुमोचयत्वहो स विक्रमार्क: समसह्यविक्रम: !!१७!!

अर्थात
जिसने रूम देशके अधिपति शकेश्वर को संग्राम में जीतकर तथा उसको बंदी बनाकर उज्जयिनी लाया और उसे घुमाकर पुनः मुक्त कर दिया ! इस प्रकार विक्रमादित्य का आश्चर्य जनक एवं सम सह्य (समान व्यवहार , सहिष्णुता) व्यवहार युक्त पराक्रम है !

इस प्रकार भारतीय व् पश्चिमी ऐतहासिक साहित्य में अनगिनत स्थानों पर पंवारो का उल्लेख आता है ! इस किताब में काफी सन्दर्भ बिना किसी प्रकार का बदलाव किये प्रस्तुत किये गये है जो पोवार इतिहास को परिभाषित करते है !

अध्याय ८ - पुस्तक समापन

ऐतहासिक शोध यह एक प्रक्रिया है भूतकाल जानने का ! और भूतकाल से मिली सीख से भविष्य को सुधारा जा सकता है ....



महेन पटले

इतिहास शोधकर्ता